

मुद्रा बाजार का आधार

1.1 मॉड्यूल से परिचय

सबसे पहले ये जान लीजिए कि इस अध्याय में आपको क्या सीखने को मिलेगा? इस अध्याय में मुख्यतः तीन विषयों पर बात करेंगे -

1. करेंसी और करेंसी ट्रेडिंग
2. कर्मोडिटीज को समझना
3. इंटरस्ट रेट फ्यूचर यानी ब्याज दरों का फ्यूचर बाजार

मुझे पता है कि यह तीनों विषय काफी बड़े और व्यापक हैं और इन सब पर अलग-अलग मॉड्यूल तैयार किया जा सकता है। लेकिन ये एसेट इन्विविटी की तरह लिक्विड एसेट नहीं है। अभी भारत में इन एसेट में काफी सीमित कारोबार ही होता है। इसीलिए, यहां पर हम आपको सिर्फ इनसे परिचित करा रहे हैं। हम यह बताने वाले हैं कि ये एसेट ऊपर या नीचे क्यों होते हैं और इनमें ट्रेड करने के पहले आपको किन चीजों का ध्यान रखना चाहिए। तो आप मान सकते हैं कि यह एक तरह से आपको परिचित कराने वाला मॉड्यूल है। लेकिन हम कोशिश करेंगे कि इसके बारे में आपको ज्यादा से ज्यादा बता दें।

इस मॉड्यूल की शुरुआत हम करेंसी के साथ करेंगे। हम करेंसी के उन जोड़ों पर चर्चा करेंगे जिनका कारोबार भारत में काफी लोकप्रिय है जैसे डॉलर-रुपया, पाउंड-रुपया और रूबिया- जापानी येन। हम कुछ गैर रुपया करेंसी जोड़ों पर भी बात करेंगे जैसे यूरो- अमेरिकी डॉलर, पाउंड- डॉलर और अमेरिकी डॉलर - जापानी येन। करेंसी पर हम अगले कुछ अध्याय तक बात करेंगे। हम कोशिश करेंगे कि आपको यह समझा सकें कि करेंसी के जोड़े (pair) कैसे काम करते हैं, इनके कॉन्ट्रैक्ट के विषय में बता सकें और यह भी बता सकें कि इन करेंसी के ऊपर या नीचे जाने के पीछे कौन सी फंडामेंटल वजहें काम करती हैं।

एक बार यह सब हो गया तो हम मॉड्यूल के अगले हिस्से की तरफ बढ़ेंगे। जिसमें कर्मोडिटीज पर बात की जाएगी। यहां भी हम कोशिश करेंगे कि आपको अलग-अलग कर्मोडिटीज के बारे में बताएं, जिससे कृषि (एग्री/ Agri) कर्मोडिटी और नॉट एग्री कर्मोडिटी के बारे में आपको पता चल सके। हम आपको ये बताएंगे कि इनके कॉन्ट्रैक्ट कैसे होते हैं और इनको ऊपर या नीचे चलाने के लिए कौन से फंडामेंटल कारण काम करते हैं। जिन कर्मोडिटीज पर हम लोग बात करेंगे वो हैं - सोना, चांदी, जिंक (जस्ता/Zinc), अल्युमिनियम (Aluminium) क्रूड ऑयल (Crude Oil), नेचुरल गैस (Natural Gas), हल्दी, इलायची, काली मिर्च, कापास यानी कॉटन (Cotton) आदि। साथ ही, हम यह भी बात करेंगे कि गोल्ड यानी सोने जैसी कर्मोडिटी की कीमतें अंतरराष्ट्रीय बाजार के आधार पर कैसे तय होती हैं।

और फिर इस मॉड्यूल में हम चर्चा करेंगे इंटरस्ट रेट फ्यूचर की, जो कि काफी रोचक होता है। इसमें हम इस बात पर भी चर्चा करेंगे कि RBI अपने कर्ज के प्रोग्राम को कैसे चलाता है? सॉवरिन बॉन्ड (Sovereign Bond) किस तरीके से जारी किए जाते हैं, उनकी NSE पर लिस्टिंग कैसे होती है और उनमें ट्रेड कैसे किया जाता है? इसी के साथ हम बॉन्ड (Bond) की ट्रेडिंग और बॉन्ड ट्रेडिंग से जुड़ी रणनीति पर भी चर्चा करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि हम और आप काफी अच्छी और नई चीजें सीखेंगे।

लेकिन याद रखिए कि इन सब को सीखने के लिए आपको कुछ चीजों की जरूरत पड़ेगी, वो हैं -

1. फ्यूचर्स ट्रेडिंग (Futures Trading)
2. ऑप्शन थ्योरी (Options Trading)
3. टेक्निकल एनालिसिस (Technical Analysis)

अगर आप इन विषयों के बारे में नहीं जानते हैं तो करेंसी के बारे में सीखना मुश्किल होगा। इसलिए मैं आपसे गुजारिश करूंगा कि पहले आप इन विषयों पर अपनी जानकारी को तरोताजा कर लीजिए।

आइए अब इस मॉड्यूल को शुरू करते हैं और करेंसी के बारे में जानते हैं।

1.2 – करेंसी (अ)संतुलन – Currency (in)equality

हम करेंसी पर बात करना शुरू करें उसके पहले आपको एक घटना बताना चाहता हूँ, जो मेरे और मेरी 6 साल की पुत्री के साथ हुई। मुझे लगता है कि हमारी बातचीत के लिए यह एक अच्छी शुरुआत हो सकता है।

अभी हाल ही में, मैं अपने परिवार के साथ ऑस्ट्रिया में छुट्टी मनाने गया। ऑस्ट्रिया एक बहुत ही खूबसूरत देश है। मेरी बेटा पहली बार यूरोप गयी थी और उसे सब कुछ बहुत ही अच्छा लग रहा था। वहां छोटी-छोटी दुकानों पर मिलने वाली बहुत सारी चीजें उसे अपनी आंखों में अंकित कर रही थीं। एक दिन जब हम बाहर घूमने निकले तो वह मुझे एक छोटे से खिलौने की दुकान पर ले गयी जो उसे सड़क के किनारे पर दिख गयी थी। मुझे समझ में आ गया था कि मेरे लिए मुश्किल खड़ी होने वाली है। दुकान में 5-10 मिनट बिताने के बाद उसने एक छोटा सा लकड़ी का खिलौना उठाया और मुझसे नजर उठकी को कहा। खिलौना काफी सुंदर था और मैं उसे खरीदने को तैयार हो ही रहा था लेकिन तभी मेरी नसे उनसे की कीमत पर पड़ी। उस छोटे से लकड़ी के खिलौने की कीमत की 25 यूरो थी। मैंने अपनी बेटा को समझाने की कोशिश की और उसे कुछ और खरीदने की सलाह दी।

मैंने उसे समझाया कि यह 25 यूरो का था और 25 यूरो छोटे से लकड़ी के खिलौने के लिए काफी ज्यादा कीमत है। लेकिन उसे मेरी बात बिल्कुल समझ में नहीं आयी और वह उस खिलौने को खरीदने की जिद पर अड़ी रही। उसने मुझसे कहा कि सिर्फ यह खिलौना सिर्फ 25 यूरो का ही तो है। तब मुझे समझ में आया वह 25 यूरो को ₹25 के बराबर मान रही थी। और उसे यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि 25 यूरो का मतलब होता है कि ₹25 को 78 से गुणा करना।

इस घटना ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि यूरो या डॉलर की कीमत रुपए के बराबर क्यों नहीं है? एक देश की करेंसी दूसरे देश की करेंसी के बराबर क्यों नहीं होती? मुझे पता है कि आपमें से कईयों को इस सवाल का जवाब पता होगा। लेकिन मुझे लगता है कि दो करेंसी के बीच में जो अंतर होता है उसको समझना जरूरी है। इस अंतर की वजह से ही इन करेंसी में डेविंग होती है और करेंसी के जोड़े या पेयर (Pair) बनते हैं।

इसको समझने के लिए हमें करेंसी के इतिहास में जाना होगा और समझना होगा कि करेंसी की ट्रेडिंग कैसे शुरू हुई। मैं इस पर बहुत ज्यादा बात नहीं करूंगा लेकिन जरूरी से आपको यह बात समझाने की कोशिश करूंगा ताकि आपको करेंसी के इतिहास और उसके उद्भव के बारे में पता चल सके।



पहला दौर – बदला यानी बार्टर (Barter) का दौर

करेंसी या मुद्रा के चलन के पहले लेन-देन के लिए जिस प्रणाली का इस्तेमाल होता था उसको बार्टर सिस्टम कहते हैं। बार्टर सिस्टम में एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु दी जाती है। इस प्रणाली का चलन कई सदियों तक हुआ है। उदाहरण के तौर पर मान लीजिए कि एक किसान के पास कपास है और वह दूसरे किसान से गेहूँ लेना चाहता है। तो दोनों एक दूसरे की वस्तुओं की अदला-बदली कर सकते हैं। इसी तरीके से कोई एक किसान जिसके पास बहुत सारे संतरे हैं वो किसी दूसरे किसान को, जो संतरे चाहता है, उसको संतरे देकर अपनी गाय या भेड़ की साफ सफाई करवा सकता है।

बार्टर सिस्टम की समस्या यह थी कि इसमें बड़े सौदे या बड़े लेन-देन नहीं कर सकते और दूसरा इसका विभाजन नहीं सकता। मतलब आप कम कीमत की वस्तु के लिए आधी गाय नहीं दे सकते। उदाहरण के तौर पर मान लीजिए कि एक किसान के पास कपास की 5 गांठें हैं और इसके बदले वो किसी से गाय ले रहा है जो दो गांठ के बदले एक गाय देने को तैयार है। अब दो गाय लेने के बाद भी उसके पास कपास की एक गांठ बच जाएगी। वह एक गांठ कपास के बदले आधी गाय नहीं ले सकता। इस तरीके से, यह इस प्रणाली की एक रुकावट थी।

इसके अलावा दूसरी समस्या यह भी थी कि एक किसान को अपना सामान बेचने या बदले कुछ और लेने के लिए बहुत दूर तक ऐसी जगह तक जाना पड़ता था जहां पर कोई उसकी चीज लेने को तैयार हो।

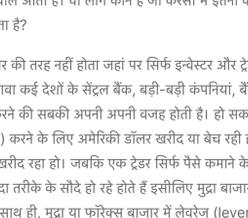
इसीलिए इसके बाद एक नई प्रणाली आई जो कि इसका एक सुझा रूप था जहां पर किसी सामान के बदले कोई एक धातु या मेटल देने की परंपरा चली।



दूसरा दौर – सामान के बदले धातु (Metal) का दौर

बार्टर यानी सामान के बदले सामान लेनदेन की प्रणाली में आने वाली समस्याओं की वजह से लेनदेन की नई प्रणाली निकली। लोगों ने कोशिश की कि एक सामान के बदले दूसरा सामान देने की जगह एक ऐसी चीज निकाली जाएगी जिसे किसी भी सामान के बदले दिया जा सके। ऐसी वस्तु की तलाश अनाज से शुरू हुई और धातु तक गई। लेकिन अंततः धातु को ज्यादा पसंद किया गया। धातु को आसानी से टुकड़ों में बांटा जा सकता था, उसको एक जगह से दूसरी जगह ले जाना आसान था और उसके लंबे समय तक रखने पर भी कोई समस्या नहीं होती थी। सारी धातुओं में सोना और चांदी को सबसे ज्यादा सबसे ज्यादा लोकप्रिय थे और इन्हीं को स्टैंडर्ड मान लिया गया। वस्तुओं के बदले सोना या चांदी देने की प्रणाली कई सदियों तक चली। इस स्थिति में बदलाव तब आया जब लोगों ने सोना चांदी को सुरक्षित जगह पर छुपा कर रखना शुरू कर दिया और उसकी जगह कागज जारी करना शुरू कर दिया। इस कागज की कीमत इस पर आधारित होती थी कि कितना सोना या चांदी जमा किया गया है।

जैसे-जैसे समय बीता वैसे-वैसे बैंक सामने आए और इन कागजों की जगह अलग-अलग तरह की मुद्राएं सामने आने लगी। शायद यही थी मुद्रा की यानी करेंसी की शुरुआत।



तीसरा दौर – गोल्ड (सोना) स्टैंडर्ड का दौर

समय के साथ धरेलू कारोबार बढ़ा और दुनिया के दूसरे हिस्सों में या भौगोलिक क्षेत्र के बाहर भी फैलने लगा। आर्थिक जागरूकता भी बढ़ी और इसके साथ व्यापारियों को यह समझ में आने लगा कि हर चीज एक जगह नहीं पैदा की जा सकती और इसकी कोई जरूरत भी नहीं है। तो व्यापारियों ने भौगोलिक सीमा के बाहर जाकर कारोबार करने की शुरुआत की। वस्तुओं का आयात और निर्यात होने लगा। ऐसे में व्यापारियों को ऐसी मुद्रा यानी करेंसी की जरूरत थी जो कि इंपोर्ट एक्सपोर्ट यानी आयात और निर्यात में दूसरे भौगोलिक क्षेत्र के लोगों को भी मान्य हो। बैंकिंग प्रणाली बेहतर होने लगी और समय के साथ करीब 19वीं शताब्दी के अंत में किसी भी वस्तु के बदले सोना (चांदी नहीं) दिए जाने का चलन बढ़ गया। धरेलू मुद्रा की कीमत को सोने की कीमत के आधार पर नापने की परंपरा चली जिसे **गोल्ड स्टैंडर्ड (Gold Standard)** कहा गया।

समय बदला, भू-राजनीतिक परिस्थितियां बदली (विश्व युद्ध, गृह युद्ध, शीत युद्ध आदि) और दुनिया भर की आर्थिक स्थिति भी बदलने लगी। ऐसे में, भौगोलिक सीमा के आर-पार होने वाले सौदों में लोगों को एक ऐसी करेंसी या मुद्रा की जरूरत पड़ने लगी जिस पर भरोसा किया जा सके और जिसके मुकाबले वो अपनी मुद्रा या करेंसी की कीमत की तुलना कर सकें। ऐसे में सामने आया **ब्रेटन वुड्स सिस्टम (Bretton Woods System)** यानी ब्रेटन वुड्स प्रणाली। आप इसके बारे में यहां और पढ़ सकते हैं। **Bretton Woods System.**

संक्षेप में कहें तो ब्रेटन वुड्स प्रणाली या (BWS) दो देशों के बीच के मौद्रिक संबंधों को परिभाषित करने वाली प्रणाली थी। जहां मुद्राओं या करेंसी की कीमत को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले नापने और उनकी कीमत तय करने की व्यवस्था थी जबकि अमेरिकी डॉलर की कीमत सोने के मुकाबले तय की जाती थी। सभी देशों ने गुंजाइश के साथ प्रणाली को मान लिया था और इसमें करेंसी की तय से अमेरिकी डॉलर के हरेफेर या अंतर हो। क्योंकि इन्होंने ज्यादा तरीके के सौदे हो रहे होते हैं इसीलिए मुद्रा बाजार का वॉल्यूम यानी कारोबार काफी ज्यादा बढ़ा होता है। साथ ही, मुद्रा या फॉरेक्स बाजार में लेवरेज (leverage) काफी ज्यादा होता है इसलिए इसमें कल्पित वैल्यू (Notional Value) काफी ज्यादा नजर आती है। मुद्रा बाजार के सौदों के लिए कोई अंतरराष्ट्रीय एक्सचेंज या बाजार नहीं है। दुनिया भर के अलग-अलग वित्तीय संस्थानों में जैसे भारत में NSE में इस तरह के सौदे होते हैं और सूचनाएं एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म पर जाती हैं।

1.4 – करेंसी जोड़े (Currency Pairs) और कीमतें (Quotes)

करेंसी या मुद्रा बाजार में सौदा करने के लिए सबसे अहम चीज होती है करेंसी का पेयर यानी जोड़ा बनाना। इस जोड़े की कीमत ऊपर या नीचे होती रहती है। जोड़ों के कुछ उदाहरण हैं- अमेरिकी डॉलर-भारतीय रुपया (USD-INR) या ग्रेट ब्रिटेन का पाउंड और भारतीय रुपया (GBP – INR) करेंसी के जोड़ों (pairs)के लिए एक फॉर्मूला होता है जो नीचे दिखाया जा रहा है-

बेस करेंसी (Base Currency) / कोटेशन करेंसी (Quotation Currency) = कीमत

यहां तीन हिस्से हैं, आइए इस को समझते हैं-

बेस करेंसी – बेस करेंसी को हमेशा मुद्रा की एक यूनिट के बराबर रखा जाता है। जैसे कि \$1 या ₹1 या 1 यूरो

कोटेशन करेंसी –कोटेशन करेंसी कि वह करेंसी है जिसकी कीमत को दूसरी करेंसी के मुकाबले बताया जाता है। यह करेंसी यानी मुद्रा, बेस करेंसी के अलावा कोई भी करेंसी हो सकती है।

कीमत – कीमत वह है जो कि बेस करेंसी के मुकाबले कोटेशन करेंसी की होती है। रुपया के सौदों के लिए इसे एक उदाहरण से समझते हैं, मान लीजिए अमेरिकी डॉलर USD/ भारतीय रुपया INR = 67

यहां पर बेस करेंसी अमेरिकी डॉलर है। मैंने पहले कहा है कि बेस करेंसी की यूनिट हमेशा एक होती है इसलिए यह \$1 होगा।

कोटेशन करेंसी भारतीय रुपया है। इसकी कीमत 67 है मतलब बेस करेंसी की एक यूनिट यानी एक डॉलर की कीमत भारतीय मुद्रा में 67 है यानी \$1 = 67 INR

दुनिया भर में किन जोड़ों में सबसे ज्यादा सौदे होते हैं और उनकी कीमत 3 जून 2016 को क्या थी, इसे नीचे के चार्ट में देख सकते हैं-

क्रमांक	बेस करेंसी	कोटेशन करेंसी	जोड़ा/Pair	जोड़े की वैल्यू
1	Euro यूरो	US डॉलर	EUR/USD	1.11
2	US डॉलर	Japanese Yen जापानी येन	USD/JPY	108.94
3	Great Britain Pound ग्रेट ब्रिटेन पाउंड	US डॉलर	GBP/USD	1.44
4	ऑस्ट्रेलियन डॉलर Australian Dollar	US डॉलर	AUD/USD	0.72
5	UD डॉलर	कैनेडियन डॉलर Canadian Dollar	USD/CAD	1.31
6	US डॉलर	स्विस फ्रैंक Swiss Franc	USD/CHF	0.99

अब अगला बड़ा सवाल यह है कि आखिर यह जोड़े ऊपर या नीचे क्यों होते हैं, और कौन सी चीज है इन पर प्रभाव डालती है

इस पर हम अगले अध्याय में चर्चा करेंगे।

इस अध्याय की मुख्य बातें

1. मुद्रा को सोने के मुकाबले मापने की गोल्ड स्टैंडर्ड प्रणाली काफी लंबे समय तक चली, लेकिन अंत में उसे खत्म कर दिया गया।
2. दो मुद्राओं की कीमत में अंतर उन देशों की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति की वजह से होती है।
3. वॉल्यूम के हिसाब से करेंसी यानी मुद्रा बाजार दुनिया का सबसे बड़ा बाजार माना जाता है।
4. करेंसी या मुद्रा बाजार हफ्ते के 6 दिन 24 घंटे खुला रहता है।
5. करेंसी को हमेशा जोड़ों में ट्रेड किया जाता है।
6. करेंसी के जोड़ों का एक फॉर्मूला होता है जिसमें बेस करेंसी और कोटेशन करेंसी होती है।
7. बेस करेंसी को हमेशा एक यूनिट के तौर पर दिखाया जाता है।

रेफरेंस रेट और घटनाओं का असर

2.1 – दो नजरिया

जब आप किसी शीयर को खरीदते- बेचते हैं, मान लीजिए आप इंडोसिस खरीद या बेच रहे हैं, तो उस स्टॉक पर आपकी राय सीधी होती है, या तो आप उस पर तेजी में होठे हैं या मंदी में होते हैं। लेकिन जब आप करेंसी पेयर (जोड़े) की बात कर रहे होते हैं, मान लीजिए अमेरिकी डॉलर और भारतीय रुपया (USD-INR) की, तो आपको दोनों तरफ की राय रखनी होती है- या तो आप अमेरिकी डॉलर खरीदना चाहते हैं या फिर आप भारतीय रुपय को खरीदना चाहते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर आप अमेरिकी डॉलर खरीद रहे हैं तो इसका मतलब है कि आप अमेरिकी डॉलर पर तेजी में हैं और भारतीय रुपय पर मंदी में हैं।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि एक करेंसी की कीमत इतना दूरी करती है कि तुलना में देखी जाती है। जैसे कि मैंने पिछले अध्याय में बताया था – **बेस करेंसी (Base Currency) / कोटेशन करेंसी (Quotation Currency) = कीमत**

दूसरे शब्दों में कहें तो यह फार्मूला हमें बताता है कि बेस करेंसी की एक यूनिट के बदले में कोटेशन करेंसी की कितनी यूनिट आपको मिलेगी।

अगर आप एक करेंसी पेयर खरीदते हैं तो इसका मतलब है कि आप उसकी कीमत के ऊपर जाने की उम्मीद कर रहे हैं। इस उदाहरण को देखिए- USD-INR = 65, अगर आपको उम्मीद है कि इसकी कीमत 68 तक जाएगी तो आप इस जोड़े को खरीदेंगे।

अगर इस जोड़े की कीमत ऊपर जाती है तो इसका मतलब यह है कि आप जाते हुए बेस करेंसी की एक यूनिट के बदले आप कोटेशन करेंसी की ज्यादा यूनिट पा सकेंगे। इसका मतलब है कि एक अमेरिकी डॉलर के बदले आपको ज्यादा रुपय मिलेंगे।



तो, अगर करेंसी पेयर या जोड़े की कीमत ऊपर जाती है तो इसका मतलब है कि बेस करेंसी मजबूत हो रही है या ऊपर जा रही है जबकि कोटेशन करेंसी कमजोर पड़ रही है। इसका यह भी मतलब है कि आप बेस करेंसी पर तेजी में हैं और कोटेशन करेंसी को लेकर आपका जज्बाया मंदी का है।

इसी तरीके से अगर आप अमेरिकी डॉलर और भारतीय रुपय के जोड़े को बेचते हैं तो इसका मतलब है कि आप को उम्मीद है कि बेस करेंसी अब कोटेशन करेंसी की कम यूनिट खरीद पाएगा। मतलब बेस करेंसी यानी अमेरिकी डॉलर में मंदी आएगी और और कोटेशन करेंसी यानी भारतीय रुपय को लेकर आपका रुझ तेजी का होगा।

ऐसे में करेंसी के कमजोर पड़ने या मजबूत होने का मतलब होता है –

- बेस करेंसी तब मजबूत मानी जाती है जब वो **कोटेशन करेंसी की ज्यादा यूनिट खरीद सकती है**। उदाहरण के तौर पर USD-INR अगर 67 से 68 हो जाता है तो इसका मतलब है कि बेस करेंसी यानी अमेरिकी डॉलर मजबूत हो रहा है और कोटेशन करेंसी यानी भारतीय रुपया कमजोर हो रहा है।
- कोटेशन करेंसी तब मजबूत होती है जब बेस करेंसी- **कोटेशन करेंसी की कम यूनिट खरीद सकती है**। उदाहरण के तौर पर अगर USD-INR 67 से 65 हो जाता है तो इसका मतलब है कि बेस करेंसी कमजोर हुई है और कोटेशन करेंसी मजबूत हुई है।

ध्यान दीजिए कि एक करेंसी के कमजोर होने या मजबूत होने का मतलब है कि करेंसी बढ़ रही है या घट रही है।

हम आगे बढ़े इसके पहले एक बात आपको जानना जरूरी है। किसी स्टॉक की तरह ही करेंसी के भी (करेंसी पेयर के भी) दू दो क्वोट (two way quote) होते हैं। यह दू दो क्वोट ही बताता है कि किस कीमत पर आप करेंसी या (करेंसी पेयर) को खरीद और बेच सकते हैं। दू दो क्वोट अर्थात् ज्यादा मुश्किल नहीं है यह सिर्फ सामान्य तरीके के बिड और आस्क के रेट (Bid and Ask rate) हैं। लेकिन यहां ये जानना जरूरी है कि यह क्वोट काम कैसे करते हैं?

नीचे के चित्र पर नजर डालिए-

World Time: Sydney 9:22 PM Hong Kong 7:22 PM London 12:22 PM New York 7:22 AM Sao Francisco 6:22 AM	Near Real Time Rates (NRT) for use in trading purposes					
Major Rates	Bid	Ask	Cross Rates*	Bid	Ask	
AUDUSD	0.7402	0.7405	USD/AUD	1.3504	1.3510	
USD/CAD	1.2771	1.2775	USD/CAD	1.2771	1.2775	
USD/CHF	0.9659	0.9660	USD/CHF	0.9659	0.9660	
USD/DKK	6.5967	6.5990	USD/DKK	6.5967	6.5990	
EUR/USD	1.1289	1.1270	USD/EUR	0.8873	0.8874	
GBP/USD	1.4176	1.4180	USD/GBP	0.7052	0.7054	
USD/HKD	7.7626	7.7631	USD/HKD	7.7626	7.7631	
USD/JPY	106.0400	106.0700	USD/JPY	106.0400	106.0700	
USD/NOK	8.2720	8.2748	USD/NOK	8.2720	8.2748	
NZD/USD	0.7072	0.7075	USD/NZD	1.4134	1.4140	
USD/SEK	8.2777	8.2798	USD/SEK	8.2777	8.2798	
USD/SGD	1.3560	1.3562	USD/SGD	1.3560	1.3562	
USD/ZAR	15.1929	15.2011	USD/ZAR	15.1929	15.2011	

ये एक फ्रेंचिस ट्रेडिंग साइट पर दिए गए करेंसी के स्पाॅट रेट हैं। यहां पर चर्चा के लिए मैंने यूरो – USD (Euro – USD) और GBP – USD के दू दो क्वोट (Two way quote) को हाईलाइट किया है। आपको दिख रहा है कि किस कीमत पर आप करेंसी के इन पेयर को खरीद या बेच सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर अगर आप Euro /USD खरीदना चाहते हैं। तो आपको इसे आस्क (ask) कीमत पर यानी 1.1270 पर खरीदना होगा। जब आप इस पेयर को खरीदते तो तकनीकी रूप से आप यूरो (Euro) पर लॉंग है और USD पर शॉर्ट हैं। इसी तरीके से अगर आप यूरो बेचना चाहते हैं तो आप इसे 1.1269 (बिड कीमत) पर बेच सकते हैं। ऐसे में आप यूरो पर शॉर्ट होंगे और USD पर लॉंग होंगे।

करेंसी को कई बार शॉर्ट फॉर्म में क्वोट किया जाता है। मतलब में यह क्वोट करने का बहुत ही लोकप्रिय तरीका है। Euro /USD का दू दो क्वोट शॉर्ट या छोटे में ऐसे दिखाया जाएगा

EUR/USD – 1.1269/70.

आप देख सकते हैं कि इस में बिड कीमत को पूरा दिखाया गया है लेकिन आस्क कीमत को छोटे में सिर्फ आखिरी दो अंकों में दिखाया गया है।

फोरेक्स की भाषा में अंको को **पिप्स (pips)** कहा जाता है, अगर Euro /USD 1.1270 से 1.1272 पर चला जाता है तो इसका मतलब है कि यह पेयर या जोड़ा 2 पिप्स खिसक गया है।

2.2 – रेट यानी दर तय करना और बदलाव का तरीका

आज की तरीख में USD/INR का रेट 67.0737 है। यह करीब हर दिन RBI द्वारा तय की जाती है। इसे RBI का रेफरेंस रेट या रेफरेंस कीमत कहते हैं। RBI हर दिन इसे अपनी वेबसाइट पर डालती है। करेंसी परस्पर की ट्रेडिंग के लिए RBI का रेफरेंस रेट एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। सभी सौदा के सेटलमेंट इस रेफरेंस रेट के आधार पर ही होते हैं।

इस चित्र पर नजर डालिए-



इस चित्र में RBI की वेबसाइट पर दिए गए 14 जून 2016 के रेफरेंस रेट को दिखाया गया है। ध्यान दीजिए कि यह स्पाॅट रेट (स्पाॅट कीमत) है, फ्यूचर रेट नहीं। फ्यूचर रेट यानी फ्यूचर कीमत NSE की वेबसाइट पर दी जाती है।

यहां सवाल यह है कि RBI इस कीमत को कैसे तय करता है।

रेफरेंस रेट को तय करने का तरीका बहुत ही सीधा है और काफी पुराना भी है। इसमें एक पोलिंग (कई लोगों के मत) के जरिए रेफरेंस रेट को तय किया जाता है। RBI अपने रेफरेंस रेट को कैसे तय करता है इस जानकारी को देने वाला स्कूलर आप यहां **Click here** पर सकते हैं। लेकिन अगर आप पूरा स्कूलर नहीं पढ़ना चाहते हैं, तो हम इसके यहां संक्षेप में कुछ बिन्दुओं में बता देते हैं।

- फरिंत एक्सचेंज के बाजार में कारोबार करने वाले बैंकों में से कुछ बैंकों ने बाजार में उनके मार्केट शीयर के आधार पर छांटा है, और उनकी एक लिस्ट तैयार की है। RBI इन बैंकों को कंट्रीब्यूटिंग बैंक (Contributing Bank) कहता है।
- हर दिन सुबह 11:30 से 12:30 के बीच INR इनमें से कुछ बैंकों (बिना किसी खास आधार पर चुने गए) को कॉल करता है। और उनसे USD INR के रू टूट के मांगता है।
- इन बैंको से रेट मिलने के बाद RBI बिड और आस्क कीमतों का औसत यानी एवरेज निकालता है।
- यही औसत कीमत यानी रेट उस दिन के लिए USD INR रेफरेंस रेट बनता है।
- छुट्टी के दिनों और वीकेंड के अलावा बाकी हर दिन इसी तरीके का इस्तेमाल होता है।

तो इतना सीधा सादा सा तरीका है रेफरेंस रेट निकालने का।

लेकिन RBI इस तरीके के सिर्फ USD INR रेट के लिए इस्तेमाल करता है। बाकी सारी करेंसी जैसे EUR INR, GBP INR, JPY INR के लिए RBI एक अलग अलग तकनीक का इस्तेमाल करता है जिसे क्रॉसिंग (Crossing) या क्रॉस रेट (Cross Rate) प्रणाली कहते हैं।

क्रॉसिंग की प्रणाली में एक करेंसी की कीमत दूसरी करेंसी के लिए सीधे-सीधे नहीं पता चलती। उदाहरण के लिए यूरो के लिए यूरो की कीमत क्या है, ये हमेशा जान प्यब्त नहीं होता। इसीलिए इस कीमत को एक कॉमन डिनॉमिनेटर से क्रॉस करना पड़ता है तब जा कर कीमत पता चलती है।

आइए एक उदाहरण के जरिए इस को समझते हैं। मान लीजिए यूरो और भारतीय रुपय (EUR INR) के रेट को क्रॉसिंग के जरिए निकालना है और USD को कॉमन डिनॉमिनेटर माना गया है।

तो सबसे पहले शुरू करते हैं USD INR के स्पाॅट रेट को पता करने से। जैसा कि हमें ऊपर के चित्र से पता है कि यह स्पाॅट कीमत है –

USD INR – 67.0737

इस स्पाॅट कीमत के लिए दू दो क्वोट कुछ इस तरीके से होगा।

USD INR – 67.0730 / 67.0740

इसका मतलब यह है कि अगर मुझे एक USD खरीदना है तो मुझे 67.0740 रुपय (INR) देना होगा और अगर मुझे एक USD बेचना है तो मुझे 67.0730 रुपय मिलेंगे।

अब आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि EUR USD का स्पाॅट रेट अंतरराष्ट्रीय बाजार में कितना है?

ब्लूमबर्ग की साइट पर दिए गए दू दो क्वोट के हिसाब से यह कीमत है

EUR USD – 1.1134 / 40

इसका मतलब यह हुआ कि एक यूरो- EUR को खरीदने के लिए मुझे 1.1140 (आस्क कीमत) USD देने होंगे। दूसरे शब्दों में कहें तो एक EUR की कीमत 1.1140 USD होगी। अब अगर 1.1140 USD को मैं INR में बदल दू तो मेरे पास एक यूरो खरीदने के लिए पर्याप्त रुपय होंगे और मुझे EUR INR की कीमत पता चल जाएगी।

तो अब वापस USD INR के रेट पर आते हैं

1 USD = Rs 67. 0740

तो 1.1140 USD = कितने रुपय?

= 67.0740 * 1.1140

= 74.72044

तो एक यूरो के लिए हमें 74.72044 रुपय की जरूरत होगी मतलब कि **EUR INR = 74.72044**

तो आप देख सकते हैं कि कैसे क्रॉसिंग तकनीक में USD एक धुरी की तरह काम करता है।

यहां पर आपको दिए एक छोटा सा अयास, जैसे हमने क्रॉसिंग तकनीक का इस्तेमाल करते हुए EUR INR की आस्क कीमत निकाली है, क्या उसी तरीके से आप EUR INR की बिड कीमत निकाल सकते हैं। अपना जवाब हमें नीचे कमेंट में लिखिए।

तो अब आप समझ गए होंगे कि रेफरेंस रेट और क्रॉस रेट हर दिन कंट्रीब्यूटिंग बैंक के उस दिन के रवैये के अनुसार से बदलते रहते हैं। अब यह सवाल उठता है कि कंट्रीब्यूटिंग बैंक का रवैया या रुख किस आधार पर बदलता है।

इसका सीधा और सरल जवाब है – अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय घटनाओं के आधार पर।

2.3 – कौन सी घटनाएं असर डालती हैं

ऐसी घटनाओं के बारे में सोचिए जो कि स्टॉक के सेटीमेंट पर असर डालती हैं। कंपनी के तिमाही नतीजे एक ऐसी ही घटना है। इस घटना की वजह से बाजार के सेटीमेंट पर क्या असर पड़ेगा इसका अनुमान लगाना काफी आसान है। अगर तिमाही नतीजे अच्छे हैं तो सेटीमेंट सुधरेगा और स्टॉक की कीमत ऊपर जाएगी। इसी तरीके से अगर तिमाही नतीजे खराब हैं तो सेटीमेंट बिगड़ेगा और उनकी वजह से स्टॉक की कीमत नीचे जाएगी। मतलब की बात यह है कि यहां पर घटना और उसके असर में बहुत सीधा संबंध है।

लेकिन इसके विपरीत जब करेंसी जोड़ों की बात आती है तो यहां ऐसा सीधा संबंध नहीं होता। इसी वजह से, किसी घटना का करेंसी पर क्या असर पड़ेगा ये बता पाना थोड़ा मुश्किल काम है। इसीलिए करेंसी जोड़ों के फंडामेंटल कारण थोड़े मुश्किल होते हैं। इसके सबसे बड़े वजह यह है कि कौनसी कंपनी बाजार में एक सेटल होती है। तो जब कुछ घटनाएं किसी करेंसी जोड़े को मजबूत करती हैं, वही साथ ही कुछ ऐसी घटनाएं हो सकती हैं जो उस जोड़े को कमजोर बना रही हों।

इस बात को समझने के लिए मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। मान लीजिए 2 आर्थिक घटनाएं एक साथ हो रही हैं। **घटना 1** – भारत में लंबे समय के लिए विदेशी निवेश (FDI) का अना लगातार जारी है। भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए ये एक अच्छी बात है। और इसकी वजह से रुपया कमजोर होता है और अमेरिकी अर्थव्यवस्था में तेजी आ रही है (या कमोडिटी में गिरावट आ रही है) जिसकी वजह से USD मजबूत हो रहा है।

अब ये दोनों घटनाएं एक साथ समानांतर तरीके से हो रही हैं। ऐसे में अमेरिकी डॉलर भारतीय रुपय का जोड़ा किस तरह चलेंगा? जाहिर है कि इसका कोई और जवाब नहीं है। यह करेसी जोड़ा जब दोनों में से उस घटना के अनुसार है। भारत सेवानुओं का निर्यात करता है जैसे चावल और सांचेदार, और कच्चा तेल, सोना चांदी जैसी कमोडिटी का आयात करता है। जब निर्यात बढ़ता है तो भारतीय करेंसी यानी रुपया मजबूत होता है और जब आयात बढ़ता है तो भारतीय करेंसी कमजोर पड़ती है। ऐसे क्यों होता है।

जब आयात होता है (मान लीजिए कि कच्चा तेल) का तो इसके भीतर हमें अंतरराष्ट्रीय बाजार में USD यानी अमेरिकी डॉलर पर नजर रखनी चाहिए।। आमतौर पर जब व्यापार घाटा कम होता है तो हमारी घरेलू करेंसी यानी रुपया मजबूत होता है। व्यापार घाटे को कंटे अकाउंट डेफिसिट (Current Account Deficit) भी कहते हैं। मेरी सलाह है कि आप इस **news piece** समाचार को पढ़िए। जिससे आप इस विषय को अच्छे से समझ पाएंगे।

ब्याज दरों – आमतौर पर निवेशक ऐसे देशों में पैसे उधार लेते हैं जहां पर ब्याज दरें कम हों और उन देशों में ब्याज करते हैं जहां ब्याज दरें ऊपर हैं। इस तरह से वो ब्याज दरों में अंतर का फायदा उठाते हैं और कमाई करते हैं। इस तरह के कारोबार को **कैरी ट्रेड (Carry Trade)** कहते हैं। साफ है कि जिस देश में ब्याज दरें ऊपर हैं वहां पर ज्यादा विदेशी निवेश आता है और साथ वजह से उस स्टॉक में ब्याज दरें आती हैं। इसका मतलब है कि ब्याज दरें करेंसी बाजार पर काफी ज्यादा असर डालती हैं और ट्रेडर इनमें बड़ा असर रखते हैं।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया यानी RBI। या किसी भी दूसरे देश के सेंट्रल बैंक (जैसे अमेरिकी फेडरल रिजर्व या यूरोप में ECB) अपनी मांनिटरी पॉलिसी यानी मुद्रा नीति की समीक्षा करते हैं और अपने देश में ब्याज दरों पर विचार करते हैं। इसीलिए मुद्रा नीति की समीक्षा पर इतना ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। मुद्रा नीति में जो दरे घोषित की जाती हैं वो तो महत्वपूर्ण होती हैं लेकिन बाजार से जुड़े लोग यह भी देखते हैं कि सेंट्रल बैंक आमतौर पर ये कौशिल करते हैं कि मुद्रा की सप्लाई कम हो जाए और लोगों के पास खर्च करने के लिए पैसे कम हों। इसका सबसे आसान तरीका होता है की ब्याज दरें बढ़ा दी जाए।

इसीलिए जब मुद्रास्फीति बढ़ रही होती है तो सेंट्रल बैंक आमतौर पर ब्याज दरें बढ़ाते हैं। और जब ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आमतौर पर घरेलू करेंसी मजबूत होती है।

इसीलिए मैंने पहले कहा है कि ब्याज दरों और करेंसी के बीच का संबंध समझना थोड़ा मुश्किल होता है। अगर तौर पर, करेंसी बाजार के ट्रेडर मुद्रास्फीति के आंकड़ों पर नजर रखते हैं और ब्याज दरों की कोशिश करते हैं कि अब सेंट्रल बैंक क्या करने वाला है और उसी आधार पर करेंसी में अपनी पोजीशन लेते हैं।

इस बात को याद रखना जरूरी है। अगर मुद्रास्फीति ऊपर है तो सेंट्रल बैंक **हॉकिश** रुख अपनाएगा और उस वजह से घरेलू मुद्रा मजबूत होती है। इसी तरीके से, अगर मुद्रास्फीति कम है तो सेंट्रल बैंक **डोविश** रुख अपनाएगा (सेंट्रल बैंक लोगों को खर्च करने के लिए प्रोत्साहित करेगा) और ब्याज दरें कम करेगा, इस वजह से घरेलू मुद्रा कमजोर होगी।

कंस्यूमर प्राइस इंडेक्स (CPI/Consumer Price Index) – यह एक ऐसा आंकड़ा है जो किसी निश्चित समय में कीमतों में हो रहे औसत बदलाव को बताता है। एक तरह से यह मुद्रास्फीति को नामने का तरीका है। CPI के बढ़ने का मतलब है कि मुद्रास्फीति बढ़ रही है और इसी तरह अगर CPI घट रही है तो इसका मतलब है कि मुद्रास्फीति कम हो रही है। आप इसके बारे में इस वेबसाइट **website** पर ज्यादा जानकारी पा सकते हैं।

GDP (Gross Domestic Product) / ग्राँस डोमैस्टिक प्रोडक्ट – किसी देश का GDP इस बात को बताता है कि उस देश में इस साल सामान और सेवाओं का कितना उत्पादन हुआ और इस सामान और सेवाओं की वहां की करेंसी में क्या कीमत है? भारत में इसकी कीमत रुपय में आंकी जाती है और इससे भारत का GDP निकलता है। अब आप अनुमान लगा ही चुके होंगे की GDP एक बहुत बड़ी संख्या होती है और हर दिन की बातचीत में इस तरीके से GDP का आंकड़ा नहीं दिया जा सकता। इसीलिए आमतौर पर GDP को ग्रोथ रेट यानी वृद्धि दर के रूप में बताया जाता है। उदाहरण के तौर पर अगर किसी देश की GDP 7.1% है तो इसका मतलब है कि वहां का GDP नंबर 7.1% की रफ्तार से बढ़ रही है।

GDP की वृद्धि दर जितनी ज्यादा होगी, उतनी ही ज्यादा उस देश पर निवेशकों का भरोसा बढ़ेगा और उस देश की करेंसी मजबूत होगी।

वैसे वो सारी घटनाएं जो करेंसी पर असर डालती हैं उनकी लिस्ट बनाना संभव नहीं है क्योंकि यह एक अंतहीन सूची होगी। और आगे चलते हुए आपको यह भी समझ में आएगा कि हर तरह का आंकड़ा किसी न किसी तरीके से किसी दूसरी घटना से जुड़ा हुआ है। इसलिए आपको उन सभी आंकड़ों को उस तरह से जानने की कोशिश नहीं है और इस वजह से मुद्रास्फीति बढ़ती है। जब मुद्रास्फीति बढ़ती है तो सेंट्रल बैंक आमतौर पर ये कौशिल करते हैं कि मुद्रा की सप्लाई कम हो जाए और लोगों के पास खर्च करने के लिए पैसे कम हों। इसका सबसे आसान तरीका होता है की ब्याज दरें बढ़ा दी जाए।

इसीलिए जब मुद्रास्फीति बढ़ रही होती है तो सेंट्रल बैंक आमतौर पर ब्याज दरें बढ़ाते हैं। और जब ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आमतौर पर घरेलू करेंसी मजबूत होती है।

इसीलिए मैंने पहले कहा है कि ब्याज दरों और करेंसी के बीच का संबंध समझना थोड़ा मुश्किल होता है। अगर तौर पर, करेंसी बाजार के ट्रेडर मुद्रास्फीति के आंकड़ों पर नजर रखते हैं और ब्याज दरों की कोशिश करते हैं कि अब सेंट्रल बैंक क्या करने वाला है और उसी आधार पर करेंसी में अपनी पोजीशन लेते हैं।

इस बात को याद रखना जरूरी है। अगर मुद्रास्फीति ऊपर है तो सेंट्रल बैंक **हॉकिश** रुख अपनाएगा और उस वजह से घरेलू मुद्रा मजबूत होती है। इसी तरीके से, अगर मुद्रास्फीति कम है तो सेंट्रल बैंक **डोविश** रुख अपनाएगा (सेंट्रल बैंक लोगों को खर्च करने के लिए प्रोत्साहित करेगा) और ब्याज दरें कम करेगा, इस वजह से घरेलू मुद्रा कमजोर होगी।

कंस्यूमर प्राइस इंडेक्स (CPI/Consumer Price Index) – यह एक ऐसा आंकड़ा है जो किसी निश्चित समय में कीमतों में हो रहे औसत बदलाव को बताता है। एक तरह से यह मुद्रास्फीति को नामने का तरीका है। CPI के बढ़ने का मतलब है कि मुद्रास्फीति बढ़ रही है और इसी तरह अगर CPI घट रही है तो इसका मतलब है कि मुद्रास्फीति कम हो रही है। आप इसके बारे में इस वेबसाइट **website** पर ज्यादा जानकारी पा सकते हैं।

GDP (Gross Domestic Product) / ग्राँस डोमैस्टिक प्रोडक्ट – किसी देश का GDP इस बात को बताता है कि उस देश में इस साल सामान और सेवाओं का कितना उत्पादन हुआ और इस सामान और सेवाओं की वहां की करेंसी में क्या कीमत है? भारत में इसकी कीमत रुपय में आंकी जाती है और इससे भारत का GDP निकलता है। अब आप अनुमान लगा ही चुके होंगे की GDP एक बहुत बड़ी संख्या होती है और हर दिन की बातचीत में इस तरीके से GDP का आंकड़ा नहीं दिया जा सकता। इसीलिए आमतौर पर GDP को ग्रोथ रेट यानी वृद्धि दर के रूप में बताया जाता है। उदाहरण के तौर पर अगर किसी देश की GDP 7.1% है तो इसका मतलब है कि वहां का GDP नंबर 7.1% की रफ्तार से बढ़ रही है।

GDP की वृद्धि दर जितनी ज्यादा होगी, उतनी ही ज्यादा उस देश पर निवेशकों का भरोसा बढ़ेगा और उस देश की करेंसी मजबूत होगी।

वैसे वो सारी घटनाएं जो करेंसी पर असर डालती हैं उनकी लिस्ट बनाना संभव नहीं है क्योंकि यह एक अंतहीन सूची होगी। और आगे चलते हुए आपको यह भी समझ में आएगा कि हर तरह का आंकड़ा किसी न किसी तरीके से किसी दूसरी घटना से जुड़ा हुआ है। इसलिए आपको उन सभी आंकड़ों को उस तरह से जानने की कोशिश नहीं है और इस वजह से मुद्रास्फीति बढ़ती है। जब मुद्रास्फीति बढ़ती है तो सेंट्रल बैंक आमतौर पर ये कौशिल करते हैं कि मुद्रा की सप्लाई कम हो जाए और लोगों के पास खर्च करने के लिए पैसे कम हों। इसका सबसे आसान तरीका होता है की ब्याज दरें बढ़ा दी जाए।

इसीलिए जब मुद्रास्फीति बढ़ रही होती है तो सेंट्रल बैंक आमतौर पर ब्याज दरें बढ़ाते हैं। और जब ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आमतौर पर घरेलू करेंसी मजबूत होती है।

इसीलिए मैंने पहले कहा है कि ब्याज दरों और करेंसी के बीच का संबंध समझना थोड़ा मुश्किल होता है। अगर तौर पर, करेंसी बाजार के ट्रेडर मुद्रास्फीति के आंकड़ों पर नजर रखते हैं और ब्याज दरों की कोशिश करते हैं कि अब सेंट्रल बैंक क्या करने वाला है और उसी आधार पर करेंसी में अपनी पोजीशन लेते हैं।

इस बात को याद रखना जरूरी है। अगर मुद्रास्फीति ऊपर है तो सेंट्रल बैंक **हॉकिश** रुख अपनाएगा और उस वजह से घरेलू मुद्रा मजबूत होती है। इसी तरीके से, अगर मुद्रास्फीति कम है तो सेंट्रल बैंक **डोविश** रुख अपनाएगा (सेंट्रल बैंक लोगों को खर्च करने के लिए प्रोत्साहित करेगा) और ब्याज दरें कम करेगा, इस वजह से घरेलू मुद्रा कमजोर होगी।

कंस्यूमर प्राइस इंडेक्स (CPI/Consumer Price Index) – यह एक ऐसा आंकड़ा है जो किसी निश्चित समय में कीमतों में हो रहे औसत बदलाव को बताता है। एक तरह से यह मुद्रास्फीति को नामने का तरीका है। CPI के बढ़ने का मतलब है कि मुद्रास्फीति बढ़ रही है और इसी तरह अगर CPI घट रही है तो इसका मतलब है कि मुद्रास्फीति कम हो रही है। आप इसके बारे में इस वेबसाइट **website** पर ज्यादा जानकारी पा सकते हैं।

GDP (Gross Domestic Product) / ग्राँस डोमैस्टिक प्रोडक्ट – किसी देश का GDP इस बात को बताता है कि उस देश में इस साल सामान और सेवाओं का कितना उत्पादन हुआ और इस सामान और सेवाओं की वहां की करेंसी में क्या कीमत है? भारत में इसकी कीमत रुपय में आंकी जाती है और इससे भारत का GDP निकलता है। अब आप अनुमान लगा ही चुके होंगे की GDP एक बहुत बड़ी संख्या होती है और हर दिन की बातचीत में इस तरीके से GDP का आंकड़ा नहीं दिया जा सकता। इसीलिए आमतौर पर GDP को ग्रोथ रेट यानी वृद्धि दर के रूप में बताया जाता है। उदाहरण के तौर पर अगर किसी देश की GDP 7.1% है तो इसका मतलब है कि वहां का GDP नंबर 7.1% की रफ्तार से बढ़ रही है।

GDP की वृद्धि दर जितनी ज्यादा होगी, उतनी ही ज्यादा उस देश पर निवेशकों का भरोसा बढ़ेगा और उस देश की करेंसी मजबूत होगी।

वैसे वो सारी घटनाएं जो करेंसी पर असर डालती हैं उनकी लिस्ट बनाना संभव नहीं है क्योंकि यह एक अंतहीन सूची होगी। और आगे चलते हुए आपको यह भी समझ में आएगा कि हर तरह का आंकड़ा किसी न किसी तरीके से किसी दूसरी घटना से जुड़ा हुआ है। इसलिए आपको उन सभी आंकड़ों को उस तरह से जानने की कोशिश नहीं है और इस वजह से मुद्रास्फीति बढ़ती है। जब मुद्रास्फीति बढ़ती है तो सेंट्रल बैंक आमतौर पर ये कौशिल करते हैं कि मुद्रा की सप्लाई कम हो जाए और लोगों के पास खर्च करने के लिए पैसे कम हों। इसका सबसे आसान तरीका होता है की ब्याज दरें बढ़ा दी जाए।

इसीलिए जब मुद्रास्फीति बढ़ रही होती है तो सेंट्रल बैंक आमतौर पर ब्याज दरें बढ़ाते हैं। और जब ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आमतौर पर घरेलू करेंसी मजबूत होती है।

इसीलिए मैंने पहले कहा है कि ब्याज दरों और करेंसी के बीच का संबंध समझना थोड़ा मुश्किल होता है। अगर तौर पर, करेंसी बाजार के ट्रेडर मुद्रास्फीति के आंकड़ों पर नजर रखते हैं और ब्याज दरों की कोशिश करते हैं कि अब सेंट्रल बैंक क्या करने वाला है और उसी आधार पर करेंसी में अपनी पोजीशन लेते हैं।

इस बात को याद रखना जरूरी है। अगर मुद्रास्फीति ऊपर है तो सेंट्रल बैंक **हॉकिश** रुख अपनाएगा और उस वजह से घरेलू मुद्रा मजबूत होती है। इसी तरीके से, अगर मुद्रास्फीति कम है तो सेंट्रल बैंक **डोविश** रुख अपनाएगा (सेंट्रल बैंक लोगों को खर्च करने के लिए प्रोत्साहित करेगा) और ब्याज दरें कम करेगा, इस वजह से घरेलू मुद्रा कमजोर होगी।

6 comments

View all comments →

Mayur panchal says:

June 22, 2020 at 8:28 pm

Ans of bid price EUR/INR = 74.68019 (sahi ho to inform karna sir ji)

Reply

घटनाओं का असर (ब्रेक्सिट) और इंटररेस्ट रेट पैरिटी



3.1 – असाधारण घटना, ब्रेक्सिट

पहले में इस पूरे अध्याय को USD INR के बारे में लिखना चाहता था क्योंकि सबसे ज्यादा भारत में इसी पेयार का कारोबार होता है। लेकिन फिर ब्रेक्सिट सामने आ गया। और मुझसे इसके बारे में लिखे बगैर नहीं रहा गया। मुझे लगा कि पिछले अध्याय में हमने जिस बात की चर्चा की थी – घटनाओं की और उनके असर की- उसके हिसाब से आज इसका बहुत ज्यादा महत्व है।

तो, हुआ क्या है— इसको समझने के लिए पहले इस पर एक नजर डालते हैं कि पाउंड (GBP) ने मुद्रा बाजार में किस तरह की प्रतिक्रिया दी है। इसमें 8.64% की भारी गिरावट आई। जो कि करेंसी बाजार के हिसाब से काफी बड़ी है।

Quote As on Jun 24, 2016 10:34:50 IST Currency Watch

GB Pound-Indian Rupee - GBPINR

Index Derivatives Stock Derivatives **Currency Derivatives**

Instrument Type: Currency Futu Symbol: GBPINR Expiry Date: 28JUN2016 Option Type: Select Strike Price: Select... **Get Data**

91.4600 Prev. Close 100.1100 Open 91.1000 High 93.7000 Low 90.5000

▼ -8.65% -8.64%

Fundamentals **Historical Data**

RBI Reference Rates 99.4721 Print
No. of Trades 28,142
Traded Volume (contracts) 2,64,235
Traded Value * (lacs) 2,41,301.55
VWAP 91.8621
Open Interest 27,717
Change in Open Interest -6,237
% Change in Open Interest -18.37

Order Book Intra-day

Buy Qty.	Buy Price	Sell Price	Sell Qty.
5	91.4425	91.4600	9
45	91.4400	91.4900	40
4	91.4275	91.4925	21
10	91.4250	91.4950	10
13	91.4225	91.4975	2
5,077	Total Quantity		6,435

UK (यूनाइटेड किंगडम) के समाचार पत्र गार्जियन ने इसके बारे में ये लिखा।

Brexit vote wipes \$2 trillion off global stocks and knocks pound to 31-year low

आप इस पूरे समाचार को यहां **article** पढ़ सकते हैं।

मेरी कोशिश ये है कि मैं आपको ब्रेक्सिट (Brexit) के बारे में साधारण भाषा में बता सकूँ जिससे आप यह समझ पाए कि पाउंड में इस तरह की प्रतिक्रिया क्यों हुई? लेकिन साथ ही ज्यादा बड़ा मुद्दा यह है कि आपको समझ में आए कि इस तरह की घटनाओं का करेंसी बाजार पर क्या असर पड़ता है? इससे आपको ब्रेक्सिट (Brexit) जैसी दुनिया की बड़ी घटनाओं का आकलन करना और करेंसी बाजार पर उनका असर, समझ आने लगेगा।

ब्रेक्सिट (Brexit) को साधारण भाषा में समझाने के लिए मैं नीचे कुछ बातें रख रहा हूँ। सबसे पहले शुरू करते हैं इतिहास से-

- दूसरे विश्व युद्ध के बाद, जर्मनी और फ्रांस ने देशों का एक संगठन बनाने पर चर्चा की थी। उनका मानना था कि अगर देश आपस में मिलकर कारोबार और व्यापार करेंगे तो एक दूसरे के खिलाफ युद्ध नहीं करेंगे।
- इसी चर्चा के आधार पर एक बड़ा संगठन यानी यूरोपियन यूनियन (EU) बनने की बात शुरू हुई और इसमें यूरोप के कई देश जुड़ गए।
- यूरोपियन यूनियन (EU) ने एक तरीके का एक बड़ा बाजार बना दिया जहां पर, वस्तु, सेवाएं और लोग आसानी से बिना किसी सीमा के आ जा सकते थे। इन सबके लिए EU ने एक करेंसी भी बना दी जिसे यूरो का नाम दिया गया।
- यूनाइटेड किंगडम (UK) भले ही यूरो का सदस्य था, लेकिन उसने कभी भी यूरो को अपनी करेंसी नहीं माना। वैसे यूरोपियन यूनियन में और भी कई देश थे जो अपनी करेंसी चलाते थे जैसे स्विट्ज़रलैंड, चेक रिपब्लिक और डेनमार्क आदि।

- यूनाइटेड किंगडम (UK) में पिछले दिनों लगातार इस बात पर बहस होती रही थी कि UK को EU (यूरोपियन यूनियन) में रहना चाहिए या नहीं? UK के बहुत सारे नागरिकों का यह मानना था कि UK को इस के बाहर रहना चाहिए। क्योंकि EU के नियम कानून UK के नागरिकों के लिए फायदेमंद नहीं थे बल्कि उनको नुकसान पहुंचा रहे थे। उनका मानना था कि अगर UK, EU से बाहर चला जाए तो उसका विकास काफी तेजी से होगा उसकी अर्थव्यवस्था भी बढ़ेगी।
- Britain के EU से बाहर निकलने (Exit) की इस घटना को **Brexit** का नाम दिया गया।
- UK ने अंततः 23 जून 2016 को इस बारे में सारे नागरिकों के बीच वोट (रेफरेंडम / referendum) कराने का फैसला किया जहां नागरिकों को इस बात पर वोट देना था कि UK यूरोपियन यूनियन (EU) में रहे या ना रहे।

- इस वोटिंग के बाद जो नतीजा आया वह काफी चौकाने वाला था। क्योंकि ज्यादातर लोगों ने UK को EU से बाहर निकलने के लिए वोट दिया। जबकि दुनिया के बहुत सारे देशों के लोगों का और खुद UK में भी काफी लोगों का यह मानना था कि ज्यादातर लोग EU में रहने के लिए ही वोट करेंगे।

इस जनमत संग्रह के नतीजों ने दुनिया भर के कारोबारियों और निवेशकों को डरा दिया। GBP (पाउंड) करीब 31 साल के निचले स्तर तक पहुंच गया। यूरोप के बड़े-बड़े इंडेक्स 8% से 10% तक गिर गए।

ऐसा क्यों हुआ? दुनिया भर के बाजारों में गिरावट क्यों आई? ब्रेक्सिट (Brexit) में और करेंसी बाजार तथा दूसरे बाजारों में क्या संबंध है?

मुझे उम्मीद है कि पिछले अध्याय में जो कुछ हमने जाना है वो यहां काम आएगा।

अगर आपको याद हो तो हमने पिछले अध्याय में यह कहा था कि एक मजबूत अर्थव्यवस्था वाले देश (इन्फ्लेशन यानि मुद्रास्फिति, ब्याज दरें और व्यापार घाटा जैसी चीजों के आधार पर) में करेंसी या मुद्रा मजबूत होती है।

अब जरा इसको UK के संदर्भ में देखिए। UK दुनिया की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और यूरोपियन यूनियन में इसका काफी ज्यादा बड़ा हिस्सा है। UK के यूरोपियन यूनियन में से बाहर निकलने की वजह से आर्थिक और राजनीतिक तौर पर चीजें काफी ज्यादा बदलेंगी।

दुनिया के दूसरे देशों के साथ भले ही UK का ट्रेड डिफिसिट यानी व्यापार घाटा है लेकिन यूरोपियन यूनियन के साथ इसका ट्रेड डेफिसिट में नहीं है बल्कि यह ट्रेड सरप्लस में है। इससे आपको इस बात का अंदाजा लग सकता है कि EU के साथ UK की अर्थव्यवस्था कितनी मजबूती से जुड़ी है। इसी लिए UK का EU से बाहर निकालना काफी बड़ी बात है और यह उसकी वित्तीय हालात पर काफी ज्यादा असर डालेगी।

इसके अलावा एक और बात जिसने लोगों की सोच पर असर डाला वह यह है कि किसी को नहीं पता कि अब क्या होगा? सबको ये तो पता है कि आर्थिक स्थिति में बदलाव आएगा लेकिन कितना बदलाव आएगा ये किसी को नहीं पता। बैंक ऑफ इंग्लैंड किस तरह की प्रतिक्रिया देगा, किसी को नहीं पता। क्या वह ब्याज दरों को बदलेगा और क्या रेट अब शून्य तक पहुंच जाएगा- ये किसी को नहीं पता।

अनिश्चितता एक ऐसी चीज है जो बाजार को पसंद नहीं आती और यह बाजार को डराती है। ब्रेक्सिट (Brexit) ने एक तरह की अनिश्चितता पैदा कर दी और इसी की वजह से दुनिया भर के बाजार टूट गए।

एक करेंसी ट्रेडर के तौर पर आपके लिए इस तरह की घटनाओं को जानना और समझना जरूरी है। अपने अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि सबसे अच्छे ट्रेडर तब होते हैं जब आप को मुद्दा ठीक से समझ में आए और अपनी समझ का इस्तेमाल कर सकें।

याद रखें कि अगर आप ने घटना को ठीक से समझा है और इस नतीजे पर पहुंच गए हैं कि आपको ट्रेड नहीं करना है तो फिर ये अपने आप में ही एक अच्छा ट्रेड है। क्योंकि एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि जब संशय हो तो कुछ मत कीजिए।

तो मुझे की बात यह है कि जब इस तरह की बड़ी घटनाएं आपके आसपास हो रही हों तो आपको यह पता होना चाहिए कि क्या हो रहा है। अगर आप उसको जाने बगैर कोई ट्रेड करेंगे तो यह अंधेरे में तीर चलाने जैसी बात होगी।

तो यह धी ब्रेक्सिट (Brexit) और उससे जुड़ी घटनाओं की करेंसी बाजार पर असर की बात। अब आगे बढ़ते हैं और करेंसी से जुड़ी दूसरी बातों पर चर्चा करते हैं।

3.2 – काल्पनिक ट्रेड

कल्पना कीजिए एक ऐसी स्थिति की, जहां आप एक निश्चित ब्याज दर पर उधार ले सकें, उधार लिए हुए इन पैसों को ऊँची दरों पर निवेश कर सकें, और उन दोनों ब्याज दरों के बीच के अंतर की कमाई कर सकें। इसको एक उदाहरण से समझते हैं।

अमेरिका में ब्याज दरें 0.5% की है जो दुनिया में शायद सबसे कम है। अब मान लीजिए कि आप एक अमेरिकी बैंक से \$10000 का कर्ज लेते हैं। इस पैसे को भारत जैसे एक देश में निवेश करते हैं जहां पर ब्याज दरें 6 से 7% तक की है। ऐसा करने के लिए, आपको उधार ली गई उस पूरा उधार की रकम को भारतीय रूप में बदलना होगा क्योंकि वो अमेरिकी डॉलर में है। अब जैसे अभी की USD INR का रेट ₹67 है। ऐसे में यह \$10000 आपके लिए ₹670000 बन जाएगा। इस पैसे को भारत में 7% पर निवेश कर देते हैं।

साल के अंत में आपको शुरुआती पूंजी और उस पर मिलने वाला 7% का ब्याज दोनों मिलेंगे और इस तरह से अब रकम होगी –

$$670,000 + 670,000 \times (7\%)$$

$$= 670,000 + 46,900$$

$$= 716,900$$

अब हम इस पैसे को अगर फिर से USD में बदलते हैं मान लीजिए 67 के रेट से, तो हमें \$10700 मिलेंगे। अब हमें इसमें से प्रिंसिपल अमाउंट पर यानी मूलधन लौटाना होगा और साथ ही, मूलधन पर 0.5% का ब्याज देना होगा जो कि \$50 होगा। यानी हमें \$10,000 + \$50 लौटाने होंगे।

तो \$10,050 बैंक को लौटाने के बाद आपको \$650 का फायदा होगा जो कि बिना किसी रिस्क के आपको मिल रहा है।

अगर आप ध्यान से देखें तो आपको समझ आएगा कि \$650 बराबर है ब्याज दरों के अंतर और उधार ली गयी रकम को आपस में गुणा करने से मिलने वाली संख्या के।

$$10000 \times (7\% - 0.5\%)$$

$$10000 \times (6.5\%)$$

$$650$$

ये ऑर्बिट्राज का एक सीधा-साधा नमूना है जो बहुत आसानी से किया जा सकता है।

अब ऐसी स्थिति में कल्पना कीजिए कि आप को एक बड़ी रकम अमेरिका में उधार पर मिल सकती है और आप इस बड़ी रकम को भारतीय बाजार में निवेश कर सकते हैं तो आप काफी ज्यादा पैसे बना सकते हैं।

लेकिन सच्चाई तो यह है कि ऐसा होता नहीं है। ऐसा सिर्फ कल्पना में ही होता है। जिस दुनिया में हम रहते हैं वहां पर बिना रिस्क के ऐसे मुनाफा नहीं मिलता। अगर मिलता भी है तो जब तक आप उसको समझ पाएं तब तक वो गायब हो जाता है।

लेकिन हमें इस सवाल का जवाब देना है कि ऐसे काल्पनिक ट्रेड क्यों नहीं हो सकते?

3.3- फॉरवर्ड प्रीमिया और इंटररेस्ट रेट पैरिटी

जिस ट्रेड की ऊपर हमने चर्चा की है उसमें समस्या यह है कि उसमें बहुत सारी चीजों की कल्पना की गई है। हमने मान लिया है कि –

- अमेरिकी बाजार में हम जितने चाहें उतने पैसे उधार ले सकते हैं।
- भारतीय बाजार में जितना चाहे उतने पैसे जमा कर सकते हैं।
- इस तरह के सौदों में कोई खर्च नहीं होता और ना ही कोई टैक्स लगता है।
- 2 देशों के बीच इस तरह करेंसी का लाना-जाना संभव है।
- हमने यह भी माना है कि 1 साल बाद डॉलर और रूपए की दर में कोई बदलाव नहीं होगा और यह 67 पर ही टिका रहेगा।

हमें पता है कि इस तरह के ऑर्बिट्राज बहुत लंबे समय तक नहीं बने रह सकते। एक साल में करेंसी के बाजार में रेट इस तरह से बदलेंगे कि ऑर्बिट्राज का यह मौका नहीं बचेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो

एक साल बाद भारत में जितने पैसे मिलेंगे = एक साल बाद अमेरिका के बैंक को हमें जितने पैसे वापस चुकाने हैं

ऊपर के उदाहरण में हमने कहा है कि हम अमेरिका में \$10000 का उधार लिया और इस पैसे को भारत में निवेश किया, फिर 1 साल बाद हमें 716900 रूपए मिले।

ऑर्बिट्राज खत्म होने के लिए जरूरी है कि एक साल बाद ₹716900 और \$10050 एक दूसरे के बराबर हो जाएं।

इसका मतलब है कि तब US डॉलर और रूपए का रेट हो –

$$716900 / 10050$$

$$= 71.33$$

मुद्रा बाजार में इस को फॉरवर्ड प्रीमिया कहते हैं। इसको निकालने का फार्मूला है-

$$F = S * (1 + Roc * N) / (1 + Rbc * N)$$

यहां –

$$F = \text{फ्यूचर रेट}$$

$$S = \text{आज का स्पॉट रेट}$$

$$N = \text{साल में समय अवाधि}$$

$$Roc = \text{कोटेशन करेंसी में ब्याज दर}$$

$$Rbc = \text{बेस करेंसी में ब्याज दर}$$

अब इस फार्मूले का उपयोग करते हैं और देखते हैं कि हमने ऊपर में फॉरवर्ड रेट को सही तरीके से निकाला है या नहीं। याद रखिए कि अभी स्पॉट रेट 67 है।

$$F = 67 * (1 + 7\% * 1) / (1 + 0.5\% * 1)$$

$$= 71.33$$

यहां पर, ध्यान दीजिए कि फॉरवर्ड प्रीमिया का रेट लगभग बराबर होता है स्पॉट रेट + इंटररेस्ट रेट के अंतर का स्पॉट मुना मतलब

$$F = S * (1 + \text{ब्याज दरों का अंतर})$$

$$= 67 * (1 + 7\% - 0.5\%)$$

$$= 67 * (1 + 6.5\%)$$

$$= 71.35$$

इसे इंटररेस्ट रेट पैरिटी कहते हैं।

जरा सोचिए – भारतीय रुपया आज 67 पर ट्रेड कर रहा है जबकि 1 साल बाद भविष्य में यह 71.35 पर होगा। इसका मतलब है कि भारतीय रुपया अभी डिस्काउंट पर है। आमतौर पर, ऊंची ब्याज दरों वाली करेंसी की फ्यूचर वैल्यू उस करेंसी के मुकाबले डिस्काउंट पर होगी जहां पर इंटररेस्ट रेट यानी ब्याज दर नीचे है।

हम इस सब की चर्चा क्यों कर रहे हैं और करेंसी ट्रेडिंग में इसका क्या महत्व है? वास्तव में फॉरवर्ड प्रीमिया किसी भी करेंसी के फ्यूचर कीमतों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस पर हम आगे चर्चा करेंगे।

इस अध्याय की मुख्य बातें

- ब्रेक्सिट (Brexit) जैसी घटनाएं करेंसी पर असाधारण प्रभाव डालती हैं।
- ऐसा कोई देश जहां की अर्थव्यवस्था बुरी हालत में जाने वाली हो उसकी करेंसी कमजोर हो जाती है।
- फॉरवर्ड प्रीमिया यह दर है जो किसी निश्चित समय के बाद स्पॉट दर होने वाली है।
- फॉरवर्ड प्रीमिया = $F = S * (1 + Roc * N) / (1 + Rbc * N)$
- इंटररेस्ट रेट पैरिटी हमें बताता है कि फॉरवर्ड प्रीमिया का रेट लगभग बराबर होता है स्पॉट रेट + इंटररेस्ट रेट के अंतर का स्पॉट मुना
- ऐसी कोई भी करेंसी जहां ब्याज दरें ऊंची हैं, उसकी फ्यूचर वैल्यू हमेशा उस करेंसी के सामने डिस्काउंट पर होगी जहां पर ब्याज दरें कम है।

डॉलर-रुपया पेयर भाग 1

4.1 – कॉन्ट्रैक्ट

यहां पर हम एक बहुत जरूरी कल्पना कर रहे हैं, हम यह मान रहे हैं कि आप इस बात को अच्छे से समझते हैं कि **फ्यूचर और ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट** किस तरीके से काम करते हैं।

करेंसी ट्रेड के लिए टेक्निकल एनालिसिस एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है इसलिए मैं यह भी मान रहा हूँ कि आपको **टेक्निकल एनालिसिस** अच्छे से समझ में आती है।

आगर आप इन विषयों से ठीक तरीके से परिचित नहीं है या इनको नहीं समझते हैं तो, मेरी आपको सलाह होगी कि पहले आप इन मॉड्यूल को जाकर पढ़िए तभी आगे बढ़िए। करेंसी और क्मोडिटी बाजार का ज्यादातर कारोबार फ्यूचर मार्केट में होता है, इसलिए जरूरी है कि इन डेरिवेटिव इंस्ट्रूमेंट के बारे में आपको पता हो।

अब, यह मानते हुए कि आपको ये विषय अच्छे से समझ में आते हैं, हम आगे बढ़ते हैं और USD-INR के फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट को देखते और समझते हैं। इस कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारीयें आपको यह बताएंगी कि USD-INR का फ्यूचर किस तरीके से काम करता है।

सूचना	जानकारी	टिप्पणी
लॉट साइज	\$1,000	इक्विटी डेरिवेटिव में लॉट साइज शेयर की संख्या के हिसाब से होता है, लेकिन यहां ये डॉलर में एक रकम होती है
अंशलाभ	1 USD के मुकाबले भारतीय रुपये की कीमत	
टिक साइज	0.25 पैसे यानी INR 0.0025	
ट्रेडिंग का समय	सोमवार से शुक्रवार 9:00 AM से 5:00 PM	
एक्सपायरी साइकिल	12 महीने तक के कॉन्ट्रैक्ट	ध्यान दें, इक्विटी डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट की एक्सपायरी 3 महीने आगे तक होती है
ट्रेडिंग का अंतिम दिन	महीने के आखिरी कारोबारी दिन से दो दिन पहले 12:30 PM तक	इक्विटी डेरिवेटिव एक्सपायरी के दिन भी 3:30 PM तक खरीदा बेचा जा सकता है
सेटलमेंट का अंतिम दिन	महीने का आखिरी कारोबारी दिन	
मार्जिन	SPAN + एक्सपोजर	आमतौर पर SAPN 1.5% होता है, और एक्सपोजर 1%, इसलिए कुल मार्जिन करीब 2.5% तक होता है
सेटलमेंट कीमत	सेटलमेंट के दिन का RBI का रेफरेंस रेट	स्वॉट में क्लोजिंग कीमत

यह किस तरह से काम करता है इसको समझने के लिए एक उदाहरण लेते हैं



USD-INR के 15 मिनट के चार्ट को आप ऊपर देख रहे हैं। जैसा कि आप देख सकते हैं कि जिस कैंडल को घेरा गया है वह एक बेयरिश मार्कबोजू बना रहा है। इसके आधार पर आप एक शॉर्ट ट्रेड शुरू कर सकते हैं और मार्कबोजू के हाई को आप अपना स्टॉपलॉस बना सकते हैं।

ध्यान दीजिए मैं यहां ट्रेड को सही या गलत बताने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ बल्कि मेरी कोशिश यह है कि आपको यह समझा सकूँ कि USD-INR कॉन्ट्रैक्ट किस तरह से काम करता है। इस सोदे की जानकारी इस तरह से है

तारीख – 1 जुलाई 2016

पोजीशन – शॉर्ट

एन्ट्री – 67.6900

स्टॉपलॉस – 67.7500

शॉर्ट करने के लिए लॉट की संख्या – 10

USD INR का एक लॉट = \$1000

USD INR के एक लॉट की कॉन्ट्रैक्ट की कीमत = लॉट साइज * कीमत

= 1000 * 67.7000

= 67,700

सोदे की मार्जिन की जानकारी के लिए आप जेरोधा के मार्जिन कैलकुलेटर पर जा सकते हैं, उससे निकली जानकारी कुछ इस तरह से है

Lot	Contract	Entry	Exit	Price	Notional Margin	MS Margin
16	USDINR	Jul 2016	1000	67.77	1504	762
17	USDINR	Aug 2016	1000	68.15	1503	766

जैसा कि आप देख सकते हैं कि USD-INR में एक नई पोजीशन बनाना हो तो आपको 1524 रुपए देने होंगे। तो, 67700 साइज वाले कॉन्ट्रैक्ट के लिए मार्जिन बनती है –

1525 / 67700

= 2.251%

मेरा अनुमान है कि इसमें से करीब 1.5% स्पैन मार्जिन होगी (एक्सचेंज की तरफ से तब की गई न्यूनतम मार्जिन) और बाकी एक्सपोजर मार्जिन होगा

अब क्योंकि हम यहां 10 लॉट को शॉर्ट करने जा रहे हैं इसलिए कुल मार्जिन होगा –

10 * 1525

= 15,250

यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि जब आप इक्विटी के फ्यूचर्स में ट्रेड करते हैं तो आपको अपने सोदे की कुल कीमत का 15 से 65% तक मार्जिन के तौर पर देना होता है जो कि हर स्टॉक के लिए अलग-अलग होता है। लेकिन जब आप करेंसी में इस तरह के सोदा करते हैं तो यहां पर मार्जिन काफी कम होता है। इससे आपको समझ में आना चाहिए कि करेंसी ट्रेडिंग बहुत ही ज्यादा लेवरेज वाली होती है।

लेकिन साथ ही करेंसी एक बहुत ही छोटे ट्रेडिंग रेंज में काम करती है। इसलिए भी यहां लेवरेज ज्यादा होता है।

4.2 – कॉन्ट्रैक्ट का संचालन (The Contract Logistics)

यहां पर आपको करेंसी फ्यूचर के क्वोट (Quote) पर ध्यान देना चाहिए, आपको दिखेगा कि यह दशमलव के बाद 4 अंकों तक होता है। इसकी वजह यह है कि करेंसी फ्यूचर में 0.0025 भी बड़ी संख्या मानी जाती है।

RBI भी जब अपना रेफरेंस रेट बताता है तो यह भी दशमलव के बाद 4 अंकों तक बताता है। दशमलव के बाद चौथे अंक में एक छोटा सा बदलाव भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार पर एक बड़ा असर डालता है। वास्तव में पूरी दुनिया में करेंसी के बाजार में दशमलव के बाद चौथे अंक तक का ही क्वोट (Quote) दिया जाता है। इसे टिक साइज कहा जाता है या करेंसी की भाषा में कई तो पिप भी कहा जाता है। तो करेंसी में कम से कम एक पिप / टिक तक का बदलाव हो सकता है।

तो जब USD-INR 67.9000 से 67.9025 तक चलता है तो कहा जाता है कि करेंसी एक पिप बढ़ गई है।

आगर करेंसी में 1 पिप का बदलाव आता है तो आप USD-INR में कितने पैसे कमाएंगे, इसको पता करना काफी आसान है

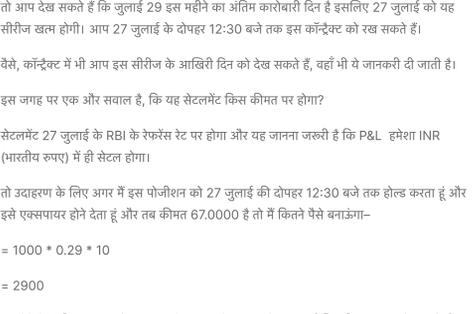
लॉट साइज * पिप (टिक साइज)

= 1000 * 0.025

= 2.5

इसका मतलब है कि हर पिप पर यानी हर टिक के बदलाव पर आप ₹2.50 बनाएंगे।

अब वापस अपने शॉर्ट ट्रेड पर लौटते हैं यहां पर मार्कबोजू का ये असर होगा –



इस शॉर्ट ट्रेड को शुरू करने के बाद ये करेंसी पेयर 67.6000 तक नीचे गिरा है। अगर मैं इस जगह पर अपनी पोजीशन बंद कर दूँ तो मैं इतने पैसे कितने पैसे कमा लूँगा –

एन्ट्री = 67.6900

मौजूदा कीमत = 67.6000

कुल कितने प्वाइंट का बदलाव हुआ = 67.6900 – 67.6000 = 0.0900

पोजीशन = शॉर्ट

यहां पर थोड़ा ध्यान दीजिए, आपको पता है कि करेंसी कम से कम 1 पिप तक बढ़ या घट सकती है। जब करेंसी में 0.09 पैसे ऊपर गई है तो इसमें कितने पिप का बदलाव हुआ है, इसको पता करने के लिए हमें प्वाइंट्स में हुए कुल बदलाव को पिप के साइज से विभाजित करना होगा

पिप की संख्या = 0.0900 / 0.0025

= 36

आप देख सकते हैं कि इस ट्रेड में कुल 36 पिप का बदलाव हुआ है। तो अब हम निकाल सकते हैं कि हमने कितने पैसे बनाए-

लॉट साइज * लॉट की संख्या * पिप की संख्या * टिक साइज

Lot size * number of lots * number of pips * tick size

हमें पता है कि पिप की संख्या * टिक साइज का मतलब है इस ट्रेड के दौरान कुल प्वाइंट का बदलाव , इसलिए हम ऊपर के फॉर्मूले को इस तरह से लिख सकते हैं-

लॉट साइज * लॉट की संख्या * कुल प्वाइंट बदलाव

Lot Size * Number of lots * total number of points

= 1000 * 10 * 0.0900

= 900

ध्यान दीजिए कि यह फॉर्मूला केवल ट्रेड था। अगर आप इस सोदे को एक्सपायरी तक ले जाते तो क्या होता? अगर हम हमने इस मार्जिन दी है तो हम इसे एक्सपायरी तक आसानी से होल्ड कर सकते हैं। जुलाई सीरीज का कॉन्ट्रैक्ट पूरा महीने के आखिरी कारोबारी दिन के 2 दिन पहले तक चलेगा।

इस कैलेंडर पर नजर डालिए-



तो आप देख सकते हैं कि जुलाई 29 इस महीने का अंतिम कारोबारी दिन है इसलिए 27 जुलाई को यह सीरीज खत्म होगी। आप 27 जुलाई के दोपहर 12:30 बजे तक इस कॉन्ट्रैक्ट को रख सकते हैं।

वैसे, कॉन्ट्रैक्ट में भी आप इस सीरीज के आखिरी दिन को देख सकते हैं, वहाँ भी ये जानकारी दी जाती है।

इस जगह पर एक और सवाल है, कि यह सेटलमेंट किस कीमत पर होगा?

सेटलमेंट 27 जुलाई के RBI के रेफरेंस रेट पर होगा और यह जानना जरूरी है कि P&L हमेशा INR (भारतीय रुपए) में ही सेटल होगा।

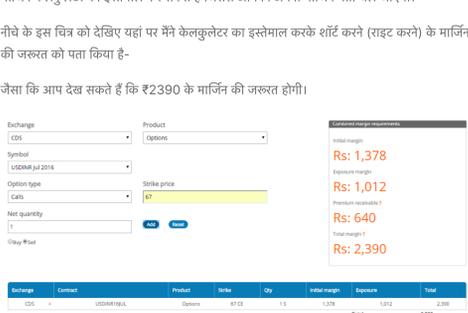
तो उदाहरण के लिए अगर मैं इस पोजीशन को 27 जुलाई की दोपहर 12:30 बजे तक होल्ड करता हूँ और इसे एक्सपायर होने देता हूँ और तब कीमत 67.0000 है तो मैं कितने पैसे बनाऊँगा-

= 1000 * 0.29 * 10

= 2900

यह पैसे मेरे ट्रेडिंग अकाउंट में 28 जुलाई 2016 को आ जाएंगे। ध्यान दीजिए कि जब तक मैं इस पोजीशन को होल्ड कर रहा हूँ तब तक यह पोजीशन मार्केट टू मार्केट में दिखेगी, जैसे कि इक्विटी फ्यूचर्स में होता है। उम्मीद है कि इसके बाद आपको यह समझ में आ गया होगा की करेंसी फ्यूचर में किस तरीके से कामकाज होता है।

अब USD-INR के ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं।



4.3 – USD INR का ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट

देखते हैं कि USD-INR का ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट किस तरीके से बनता है। आपको यह जानकर है थोड़ा आश्चर्य होगा कि केवल USD-INR का ही ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट यहां पर मौजूद होता है। लेकिन उम्मीद कर सकते हैं कि आने वाले समय में दूसरी करेंसी के भी ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट मिलेंगे। ज्यादातर चीजें फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट की तरह ही होती हैं। लेकिन जो कुछ अंतर होते हैं उन पर नजर डालते हैं-

ऑप्शन एक्सपायरी स्ट्राइल – यूरोपियन

प्रीमियम – INR में बताया जाता है

कॉन्ट्रैक्ट साइकिल – जहाँ फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट 12 महीने आगे तक चलते हैं वहीं ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट 3 महीने आगे तक ही होते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे इक्विटी के डेरिवेटिव में होता है। तो अगर हम 27 जुलाई के महीने में है तो कॉन्ट्रैक्ट जुलाई, अगस्त और सितंबर के लिए ही मिलेगा।

मौजूदा स्ट्राइक – 12 इन द मनी, 12 आउट ऑफ द मनी और 1 नियर द मनी ऑप्शन। इस तरह कुल मिलाकर करीब 25 स्ट्राइक मिलते हैं जिसमें से आपको चुनना होता है। हालांकि बाजार के हिसाब से कुछ और ऑप्शन भी जुड़ सकते हैं। हर 0.25 पैसे के दूरी पर एक स्ट्राइक मिलती है।

सेटलमेंट – भारतीय रुपए में सेटलमेंट होता है (सेटलमेंट कीमत RBI की एक्सपायरी के दिन की रेफरेंस रेट होती है)

USD-INR के ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट पर एक नजर डालते हैं और देखते हैं कि यह काम काज कैसे करता है इस चित्र पर नजर डालिए –

Quote As on Jul 05, 2016 12:59:50 IST | Option Chain | Currency Watch

U S Dollar-Indian Rupee - USDINR

Instrument Type: **USDINR** Expiry Date: **27JUL2016** Call Type: **67.00** Strike Price: **67.00** | **Get Data**

0.7400	Prev. Close: 0.6400	Open: 0.6850	High: 0.7575	Low: 0.6475
---------------	---------------------	--------------	--------------	-------------

Fundamentals	Historical Data	
	Print	Intra-day
RBI Reference Rates	67.1848	
No. of Trades	247	
Traded Volume (contracts)	5,562	
Traded Value - Premium (lacs)	38.71	
Traded Value * (lacs)	3,765.25	
VWAP	0.6960	
Open Interest	31,697	
Change In Open Interest	1,384	
% Change In Open Interest	4.57	

Buy Qty.	Buy Price	Sell Price	Sell Qty.
82	0.7200	0.7825	104
20	0.7150	0.7825	71
10	0.7125	0.7850	47
100	0.7650	0.7400	99
100	0.7075	0.7425	50
626	Total Quantity		483

Note: * In case of Option Contracts "Traded Value" represents "Notional Turnover"

दिए गए ऑप्शन क्वोट के हिसाब से हमें पता है कि

ऑप्शन का प्रकार – कॉल ऑप्शन

स्ट्राइक – 67.0000

स्वॉट रेट (RBI) की उस दिन की रेफरेंस रेट) – 67.1848

एक्सपायरी – 27 जुलाई 2016

पोजीशन – लॉन्ग

प्रीमियम – 0.7400 (INR में)

हमें पता है कि लॉट साइज \$1000 का है हालांकि यह लॉट साइज ऊपर में दिखाया नहीं गया है। आमतौर पर इक्विटी के डेरिवेटिव के क्वोट में इस सूचना को दिखाया जाता है। इसलिए अगर आप इसे पहली बार देख रहे हैं तो यह ध्यान रखें कि लॉट साइज 1000 का होता है।

अब अगर आप इस ऑप्शन को खरीद रहे हैं तो आपको कितना प्रीमियम लगेगा, इसकी गणना करना बहुत आसान है-

दिया जाने वाला प्रीमियम = लॉट साइज * प्रीमियम

= 1000 * 0.7400

= 740

ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट भी इक्विटी डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट की तरह ही काम करता है, एक नजर नीचे के चित्र पर डालिए-

Quote As on Jul 05, 2016 14:06:52 IST | Option Chain | Currency Watch

U S Dollar-Indian Rupee - USDINR

Instrument Type: **USDINR** Expiry Date: **27JUL2016** Call Type: **67.00** Strike Price: **67.00** | **Get Data**

0.7750	Prev. Close: 0.6400	Opens: 0.6850	High: 0.7750	Low: 0.6475
---------------	---------------------	---------------	--------------	-------------

Fundamentals	Historical Data	
	Print	Intra-day
RBI Reference Rates	67.4028	
No. of Trades	501	
Traded Volume (contracts)	10,927	
Traded Value - Premium (lacs)	78.66	
Traded Value * (lacs)	7,383.00	
VWAP	0.7216	
Open Interest	31,814	
Change In Open Interest	1,501	
% Change In Open Interest	4.95	

Buy Qty.	Buy Price	Sell Price	Sell Qty.
75	0.7725	0.7825	53
48	0.7150	0.7825	5
94	0.7675	0.7850	30
25	0.7650	0.7875	25
59	0.7625	0.7900	2
813	Total Quantity		179

Note: * In case of Option Contracts "Traded Value" represents "Notional Turnover"

जैसा कि आप देख सकते हैं कि प्रीमियम काफी ज्यादा बढ़ गई है और इसलिए मैं अपने ट्रेड को अभी तुरंत बंद कर सकता हूँ। अगर मैंने ऐसा किया तो मैं कितना कमा लूँगा –

= 1000 * 0.7750

= 775

इसका मतलब है कि मुझे 775 - 740 = ₹35 प्रति लॉट की कमाई होगी।

लेकिन, इसके बजाय अगर आपने इस ऑप्शन को बेचा होता या राइट किया होता तो क्या होता? आपको पता है कि ऑप्शन बेचने के लिए आपको मार्जिन जमा करना पड़ना है। आप इसके लिए जेरोधा के F&O मार्जिन कैलकुलेटर का इस्तेमाल कर सकते हैं जिससे आपको अपनी मार्जिन पता चल जाएगी।

नीचे के इस चित्र को देखिए यहां पर मैंने कैलकुलेटर का इस्तेमाल करके शॉर्ट करने (राइट करने) के मार्जिन की जरूरत को पता किया है-

जैसा कि आप देख सकते हैं कि ₹2390 के मार्जिन की जरूरत होगी।

Exchange	Contract	Product	Strike	Qty	Volume	Exposure	Total
CCS		USDINR	67.00	15	1,378	1,912	2,390

मुझे उम्मीद है कि अब आपको USD-INR के कॉन्ट्रैक्ट के बारे में काफी कुछ पता चल गया है। अगले अध्याय में हम कोशिश करेंगे कि USD-INR के पेयर के बारे में कुछ आंकड़ों पर नजर डाल सके और दूसरी करेंसी पेयर के कॉन्ट्रैक्ट पर भी नजर डाल सकें।

इस अध्याय की मुख्य बातें

- USD-INR के डेरिवेटिव के कॉन्ट्रैक्ट में दी गयी जानकारी को देखकर आप उसकी खरीद बिक्री के तरीके के बारे में जान सकते हैं।
- लॉट साइज \$1000 का होता है लेकिन यह एक्सचेंज द्वारा कभी भी बदला जा सकता है।
- USD-INR कॉन्ट्रैक्ट की एक्सपायरी महीने के अंतिम कारोबारी दिन के 2 दिन पहले होती है और यह कॉन्ट्रैक्ट उस दिन से दोपहर 12:30 बजे तक की होल्ड किया जा सकता है।
- मार्जिन = SPAN + एक्सपोजर, आम तौर पर मार्जिन 2.25 से 2.5 तक होता है।
- करेंसी पेयर को दशमलव के बाद 4 अंकों तक क्वोट किया जाता है।
- पिप का मतलब होता है वह कम से कम बदलाव जो कि किसी करेंसी कीमत में आ सकती है।
- करेंसी ऑप्शन यूरोपियन तरीके के होते हैं।
- करेंसी प्रीमियम हमेशा भारतीय रुपए में या INR में बताए जाते हैं।
- हर 2.5 पैसे की दूरी पर एक स्ट्राइक उपलब्ध होती है।
- जब आप करेंसी ऑप्शन को बेचना (राइट करना) चाहते हैं तो आपकी मार्जिन ब्लॉक हो जाती है।

डॉलर-रुपया पेयर – भाग 2

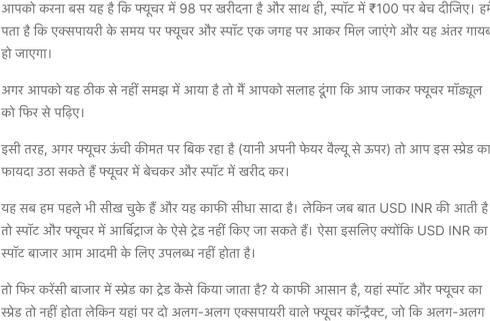
5.1 – फ्यूचर्स कैलेन्डर स्प्रेड

आगर बाकी चीजें स्थिर रहें तो, फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट हमेशा स्पॉट के मुकाबले प्रीमियम पर चलना चाहिए। जैसा कि हम जानते हैं कि ऐसा फ्यूचर्स प्राइसिंग फार्मूले (Futures Pricing Formula) में इंटेस्ट रेट (Cost of carry/कॉस्ट ऑफ कैरी) के प्रभाव की वजह से होता है। हमने पहले फ्यूचर्स के मॉड्यूल में इस पर चर्चा की है। इस समीकरण में थोड़ा सा भी बदलाव आर्बिट्राज का एक मौका पैदा करता है।

एक बार फिर से जल्दी से कुछ चीजों को दोहरा लें। इसके लिए, एक ऐसी स्थिति की चर्चा करते हैं जहां पर स्पॉट और फ्यूचर के बीच में आर्बिट्राज का एक मौका बन रहा है –

फ्यूचर में कीमतें नीचे हैं – मान लीजिए कि स्पॉट कीमत 100 है और फ्यूचर में इसकी सही कीमत (Fair Value) 105 है। फ्यूचर की फेयर वैल्यू निकालने के लिए फ्यूचर प्राइसिंग फार्मूले का इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर स्पॉट और फ्यूचर के बीच का अंतर फ्यूचर के फेयर वैल्यू के बराबर हो यानी 105 – 100 = 5 हो, तो उसे नो आर्बिट्राज स्प्रेड (No Arbitrage Spread) कहते हैं मतलब वहां आर्बिट्राज का कोई मौका नहीं होता है।

लेकिन मान लीजिए किसी वजह से फ्यूचर 98 पर ट्रेड कर रहा है इसकी वजह से फ्यूचर और स्पॉट के बीच में 7 (105 – 98) का अंतर है जिसका फायदा उठाया जा सकता है।



आपको करना बस यह है कि फ्यूचर में 98 पर खरीदना है और साथ ही, स्पॉट में ₹100 पर बेच दीजिए। हमें पता है कि एक्सपायरी के समय पर फ्यूचर और स्पॉट एक जगह पर आकर मिल जाएंगे और यह अंतर गायब हो जाएगा।

आगर आपको यह ठीक से नहीं समझ में आया है तो मैं आपको सरलाह दूंगा कि आप जाकर फ्यूचर मॉड्यूल को फिर से पढ़िए।

इसी तरह, अगर फ्यूचर ऊंची कीमत पर बिक रहा है (यानी अपनी फेयर वैल्यू से ऊपर) तो आप इस स्प्रेड का फायदा उठा सकते हैं फ्यूचर में बेचकर और स्पॉट में खरीद कर।

यह सब हम पहले भी सीख चुके हैं और यह काफी सीधा सादा है। लेकिन जब बात USD INR की आती है तो स्पॉट और फ्यूचर में आर्बिट्राज के ऐसे ट्रेड नहीं किए जा सकते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि USD INR का स्पॉट बाजार आम आदमी के लिए उपलब्ध नहीं होता है।

तो फिर करंसी बाजार में स्प्रेड का ट्रेड कैसे किया जाता है? ये काफी आसान है, यहां स्पॉट और फ्यूचर का स्प्रेड तो नहीं होता लेकिन यहां पर दो अलग-अलग एक्सपायरी वाले फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट, जो कि अलग-अलग दिनों पर खत्म हो रहे हैं, उनके बीच में स्प्रेड होता है और इसे कैलेन्डर स्प्रेड कहा जाता है।

कैलेन्डर स्प्रेड में आपको यह देखना होता है कि दो फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट के बीच में जो स्प्रेड है वह साधारण है या यहां पर मौका है। अगर बाकी सारी चीजें स्थिर हैं तो आमतौर पर लंबी दूरी के फ्यूचर (लॉन्ग डेटेड फ्यूचर / Long dated Future) कॉन्ट्रैक्ट हमेशा कम दूरी वाले (शॉर्ट टर्म डेटेड / Short term dated) फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट के मुकाबले प्रीमियम पर होते हैं। उदाहरण के लिए आमतौर पर फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट आमतौर पर जुलाई महीने के फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट के मुकाबले प्रीमियम पर बिकेगा। इसलिए इन दोनों के बीच में जो थोड़ा सा स्प्रेड होता है उसे साधारण माना जाता है लेकिन कभी-कभी ऐसी स्थिति पैदा हो जाती है जब इन दोनों के बीच का स्प्रेड असाधारण (ज्यादा ऊंचा या नीचा) होता है। ऐसे में ही स्प्रेड ट्रेड करने का मौका आता है।

आज USD INR का जुलाई फ्यूचर 67.3075 पर बिक रहा है और अगस्त का 67.6900 पर।

इन दोनों कॉन्ट्रैक्ट के बीच का अंतर ही स्प्रेड है –

$$67.6900 - 67.3075$$

$$= 0.3825$$

अब कल्पना कीजिए कि किसी वजह से आपको ऐसा लगता है कि 0.3825 का स्प्रेड काफी ऊंचा है और आम तौर पर इसे 0.2000 होना चाहिए ना कि 0.3825 पर। इसका मतलब है कि यहां पर आपको आर्बिट्राज का एक मौका दिखाई दे रहा है और आप कमा सकते हैं –

$$0.3825 - 0.2000$$

$$= 0.1825$$

इस स्प्रेड का फायदा उठाने के लिए आपको जुलाई के फ्यूचर को खरीदना होगा और साथ ही अगस्त के फ्यूचर को बेचना होगा।

जुलाई का फ्यूचर लॉन्ग करेंगे 67.3075 पर

अगस्त का फ्यूचर शॉर्ट करेंगे 67.6900 पर

जब आप ऐसा सौदा करते हैं जहां आप मौजूदा एक्सपायरी वाले फ्यूचर को लॉन्ग कर रहे हो और दूर की एक्सपायरी वाले कॉन्ट्रैक्ट को शॉर्ट कर रहे हो तो इसे **फ्यूचर बुल स्प्रेड (Future Bull Spread)** कहा जाता है इसी तरीके से **फ्यूचर बेयर स्प्रेड (Future Bear Spread)** तब होता है जब आप मौजूदा महीने की एक्सपायरी को शॉर्ट कर रहे हो और दूर के महीने की एक्सपायरी को लॉन्ग कर रहे हो।

तो आपने फ्यूचर बुल स्प्रेड बना लिया, अब आपको करना यह है कि अपने इस ट्रेड पर नजर रखनी है और जैसे ही यह स्प्रेड 0.2000 या उससे नीचे पहुंचे तो वही पर इस सौदे को क्लोज कर दें। आपको फायदा होगा जब इनमें से कोई एक स्थिति बनेगी-

- जब जुलाई (यानी ट्रेड का लॉन्ग हिस्सा) बढ़ेगा और अगस्त (यानी ट्रेड का शॉर्ट हिस्सा) गिरेगा
- जब लॉन्ग हिस्सा बढ़ेगा और शॉर्ट हिस्सा में कोई बदलाव नहीं होगा
- जब लॉन्ग हिस्सा बढ़ेगा और शॉर्ट हिस्सा भी बढ़ेगा लेकिन कम रफ़्तार से
- जब शॉर्ट हिस्सा लॉन्ग हिस्से के मुकाबले ज्यादा तेजी से गिरेगा
- जब लॉन्ग हिस्सा स्थिर रहेगा और शॉर्ट हिस्सा गिरेगा

क्या स्प्रेड आगे जा कर converge करेगा या आपस में मिलेगा? अगर हां तो यह कह मिलेगा? और यह क्यों मिलेगा? क्या उपर बताई गयी स्थितियों में से कोई स्थिति बनेगी? इन सारे सवालों का जवाब इस पर निर्भर करता है कि आप स्प्रेड को कितने अच्छे से समझते हैं, और स्प्रेड को अच्छे तरीके से समझने के लिए आपको इसकी बैक टेस्टिंग करनी होगी यानी इसे पीछे के डेटा से जांचना होगा। बैक टेस्टिंग पर हम बाद में कभी चर्चा करेंगे, अभी मैं आपको यह दिखाऊंगा कि अपने टर्मिनल से किसी भी स्प्रेड को खरीदना या बेचना कितना आसान होता है।

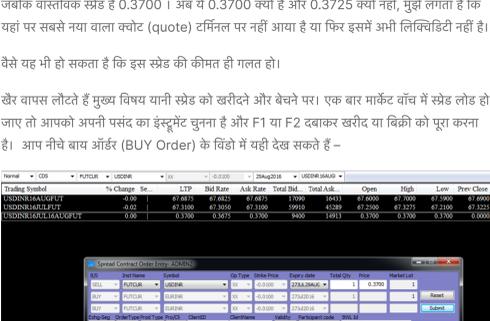
5.2 – स्प्रेड को पूरा करना

आगर आप स्प्रेड को सीधे बेच या खरीद सकें तो कैसा हो? ऊपर के उदाहरण में हमने देखा कि 0.3825 पर ज्यादा कीमत की वजह से एक स्प्रेड बन रहा था, इस स्प्रेड का फायदा उठाने के लिए आपको दो ऑर्डर देने पड़ेंगे जुलाई का फ्यूचर खरीदना होगा और अगस्त का फ्यूचर बेचना होगा।

इन दोनों ऑर्डर को एक साथ जल्दी-जल्दी करने के कुछ मुखिल्लों भी हैं, जब तक आप बेचने और खरीदने, दोनों के ऑर्डर डालेंगे तब तक कॉन्ट्रैक्ट की कीमत ऊपर या नीचे हो सकती है और यह स्प्रेड कम या पूरी तरह से खत्म हो सकता है।

इसलिए यह ज्यादा अच्छा होगा अगर आप सीधे स्प्रेड को ही खरीद सकें और दो अलग-अलग कॉन्ट्रैक्ट से आपको ना जूझना पड़े। अगर आप जेरोशा के कस्टमर हैं तो आपको नेस्ट ट्रेडर (Nest Trader) का उपयोग करने को मिलता है जिससे आप सीधे स्प्रेड में सौदा कर सकते हैं। आगे जाते हुए यह आपको पाई (Pi) और काईट (Kite) में भी मिलेगा।

नीचे के कुछ चित्रों में आपको दिखाया गया है कि आप स्प्रेड में सीधे कैसे कर सकते हैं।



लाल रंग से हाईलाइट किए गए हिस्से को देखिए। जैसा कि आपको समझ में आ ही रहा होगा कि यह मार्केटवॉच में से लिया गया चित्र है। बाएं तरफ से शुरू करें तो –

- सबसे पहले हमें ड्रॉप डाउन से स्प्रेड को चुनना होगा जो कि बताएगा कि हम स्प्रेड में ट्रेड करना चाहते हैं
- स्प्रेड को चुनने के बाद हम CDS (सीडीएस) चुनते हैं जो यह बताता है कि ये करंसी डेरिवेटिव का सेगमेंट है
- FUTCUR बताता है कि इस CDS स्प्रेड में हमें फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट को खरीदना या बेचना है
- USD INR बताता है कि हम रुपए और डॉलर के कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेड करना चाहते हैं
- पूरा dropdown-menu भी यहां दिख रहा है जिसमें सभी उपलब्ध स्प्रेड दिखाए गए हैं लेकिन हमें सिर्फ जुलाई और अगस्त के स्प्रेड में ही रूचि है तो हम उसी को चुनेंगे।

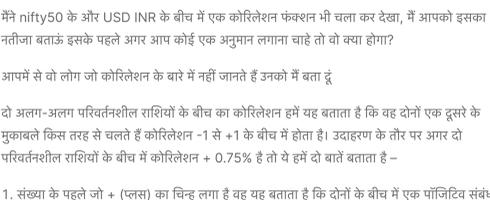
जब एक बार हम यह मार्केट वॉच में सब कुछ चुन लेते हैं तो हमें इसको सबमिट (Submit) करना होता है जिससे कि स्प्रेड लोड (Load) हो जाए, इसके बाद यह ऐसा दिखता है –



मैंने स्प्रेड के अंतिम ट्रेड कीमत यानी लास्ट ट्रेड प्राइस (LTP) को हाईलाइट किया है, जैसा कि आप देख सकते हैं यह स्प्रेड इंस्ट्रूमेंट सिर्फ जुलाई और अगस्त के कॉन्ट्रैक्ट के बीच के स्प्रेड को दिखा रहा है।

लेकिन हमारे हिसाब से तो स्प्रेड को 0.3825 होना चाहिए था ना कि 0.3700 पर। तो फिर कीमत में ये अंतर क्यों है

मैं इस अंतर को अपनी समझ के हिसाब से आपको समझाता हूँ, लेकिन हो सकता है कि मैं गलत हूँ, लेकिन फिर भी मैं कोशिश करता हूँ। साथ ही, मैं अपने मुख्य विषय (स्प्रेड में ट्रेड कैसे करें) से हट रहा हूँ लेकिन उसे भूलना नहीं है, अभी नीचे के चित्र पर नजर डालिए



इस मार्केट वॉच में जुलाई, अगस्त और जुलाई- अगस्त के स्प्रेड कॉन्ट्रैक्ट को दिखाया गया है।

कुछ देर के लिए स्प्रेड कॉन्ट्रैक्ट को भूल जाइए और यह मान लीजिए कि आप फ्यूचर बुल स्प्रेड (जुलाई को खरीदना और अगस्त को बेचना) कॉन्ट्रैक्ट में सौदा करना चाहते हैं इसका मतलब है कि

जुलाई कॉन्ट्रैक्ट को 67.3100 के आसक रेट पर खरीदें

अगस्त कॉन्ट्रैक्ट को 67.6775 के बिड रेट पर बेचें

$$\text{स्प्रेड} = 67.6775 - 67.3100 = 0.3675$$

अब अगर आप को फ्यूचर बेयर स्प्रेड बनाना है तो –

अगस्त कॉन्ट्रैक्ट को 67.6850 के आस्क रेट पर खरीदें

जुलाई कॉन्ट्रैक्ट को 67.3075 के बिड रेट पर बेचें

$$\text{स्प्रेड} = 67.6850 - 67.3075 = 0.3775$$

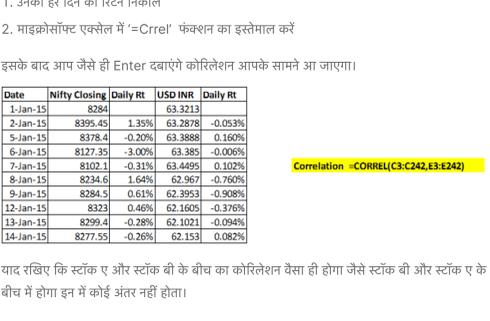
तो जैसा कि आप देख सकते हैं यहां पर एक नहीं बल्कि दो स्प्रेड बन सकते हैं, फ्यूचर बुल / बेयर स्प्रेड दोनों। अब आपको यह तय करना है कि आप फ्यूचर बुल स्प्रेड चाहते हैं या फिर फ्यूचर बेयर स्प्रेड।

अब सवाल यह है कि मार्केट वॉच में आपके लिए स्प्रेड की कौन सी मतलब दिखाई जाए, फ्यूचर बुल स्प्रेड की या फिर फ्यूचर बेयर स्प्रेड की।

मेरा अनुमान है कि इस सौदे में दोनों स्प्रेड के औसत को दिखाया गया है। इस उदाहरण में औसत 0.3725 है जबकि वास्तविक स्प्रेड है 0.3700। अब ये 0.3700 क्यों है और 0.3725 क्यों नहीं, मुझे लगता है कि यहां पर सबसे नया वाला क्वोट (quote) टर्मिनल पर नहीं आया है या फिर इसमें अभी लिक्विडिटी नहीं है।

वैसे यह भी हो सकता है कि इस स्प्रेड की कीमत ही गलत हो।

खैर वापस लौटते हैं मुख्य विषय यानी स्प्रेड को खरीदने और बेचने पर। एक बार मार्केट वॉच में स्प्रेड लोड हो जाए तो आपको अपनी पसंद का इंस्ट्रूमेंट चुनना है और F1 या F2 दबाकर खरीद या बिक्री को पूरा करना है। आप नीचे बाय ऑर्डर (BUY Order) के विंडो में यही देख सकते हैं –

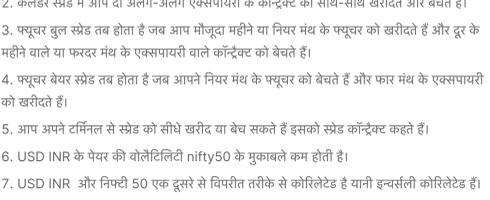


इस विंडो में सारी जानकारियां पहले से भरी हुई हैं बस आपको अपनी को क्वॉटिटी यानी मात्रा अपने हिसाब से डालनी है और अपने ऑर्डर को सबमिट (submit) कर देना है।

5.3 – USD INR के आंकड़े

मुझे लगता है कि यहां USD INR के पेयर के बारे में कुछ आंकड़ों पर नजर डालना एक अच्छा अच्छा काम हो सकता है। इसलिए मैंने USD INR के स्पॉट डाटा को RBI की साइट से डाउनलोड किया है।

सबसे पहले USD INR के लगभग 8 साल के लॉन्ग टर्म पर नजर डालते हैं (जुलाई 2008 से जुलाई 2016)।



साफ है कि पूरा साल भारतीय रुपए के मुकाबले पिछले 8 सालों में मजबूत हुआ है। यह तो होना ही था, क्योंकि पिछले कुछ सालों में हमारी अर्थव्यवस्था एक जगह पर रुकी हुई है। अब एक नजर डालते हैं USD INR के डेली (हर दिन के) रिटर्न पर

इस ग्राफ में कुछ महत्वपूर्ण चीजें देखने को मिलती हैं, USD INR का हर दिन का औसत रिटर्न फंक्शन-करीब 0.025% है। इसमें 1 दिन में अधिकतम रिटर्न + 4.01% दिया है, जबकि इसने न्यूनतम रिटर्न – 2.962% का दिया है। जब आप इसकी तुलना nifty50 के अधिकतम और न्यूनतम रिटर्न से करेंगे तो आपको दिखेगा कि निफ्टी ने अधिकतम रिटर्न + 3.81% के और न्यूनतम रिटर्न – 5.92% का दिया है। इससे आपको समझ में आएगा कि USD INR के पेयर में उठाए गए रिटर्न के मुकाबले कम होती है। आप जब वोलैटिलिटी के आंकड़ों पर नजर डालेंगे तो यह बात और साफ हो जाएगी –

- डेली स्टैंडर्ड डेविएशन है -0.567% (पिछले 8 साल का)
- 2015 का डेली स्टैंडर्ड डेविएशन है -0.311%
- एनुअलाइज्ड स्टैंडर्ड डेविएशन 2015 के लिए है -4.94%

यह सारे आंकड़े nifty50 के डेली वोलैटिलिटी और एनुअलाइज्ड वोलैटिलिटी के आंकड़ों के मुकाबले, जो कि 0.82% और 15.71% है, उससे कम हैं।

मैंने nifty50 के और USD INR के बीच में एक कोरिलेशन फंक्शन भी चला कर देखा, मैं आपको इसका नतीजा बताऊं इसके पहले अगर आप कोई एक अनुमान लगाना चाहे तो तो क्या होगा?

आपमें से वो लोग जो कोरिलेशन के बारे में नहीं जानते हैं उनको मैं बता दूँ

दो अलग-अलग परिवर्तनशील राशियों के बीच का कोरिलेशन हमें यह बताता है कि वह उदाहरण है कि वह दोनों के मुकाबले किस तरह से चलें हैं कोरिलेशन -1 से +1 के बीच में होता है। उदाहरण के तौर पर अगर दो परिवर्तनशील राशियों के बीच में कोरिलेशन + 0.75 है तो ये हमें दो बातें बताता है –

- संख्या के पहले जो + (प्लस) का चिन्ह लगा है वह यह बताता है कि दोनों के बीच में एक पॉजिटिव संबंध है मतलब दोनों एक ही दिशा में चलते हैं
- इसके बाद आने वाली संख्या हमें यह बताती है कि इस चाल की मजबूती कितनी है आमतौर पर यह आंकड़ा +1 (या -1) के जितना करीब होता है उसका यह मतलब है कि दोनों राशियों के साथ साथ चलने की संभावना है
- आगर को रिलेशन की संख्या 0 है तो इसका मतलब है कि दोनों राशियों में कोई संबंध नहीं है

तो ऊपर की इस व्याख्या के बाद + 0.75 हमें बताता है कि दोनों राशियां एक ही दिशा में चलते हैं और दोनों काफी हद तक एक साथ चलते हैं। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि कोरिलेशन हमें यह नहीं बताता कि यह चाल कितनी होगी ये बस यह बताता है कि चाल की दिशा क्या होगी। उदाहरण के तौर पर अगर स्टॉक ए 3% चलता है और स्टॉक बी के बीच का कोरिलेशन + 0.75 है तो इसका मतलब यह नहीं है कि स्टॉक बी भी 3% चलेगा यह कोरिलेशन सिर्फ यह बताता है कि स्टॉक बी भी स्टॉक ए की तरह ऊपर की तरफ ही चलेगा

लेकिन एक बात और है जो आपको समझाना चाहिए। मान लीजिए स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों राशियां अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे (- चिन्ह यही बताता है)। मान लीजिए स्टॉक ए + 2.5% चलता है तो इस कोरिलेशन की वजह से स्टॉक बी नीचे की ओर जाएगा। लेकिन ये कितना नीचे जाएगा यह नहीं बता सकते।

क्योंकि हम कोरिलेशन की बात कर रहे हैं इसलिए मान लीजिए कि स्टॉक ए और स्टॉक बी के बीच में कोरिलेशन 0.75 का है, स्टॉक ए का और स्टॉक बी का औसत डेली रिटर्न 0.9% और 1.2% का है तो ये कहा जा सकता है कि अगर किसी दिन स्टॉक ए अपने दैनिक औसत यानी 0.9% के रिटर्न से ज्यादा चलता है तो स्टॉक बी भी अपने दैनिक औसत रिटर्न यानी 1.2% से ज्यादा चल सकता है।

इसी तरीके से, -0.75 का को रिलेशन यह बताता है कि यह दोनों

EUR, GBP और JPY

6.1 – कर्सी के दूसरे पेयर

पिछले कुछ अध्यायों में हमने EUR INR के बारे में काफी चर्चा की है, अब हम कर्सी के कुछ दूसरे पेयर को देखेंगे। जैसे EUR INR (यूरो रुपया), GBP INR (पाउंड रुपया), JPY INR (येन रुपया)। दूसरे कर्सी पेयर भी करीब-करीब वैसे ही काम करते हैं जैसे USD INR काम करता है। इसको आप इस तरीके से भी समझ सकते हैं कि अगर आपको यह पता है कि डॉलर के लिए USD INR का रेट है तो आप यह समझ सकते हैं कि निफ्टी बैंक के कॉन्ट्रैक्ट किस तरीके से काम करते हैं।

इस अध्याय में हम पहले जल्दी से हम इन कर्सी पेयर के कॉन्ट्रैक्ट के बारे में समझ लेंगे। और इस अध्याय के दूसरे हिस्से में हम कुछ डेविंग टेक्निक के बारे में बात करेंगे जिसका ट्रेडिंग टेबल पनालिस्टिस से जुड़ी तकनीक के बारे में। इसके बाद, कर्सी से जुड़ा हुआ हमारा यह अध्याय खत्म हो जाएगा और उसके बाद इस मॉड्यूल में हम क्मोडिटी पर नजर डालेंगे।

तो आइए शुरू करते हैं।



EUR INR

दुनिया में जिस कर्सी पेयर में सबसे ज्यादा कारोबार होता है वह है EUR USD लेकिन हमारे देश में यह कॉन्ट्रैक्ट उपलब्ध नहीं है हालांकि RBI ने एक्सचेंज को इस पेयर को भी लिस्ट करने के लिए हरी झंडी दे दी है और हो सकता है कि बहुत जल्दी यह पेयर EUR USD भी हमारे लिए उपलब्ध हो। साथ ही, GBP USD, JPY USD में भी हमें ट्रेड करने को मिल सकता है। लेकिन अभी के लिए हमारे पास ट्रेड करने के लिए EUR INR मौजूद है।

जैसा कि हमें पता है कि यूरो (EUR) यूरोपियन यूनियन की कर्सी है। बाकी किसी भी कर्सी से अलग, यूरो अकेली ऐसी कर्सी है जो किसी एक देश की अर्थव्यवस्था से नहीं बल्कि यूरोप के कई देशों की अर्थव्यवस्था से जुड़ी कर्सी है।

EUR INR का कॉन्ट्रैक्ट करीब-करीब वैसे ही है जैसे USD INR का कॉन्ट्रैक्ट होता है। इससे जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ पर नजर डालते हैं।

विवरण	EUR INR	टिप्पणी
लॉट साइज	€ 1,000	इन्विटी डेरिवेटिव में लॉट साइज सेपर्स की संख्या बताता है लेकिन यहाँ ये यूरो में एक रकम होती है।
अंडरलाइंग	1 EUR की भारतीय रूप में कीमत	
टिक साइज	0.25 यूरो या रूपयों में कर्हें तो INR	
देविंग का समय	सोमवार से शुक्रवार 9:00 AM से 5:00 PM	
एक्सपायरी साइकिल	12 महीने तक का कॉन्ट्रैक्ट	ध्यान दें कि इन्विटी डेरिवेटिव में 3 महीने तक की एक्सपायरी होती है।
देविंग का अंतिम दिन	महीने के अंतिम कारोबारी दिन से दो दिन पहले दोपहर 12:30 PM तक,	इन्विटी डेरिवेटिव में एक्सपायरी के दिन 3:30 PM तक कर सकते हैं।
सेटलमेंट का अंतिम दिन	महीने का अंतिम कारोबारी दिन	
मार्जिन	SPAN + Exposure	आमतौर पर SAPN करीब 1.5%, होता है, इसलिए कुल मार्जिन करीब 2.5% होती है।
सेटलमेंट कीमत	अंतिम सेटलमेंट के दिन का RBI रफ़र्स रेट	स्पाट की क्लोजिंग कीमत

तो जैसा आप देख सकते हैं कि यह लगभग USD INR जैसा ही है। अंतर सिर्फ यह है कि EUR INR का लॉट साइज €1000 (यूरो) का है USD INR की तरह \$1000 का नहीं।

आइए देखते हैं कि इसकी वजह से मार्जिन पर क्या असर पड़ेगा। EUR INR के पब्लिक का चित्र आप नीचे देख सकते हैं।

Quote

As on Aug 04, 2016 13:52:57 IST | Currency Watch

Euro-Indian Rupee - EURINR

Index Derivatives | Stock Derivatives | Currency Derivatives

Instrument Type: Currency Fu. Symbol: EURINR Expiry Date: 29AUG2016 Option Type: Select... Strike Price: Select... Get Data

74.8950	Prev. Close 75.3875	Open 75.5670	High 75.5725	Low 74.7975
---------	---------------------	--------------	--------------	-------------

Fundamentals		Historical Data	
RBI Reference Rates	Print 74.9893	Order Book	Intra-day
No. of Trades	5,857	Buy Qty.	Buy Price
Traded Volume (contracts)	33,558	5	74.8875
Traded Value * (lacs)	25,123.28	42	74.8875
VWAP	74.8987	29	74.8850
Open Interest	69,519	12	74.8825
Change in Open Interest	-1,047	20	74.8800
% Change in Open Interest	-1.48	9,028	Total Quantity
			4,822

जैसा कि आप देख सकते हैं कि इस कॉन्ट्रैक्ट का लार्स्ट ट्रेड प्राइस (LTP/Last Traded Price) 74.8950 है। इसके सहारे हम कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू निकाल सकते हैं।

कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू = लॉट साइज * कॉन्ट्रैक्ट कीमत

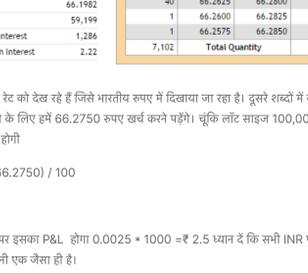
$$= 1000 * 74.8950$$

$$= 74,895.0$$

अगर हम यह मान लें कि मार्जिन करीब 2.5% है तो यह मार्जिन करीब ₹1870 होना चाहिए। आप चाहें तो ज़ेरोधा के मार्जिन कैल्कुलेटर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं जिससे आपको सही मार्जिन पता चल जाएगा।



तो इसकी मार्जिन USD INR पेयर से कुछ ज्यादा है। लेकिन इन्विटी के डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट में लगने वाली मार्जिन के मुकाबले यह तब भी काफी कम है।



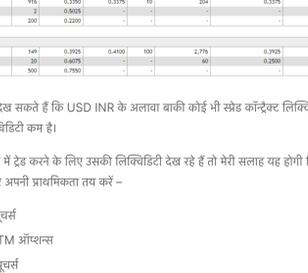
GBP INR

हमारे देश में USD INR के कॉन्ट्रैक्ट के बाद जिस कॉन्ट्रैक्ट में सबसे ज्यादा कारोबार होता है वह शायद GBP INR का कॉन्ट्रैक्ट है। इस कॉन्ट्रैक्ट में अंतरलाइन चीजें नहीं हैं जैसे कि USD INR के कॉन्ट्रैक्ट में होती हैं और यहाँ पर भी सिर्फ लॉट साइज और अंडरलाइंग का फर्क ही है। अगर आप GBP INR का एक्सचेंज रेट है और लॉट साइज 1000 पाउंड का है। कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू करीब ₹89,345 का होगा, क्योंकि 5 अगस्त 2016 को पब्लिक पर ट्रेड हो रहा था।

तो जैसा आप नीचे देख सकते हैं इसके लिए मार्जिन भी थोड़ा ज्यादा है।

Exchange	Product	Span
CDS	Futures	Rs: 3,472
Symbol	GBPINR Aug 2016	Rs: 447
Net quantity	1	Rs: 3,919

एक मजेदार बात जो आपको जानना चाहिए वो ये है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में GBP USD पेयर को केबल (cable) भी कहा जाता है। अगर आप किसी कर्सी ट्रेडर को केबल शॉर्ट करने के बारे में कहते चुने तो समझ जाइए कि वह GBP USD को शॉर्ट कर रहा है।



JPY INR

JPY INR का कॉन्ट्रैक्ट दूसरी किसी भी कर्सी कॉन्ट्रैक्ट के मुकाबले अलग है। इसमें लॉट साइज 1000 यूनित का नहीं होता बल्कि 100000 यूनित का होता है। यहाँ पर अंडरलाइंग 100 जापानी येन का एक्सचेंज रेट होती है।

तो जब हम इस चित्र को देखते हैं

Quote

As on Aug 04, 2016 16:14:31 IST | Currency Watch

Japan YEN-Indian Rupee - JPYINR

Index Derivatives | Stock Derivatives | Currency Derivatives

Instrument Type: Currency Fu. Symbol: JPYINR Expiry Date: 29AUG2016 Option Type: Select... Strike Price: Select... Get Data

66.2750	Prev. Close 66.4225	Open 66.3800	High 66.3800	Low 66.0600
---------	---------------------	--------------	--------------	-------------

Fundamentals		Historical Data	
RBI Reference Rates	Print 65.9500	Order Book	Intra-day
No. of Trades	7,451	Buy Qty.	Buy Price
Traded Volume (contracts)	40,634	25	66.2675
Traded Value * (lacs)	26,898.99	17	66.2650
VWAP	66.1982	40	66.2625
Open Interest	59,199	1	66.2600
Change in Open Interest	1,286	1	66.2575
% Change in Open Interest	2.22	7,102	Total Quantity
			4,275

तो हम 100 येन के रेट को देख रहे हैं जिसे भारतीय रूप में दिखाया जा रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो, 100 जापानी येन खरीदने के लिए हमें 66.2750 रूप खर्च करने पड़ेगे। चूंकि लॉट साइज 100,000 का है तो

$$= (100,000 * 66.2750) / 100$$

$$= 66275$$

एक पिप की घाल पर इसका P&L होगा 0.0025 * 1000 = ₹ 2.5 ध्यान दें कि सभी INR पेयर के लिए ये P&L यही है यानी एक जैसा ही है।

JPY INR के लिए मार्जिन होगा 2808 रूपय जो कि करीब 4.2% बनता है।

Exchange	Product	Span
CDS	Futures	Rs: 2,344
Symbol	JPYINR Aug 2016	Rs: 464
Net quantity	1	Rs: 2,808

तो इस तरह से JPY INR कॉन्ट्रैक्ट का मार्जिन कर्सी सेगमेंट में सबसे ज्यादा होता है और हमें हिसाब से ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह सबसे ज्यादा वोलेटाइल कॉन्ट्रैक्ट है (क्योंकि इसमें लिक्विडिटी काफी कम होती है)। आप चाहें तो एक्सेल में JPY INR की वोलेटिलिटी पता कर सकते हैं।

इन सभी कर्सी पेयर के स्प्रेड कॉन्ट्रैक्ट हर एक्सचेंज के लिए एक्सचेंज पर उपलब्ध हैं। आप नीचे NSE की वेबसाइट से लिया गए इस चित्र में इन्हें देख सकते हैं।

RBI Reference Rate	As on Aug 04, 13:30:00	Option Chain	Daily Reports
1 ₹ = 66.9447	1 ₹ = 69.0499	1 ₹ = 74.9545	100 Y = 65.9500

Price Watch	Line Chart	Spread Contracts	Most Active	Trade History	Information	
USDINR						
SPACINRSP16	20	0.3200	0.8400	253	502	0.3400
SPACINRSP15	100	0.6450	0.8400	700	1000	-
SPACINRSP14	200	0.6750	-	-	-	-
More contracts						
GBPINR						
SPACINRSP16	110	0.4500	0.4575	129	464	0.4575
SPACINRSP15	15	0.9300	-	-	-	-
SPACINRSP14	300	0.2200	-	-	-	-
More contracts						
JPYINR						
SPACINRSP16	916	0.3200	0.3375	50	224	0.3375
SPACINRSP15	2	0.9550	-	-	-	-
SPACINRSP14	100	0.2200	-	-	-	-
More contracts						
EURINR						
SPACINRSP16	149	0.3925	0.4100	800	2,776	0.3925
SPACINRSP15	20	0.6075	-	-	60	0.5900
SPACINRSP14	900	0.7900	-	-	-	-
More contracts						

लेकिन जैसा आप देख सकते हैं कि USD INR के अलावा बाकी कोई भी स्प्रेड कॉन्ट्रैक्ट लिक्विड नहीं है मतलब उसमें लिक्विडिटी कम है।

अगर आप कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेड करने के लिए उसकी लिक्विडिटी देख रहे हैं तो मेरी सलाह यह होगी कि आप इस लिस्ट के आधार पर अपनी प्राथमिकता तय करें –

1. USD INR फ्यूचर्स
2. USD INR ATM ऑप्शन्स
3. GBP INR फ्यूचर्स
4. EUR INR फ्यूचर्स
5. JPY INR फ्यूचर्स

अब मुझे उम्मीद है कि आपको कर्सी ट्रेडिंग से जुड़ी हुई ज्यादातर जानकारी मने दे दी है, अब हम ट्रेडिंग से जुड़े हुए कुछ तरीकों पर चर्चा करेंगे।

6.2 – सीजनैलिटी का टेस्ट (याद करेंसी ट्रेड का मौसम होता है)

कर्सी के बाजार में बहुत बार इस बात पर चर्चा होती है कि इस कारोबार में सीजन आते रहते हैं यानी तय वक्त पर ये बाजार एक तय तरीके से काम करता है। इसके लिए हम 'Chi Square' टेस्ट का इस्तेमाल करते हैं यानी क्या सीजनैलिटी होती है तो इसका सीधा जवाब है कि ऐसा कोई सीजन नहीं होता। इसके बाद, आप चाहें तो आप सीधे अध्याय के एक हफ्ते पहले ले सकते हैं कि USD INR टिस्वर में नीचे जाता है या USD INR हमेशा एक्सपायरी के एक हफ्ते पहले उतर जाता है। बहुत सारे लोग यह बातें ही आधार से उधार पर करते हैं और ये जानने की कोशिश भी नहीं करते हैं कि सीजन के बारे में यह कथन सही है या नहीं। इसीलिए मुझे लगा कि हमें कर्सी के सीजनैलिटी (Seasonality) के बारे में थोड़ी बात करनी चाहिए और इसको जांच भी लेते हैं। इसे जांचने के लिए हम हमने USD INR के स्पाट डेटा को लिया है।

** चेतावनी **

अब जो चर्चा हम करेंगे वह तकनीकी चर्चा होगी, यह शायद Varsity के आम पाठक के लिए नहीं है। अगर आप इस बात का सीधा जवाब जानना चाहते हैं कि क्या कर्सी में ट्रेडिंग के अलावा अलग मौसम होते हैं यानी क्या सीजनैलिटी होती है तो इसका सीधा जवाब है कि ऐसा कोई सीजन नहीं होता। इसके बाद, आप चाहें तो आप सीधे अध्याय के एक हफ्ते पहले ले सकते हैं कि USD INR टिस्वर में नीचे जाता है या USD INR हमेशा एक्सपायरी के एक हफ्ते पहले उतर जाता है। बहुत सारे लोग यह बातें ही आधार से उधार पर करते हैं और ये जानने की कोशिश भी नहीं करते हैं कि सीजन के बारे में यह कथन सही है या नहीं। इसीलिए मुझे लगा कि हमें कर्सी के सीजनैलिटी (Seasonality) के बारे में थोड़ी बात करनी चाहिए और इसको जांच भी लेते हैं। इसे जांचने के लिए हम हमने USD INR के स्पाट डेटा को लिया है।

इस विषय को पालकों तक पहुंचाने के लिए मुझे अपने अच्छे दोस्त प्रकाश को धन्यवाद भी देना है। इस हिस्से से जुड़े किसी भी सवाल के लिए आप उसे prakash.lekhal@gmail.com पर लिख सकते हैं।

किसी भी टाइम सीरीज की सीजनैलिटी को पता करने के लिए होल्ट विंटर टेस्ट (Holt Winters test) का इस्तेमाल किया जाता है जो कि एक सांख्यिकी टेस्ट है। आमतौर पर Holt Winters मेथड यानी प्रणाली में 3 हिस्से होते हैं –

- o लेवल
- o ट्रेंड
- o सीजनैलिटी

लेवल – इस सूचकांक में USD INR में हुए औसत बदलाव को YoY यानी वर्ष दर वर्ष तौर पर देखा जाता है।

ट्रेंड – इस सूचकांक में USD INR में महीने दर महीने हुए औसत बदलाव को नापा जाता है।

सीजनैलिटी – यह सूचकांक कीमत पर सीजन की बहाव से हुए बदलाव को नापता है, उदाहरण के तौर पर, USD INR में हमेशा जनवरी में तेजी आती है, हमेशा अप्रैल में गिरावट आती है, जैसी बातें। इन तीनों हिस्सों को ले कर दो स्थितियां बन सकती हैं –

- o एडिटिव (Additive) यानी जोड़ वाला
- o मल्टीप्लिकेटिव (multiplicative) यानी गुणा वाला

लेकिन मुझे लगता है कि ये चर्चा यहाँ जरूरी नहीं है।

सीजनैलिटी के लिए होल्ट विंटर टेस्ट (Holt-Winters test for seasonality) :

होल्ट विंटर टेस्ट में किसी भी टाइम सीरीज की सीजनैलिटी का पता लगाने के लिए अनुमान का एक मॉडल तैयार किया जाता है (मान लीजिए मॉडल 1) और फिर उसके मॉडल को देखा जाता है। मॉडल 1 में सीजनैलिटी का हिस्सा नहीं होता है। इसके बाद, एक और मॉडल बनाया जाता है जिसमें सीजनैलिटी को रखा जाता है और फिर इस मॉडल की गलतियों यानी ERROR को देखा जाता है।

हम दोनों मॉडल की गलतियों (ERROR) की तुलना करते हैं और फिर देखते हैं कि क्या हमें मॉडल 2 से मॉडल 1 के मुकाबले में बेहतर अनुमान मिल रहा है। इसके लिए हम 'Chi Square' टेस्ट का इस्तेमाल करते हैं तब पता चलता है कि किसमें सही नतीजे मिल रहे हैं। अगर मॉडल 2 में मॉडल 1 के मुकाबले बेहतर अनुमान मिलता है तो ये माना जाता है कि अंशकों में कुछ सीजनैलिटी का असर है। लेकिन अगर दोनों मॉडल में एक जैसे नतीजे मिलते हैं या मॉडल 1 में बेहतर नतीजे मिल रहे हों तो मान लिया जाता है कि कोई सीजनैलिटी नहीं है।

USD INR में सीजनैलिटी का नतीजा

साप्ताहिक सीजनैलिटी के लिए जांच

मॉडल 1 (सीजनैलिटी के हिस्से के बगैर) – सबसे अच्छा मॉडल वो है (M,N,N) जिसका को एफिशिएंट 0.9999 है।

यह मॉडल बताता है कि साप्ताहिक डेटा में सिर्फ लेवल का हिस्सा होता है और ट्रेंड का हिस्सा नहीं होता। यहाँ मॉडल का कोएफिशिएंट 0.9999 है मतलब अगले हफ्ते की कीमत और इस हफ्ते की कीमत से 0.9999 गुना होगी।

जो पाठक रैंडम वॉक थ्योरी (Random Walk theory) के बारे में जानते हैं, वह इस को अच्छे से समझ सकते हैं। यह मॉडल हमें बता रहा है कि साप्ताहिक तौर पर USD INR की कीमत रैंडम वॉक के आधार पर चलती है।

मॉडल 2 (सीजनैलिटी के हिस्से के साथ) – सबसे अच्छा मॉडल (M,N,M) यह है जिसका कोएफिशिएंट 0.7 और 0.0786 है।

यह मॉडल बताता है कि इस साप्ताहिक डेटा में लेवल भी है और सीजनैलिटी भी है। यह मॉडल बताता है कि अगले हफ्ते की कीमत इस हफ्ते की कीमत का 0.7 गुना होगी और बाकी बचा हुआ हिस्सा सीजनैलिटी से आएगा।

निष्कर्ष – 'Chi Square' टेस्ट बताता है कि यहाँ 100% संभावना है कि मॉडल 2 और मॉडल 1 एक जैसे ही परिणाम दें, इसका मतलब यह हुआ कि USD INR में सीजनैलिटी का मॉडल लगाने से परिणाम बेहतर नहीं हो रहे हैं।

ऐसा तभी होता है जबकि डेटा में कोई सीजनैलिटी ना हो। क्योंकि यह डेटा साप्ताहिक एनालिसिस के लिए निकाला गया है इसलिए माना जा सकता है कि वीकली यानी साप्ताहिक तौर पर डेटा में कोई सीजनैलिटी नहीं होती।

मंथली यानी मासिक सीजनैलिटी –

मॉडल 1 – सबसे बढ़िया मॉडल वो है (A,N,N) जिसका कोएफिशिएंट 0.9999 है।

वीकली डेटा की तरह, मंथली डेटा भी यही बताता है कि यह एक रैंडम वॉक है।

मॉडल 2 – इसमें सबसे बढ़िया यह मॉडल (A,N,A) है जिसका कोएफिशिएंट 0.9999 और 0.0001 है।

यह मॉडल दर्शाता है कि अगले माह की क्लोजिंग कीमत करीब करीब उसी होगी जितनी इस महीने की क्लोजिंग कीमत है, और इसमें थोड़ा सा सीजनैलिटी का असर दिख रहा है।

निष्कर्ष – 'Chi Square' टेस्ट बताता है कि करीब 20% संभावना यह है कि मॉडल 2 के परिणाम मॉडल 1 से ज्यादा सही हों। सांख्यिकी आधार पर देखें तो ऐसे बेहतर नतीजे देखने से काम करती है। उसको एक टाइम कि, आमतौर पर सांख्यिकी में यह माना जाता है कि मॉडल 2 के नतीजे को मॉडल 1 से बेहतर मानने के लिए 95% संभावना होनी चाहिए, तब ये कहा जा सकता है कि इसमें सीजनैलिटी का असर है। इसका मतलब है कि USD INR में मंथली स्तर पर भी कोई सीजनैलिटी नहीं होती।

इस जांच के लिए RBI की वेबसाइट से USD INR का पिछले 8 साल का डेटा लिया गया है।

तो अब अगर आप किसी को यह कहता चुनें कि USD INR हमेशा क्रिसमस के पहले गिर जाता है तो आप जानते हैं कि उसकी बातों में कोई तथ्य नहीं है।

6.3 – क्लासिक टेक्निकल एनालिसिस

किसी कंपनी के बारे में फंडामेंटल एनालिसिस करने पर हम क्या करते हैं, मान लीजिए हिंदुस्तान लीवर के लिए, हम पहले उसके बिजनेस के बारे में जानते हैं, फाइनेंशियल स्टेटमेंट देखते हैं, कॉर्पोरेट गवर्नेंस देखते हैं और कौन सी कंपनी उसका फुलबल है उनको देखते हैं, फिर उसके आधार पर एक फाइनेंशियल मॉडल बनाते हैं और तब यह तय करते हैं कि यह स्टॉक निवेश करने लायक है या नहीं। तो फंडामेंटल एनालिसिस सीधा सादा रास्ता होता है। लेकिन जब किसी निवेश करने लायक है या नहीं। USA की अर्थव्यवस्था पर क्या असर होगा, भारत की अर्थव्यवस्था के क्या हाल हैं, उसमें कौन सी चीजें हो रही हैं, घरेलू स्तर पर क्या-क्या हो रहा है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कौन सी चीजें हैं जो भारत पर असर डाल सकती हैं, आपको इन सब को समझना होगा और उन सब के असर को भी समझना होगा, उसके बाद ही कोई विचार आप बना सकते हैं।

तो सब बात तो यह है कि यह आसान काम नहीं है और बहुत सारे लोग इसे नहीं कर सकते। आप अगर ट्रेडर हैं तो आपको पास एक अर्थशास्त्री का दिमाग चाहिए तभी आप फंडामेंटल एनालिसिस ठीक से करके कर्सी पेयर में ट्रेड कर पाएंगे। शायद यही वजह है कि कर्सी के बाजार में ज्यादातर लोग टेक्निकल एनालिसिस को ज्यादा पसंद करते हैं। शायद आपको पता हो टेक्निकल एनालिसिस में एक कीमत का अनुमान लगाया जाता है जो कि स्क्रीन पर दिख रहे कीमत के आधार पर और बाजार में जितनी भी तरह की जानकारी मौजूद है, चाहे वह फंडामेंटल एनालिसिस ही क्यों ना हो, सब को जोड़ते हुए एक कीमत का अनुमान लगाया जाता है। इस अनुमान के आधार पर आप चार्ट की एनालिसिस करते हैं और एक राय बनाते हैं।

कर्सी और क

सोना (भाग 1)

7.1 – शुरुआत

जैसा कि आप जानते हैं कि भारत में दो क्मोडिटी एक्सचेंज हैं- मल्टी क्मोडिटी एक्सचेंज (MCX) और नेशनल क्मोडिटी एंड डेरिवेटिव एक्सचेंज (NCDEX)। मेटल और एनर्जी से जुड़ी क्मोडिटी के लिए MCX को ज्यादा पसंद किया जाता है जबकि एग्री क्मोडिटी के लिए NCDEX ज्यादा लोकप्रिय है। लेकिन पिछले कुछ समय में, MCX पर एग्री क्मोडिटी का कारोबार भी बढ़ रहा है। मैं अगले कुछ अध्यायों उन क्मोडिटी के बारे में बात करूंगा जो एक्सचेंज पर ट्रेड होती हैं और कोशिश करूंगा कि आप क्मोडिटी कॉन्ट्रैक्ट के बारे में कुछ जान पाएं।

हम उन सारी क्मोडिटी पर चर्चा करेंगे जो क्मोडिटी एक्सचेंज पर ट्रेड होती हैं। हमारी कोशिश है कि हम ये जान सकें कि क्मोडिटी कॉन्ट्रैक्ट कैसे काम करते हैं, किन क्मोडिटी में आपको ट्रेड करना चाहिए और कौन सी ऐसी चीजें हैं जो कि क्मोडिटी पर असर डालती हैं। मैं क्मोडिटी के उस हिस्से पर चर्चा नहीं करूंगा जहां क्मोडिटी मार्केट के बारे में बताया जाता है, जहां पर उनका इतिहास, फॉरवर्ड मार्केट, अमेरिकी किसान और शिकामो मॉकैटाइल एक्सचेंज आदि के बारे में बताया जाता है। इन सब के बारे में आपको हर उस जगह आसानी से जानकारी मिल जाएगी जहां क्मोडिटी मार्केट के बारे में कुछ भी बताया जा रहा हो। मैं सीधे क्मोडिटी कॉन्ट्रैक्ट के बारे में बात करूंगा और इस कॉन्ट्रैक्ट के बारे में आपको ज्यादा से ज्यादा जानकारी देने की कोशिश करूंगा।

नीचे की लिस्ट को देखिए जिसमें उन क्मोडिटी को दिखाया गया है जो MCX पर ट्रेड होती हैं –

Sr. No.	List of Commodities Available for Trading on MCX	List of Commodity Contracts Available for Trading on MCX
1	ALUMINIUM	ALUMINIUM MINI
2	CARDAMOM	CARDAMOM
3	COPPER	COPPER COPPER MINI
4	COTTON	COTTON
5	CRUDE OIL	BRENT CRUDE OIL
		CRUDE OIL
		CRUDE OIL MINI
6	CRUDE PALM OIL	CRUDE PALM OIL
7	GOLD	GOLD
		GOLD GLOBAL
		GOLD GUINEA
		GOLD MINI
		GOLD PETAL
		GOLD PETAL DELHI
8	KAPAS	KAPAS
9	LEAD	LEAD LEAD MINI
10	MENTHA OIL	MENTHA OIL
11	NATURAL GAS	NATURAL GAS
12	NICKEL	NICKEL
		NICKEL MINI
		SILVER
13	SILVER	SILVER 1000
		SILVER MINI
		SILVER MICRO
14	ZINC	ZINC ZINC MINI

हम कोशिश करेंगे कि उन सारी बड़ी क्मोडिटी पर चर्चा कर सकें जिन्हें ट्रेड किया जा सकता है। यहां पर आपको यह जानना जरूरी होगा कि डेरिवेटिव फ्यूचर किस तरीके से काम करते हैं तभी आप क्मोडिटी को अच्छे से समझ पाएंगे। अगर आप फ्यूचर ट्रेडिंग के बारे में नहीं जानते हैं तो आपको फ्यूचर ट्रेडिंग से जुड़े हमारे मॉड्यूल को जरूर पढ़ना चाहिए।

अगर आप फ्यूचर के बारे में जानते हैं तो हम आगे बढ़ते हैं और शुरुआत करते हैं सोने के साथ



7.2 – सोने का कॉन्ट्रैक्ट

MCX पर सोने में सबसे ज्यादा कारोबार होता है। इस कारोबार में काफी ज्यादा लिक्विडिटी है और हर दिन करीब 15,000 कॉन्ट्रैक्ट को ट्रेड किया जाता है, यानी हर दिन करीब 4500 करोड़ रूपए का कारोबार होता है। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि यह संख्या सिर्फ सोने के एक कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी हुई है जिसे बिग गोल्ड कहा जाता है।

MCX पर सोने की कई तरह की कॉन्ट्रैक्ट उपलब्ध हैं, जिनमें आप ट्रेड कर सकते हैं। नए लोग और कई बार तो पुराने कारोबारी भी सोने के इन अलग-अलग कॉन्ट्रैक्ट में उलझ जाते हैं और उनको समझ नहीं आता कि किस कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेड करना चाहिए और किस में नहीं। इसलिए सबसे पहले हम सोने में उपलब्ध अलग-अलग तरीके के कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं –

1. सोना (बिग गोल्ड)
2. गोल्ड मिनी
3. गोल्ड गिनी
4. गोल्ड पेटल (petal)

इन सभी कॉन्ट्रैक्ट की अंडरलाइंग एक ही है और वह है सोना। इनके अंतर को समझने के लिए सबसे जरूरी चीज यह है कि इनके कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारी को देखा और समझा जाए। तो सबसे पहले शुरू करते हैं बिग गोल्ड से।

MCX पर सोने के कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी सारी जानकारियां यहां दी गई हैं, इनको हम एक-एक करके समझते हैं –

विवरण	मूल्य
कीमत कोटेशन	रूपए प्रति 10 ग्राम (सभी टेक्स और ड्यूटी सहित)
लॉट साइज	1 किलोग्राम
टिक साइज	1 रूपया
प्रति टिक P&L	Rs. 100
एक्सपायरी का दिन	कॉन्ट्रैक्ट महीने का 5th दिन
डिलीवरी	आवश्यक
डिलीवरी मात्रा	1 किलोग्राम

इन सब को इसी क्रम में समझते हैं। सबसे पहले नजर डालते हैं कि कीमत और कोटेशन पर

यहां सोने के लिए कीमत 10 ग्राम के लिए दिखाई गई है। इस कीमत में सभी तरह की इंपोर्ट ड्यूटी और टेक्स शामिल हैं। इनके बारे में हम आगे चर्चा करेंगे लेकिन अभी के लिए यह जान लीजिए कि MCX की कीमत में सब कुछ शामिल है। नीचे के चित्र पर नजर डालिए जिसमें MCX पर गोल्ड फ्यूचर के लास्ट ट्रेडेड कीमत को दिखाया गया है

GOLD

05OCT2016 [Add to Watchlist](#)

31,331.00 -136.00(-0.43%)

Category : BULLION | Price Quote Unit : 10 GRMS

Today	31300.00	31393.00
Lifetime	25700.00	32839.00

Expiry Date	05-OCT-2016
Average Price(Rs./Unit)	31,344.16
Close	31,467.00
Volume (Lots)	4297
Trading Unit	1 KGS

जैसा कि आप देख सकते हैं कि सोने का लास्ट ट्रेडेड प्राइस (अंतिम ट्रेडेड कीमत) ₹31,331 है। ध्यान दीजिए कि सोने की ये कीमत 10 ग्राम के लिए है। यहां पर लॉट साइज 1 किलो (1000 ग्राम) का है इसलिए कॉन्ट्रैक्ट की कुल कीमत हुई –

$$(1000 * 31331) / 10$$

$$= Rs.31,33,100/-$$

तो इस ट्रेड के लिए कितने मार्जिन की जरूरत पड़ेगी, हम इसे जोरोंधा के मार्जिन कैलकुलेटर पर जाकर निकाल सकते हैं –

Exchange	MCX	Symbol	GOLD05-OCT-16	Net quantity	1	*Buy/Use	Margin Rs: 1,25,868 Exposure margin Rs: 0 Total margin Rs: 1,25,868
----------	-----	--------	---------------	--------------	---	----------	---

तो हमें ₹1,25,868 की जरूरत पड़ेगी जिसका मतलब हुआ कि मार्जिन का प्रतिशत हुआ –

$$1,25,868 / 31,33,100$$

$$= 4.017\%$$

तो जैसा कि आप देख सकते हैं मार्जिन करीब 4% होगा, तो ये करीब करीब उतना ही है जितना करेंसी के कॉन्ट्रैक्ट में था। लेकिन कुल रकम के हिसाब से यह मार्जिन काफी ज्यादा है और इसलिए रिटेल ट्रेडर का सोने में पोजीशन लेना काफी मुश्किल होता है। यही वजह है कि सोने के दूसरे कॉन्ट्रैक्ट जैसे गोल्ड मिनी और गोल्ड पेटल भी एक्सचेंज पर मौजूद हैं जहां मार्जिन कम है। इन सारे कॉन्ट्रैक्ट के बारे में हम आगे चर्चा करेंगे।

अभी मान लीजिए कि आपने 1 किलो सोना MCX पर खरीदा है इसका मतलब है कि आप को करीब ₹1,25,000 मार्जिन के तौर पर जमा करने होंगे और हर टिक पर आप या तो ₹100 कमाएंगे या ₹100 गंवाएंगे। तो हमें यह ₹100 का आंकड़ा कहां से मिला –

$$\text{प्रति टिक P\&L} = (\text{लॉट साइज} / \text{कोटेशन}) * \text{टिक साइज}$$

इसे सोने पर आजमाते हैं

$$= (1000 \text{ ग्राम} / 10 \text{ ग्राम}) * 1 \text{ रूपया}$$

$$= 100 \text{ रूपए}$$

वास्तव में, आप इस फार्मूले का इस्तेमाल करके फ्यूचर या ऑप्शन के किसी भी कॉन्ट्रैक्ट का प्रति टिक P&L निकाल सकते हैं। उदाहरण के तौर पर मान दीजिए JPY INR का कॉन्ट्रैक्ट 5 अक्टूबर 2016 को एक्सपायर हो जाएगा तो कॉन्ट्रैक्ट के लिए लॉट साइज 100,000 जापानी येन का है और कोटेशन 100 जापानी येन का है टिक साइज 0.0025 है तो प्रति टिक P&L होगा –

$$(100000/100)*0.0025$$

$$= 2.5 \text{ Rupees}$$

तो अब आगे बढ़ते हैं और एक्सपायरी पर नजर डालते हैं। अगर आप देखेंगे तो आपको दिखेगा कि गोल्ड में एक्सपायरी की जगह सिर्फ लिखा है- कॉन्ट्रैक्ट महीने का पांचवा दिन। सोने का कॉन्ट्रैक्ट हर दूसरे महीने में नया जारी होता है और हर कॉन्ट्रैक्ट एक 1 साल तक के लिए वैध रहता है। इस तरह से किसी भी समय आपके सामने 6 कॉन्ट्रैक्ट होते हैं जिनमें से आप अपने पसंद का कॉन्ट्रैक्ट चुन सकते हैं। मान लीजिए हम अगस्त 2016 में हैं तो आपको नीचे के इस टेबल को देखकर समझ में आएगा कि कौन से कॉन्ट्रैक्ट आपके लिए उपलब्ध हैं और यह कैसे काम करता है

अभी उपलब्ध कॉन्ट्रैक्ट	एक्सपायरी
अक्टूबर 2016	5th Oct 2016
दिसंबर 2016	5th Dec 2016
फरवरी 2017	5th Feb 2017
अप्रैल 2017	5th April 2017
जून 2017	5th Jun 2017
अगस्त 2017	5th Aug 2017

हमेशा की तरह, सबसे ताजा कॉन्ट्रैक्ट ही सबसे ज्यादा लिक्विड कॉन्ट्रैक्ट होता है। जैसे इस उदाहरण में अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट है। अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट 5 अक्टूबर 2016 को एक्सपायर हो जाएगा तो सितंबर 2017 का कॉन्ट्रैक्ट जारी होगा और सबसे ज्यादा लिक्विड कॉन्ट्रैक्ट अब दिसंबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट हो जाएगा, जो कि 5 अक्टूबर 2016 के कॉन्ट्रैक्ट की जगह लेगा।

ध्यान रखिए कि इक्विटी में सेटलमेंट हमेशा कैश में होता है और यहां फिजिकल सेटलमेंट नहीं होता। लेकिन जब क्मोडिटी बाजार की बात आती है तो सेटलमेंट फिजिकल होता है और यहां पर डिलीवरी जरूरी होती है। इसका मतलब यह है कि अगर आपके पास सोने के 10 लॉट हैं और आपने डिलीवरी मांगी हुई है तो आपको 10 किलो सोना मिलेगा। डिलीवरी लेने के लिए क्मोडिटी बाजार में आपको बताना पड़ता है कि आपको डिलीवरी चाहिए। एक्सपायरी के 4 दिनों पहले तक आप ऐसा कर सकते हैं। अगर एक्सपायरी 5 तारीख को है तो आप डिलीवरी लेने की इच्छा 4 तारीख के पहले किसी भी दिन जाहिर कर सकते हैं।

ध्यान देने वाली बात यह है कि अगर आप ज़ेरोधा पर ट्रेड कर रहे हैं तो हम आपको इस बात की इजाजत नहीं देते हैं कि आप किसी क्मोडिटी की फिजिकल डिलीवरी लें। इसका मतलब यह है कि आपको अपनी पोजीशन को एक्सपायरी महीने की 1 तारीख के पहले क्लोज करना होगा। जहां तक मेरी बात है मैं व्यक्तिगत तौर पर यह पसंद करता हूँ कि अपनी पोजीशन को जल्दी से जल्दी क्लोज कर सकूँ और क्मोडिटी की फिजिकल डिलीवरी के चक्कर में ना पड़ूँ।

तो अब आप ज्यादातर बातें जान चुके हैं जो कि सोने के बिग गोल्ड कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी हुई हैं। अब आगे बढ़ते हैं और सोने के दूसरे कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं।

7.3 – सोने के दूसरे कॉन्ट्रैक्ट (गोल्ड मिनी, गोल्ड गिनी, गोल्ड पेटल)

जैसा कि आप समझ चुके हैं कि बिग गोल्ड कॉन्ट्रैक्ट में मार्जिन की जरूरत बहुत बड़ी होती है मतलब इसके लिए बहुत बड़ी रकम देने पड़ती है। इस वजह से, बहुत सारे ट्रेडर कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेड नहीं कर पाते हैं। शायद यही वजह है कि एक्सचेंज ने कम मार्जिन वाले कई कॉन्ट्रैक्ट जारी किए हैं।

आप सोने के जिन दूसरे कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेड कर सकते हैं यह हैं

1. गोल्ड मिनी
2. गोल्ड गिनी
3. गोल्ड पेटल

इन कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियां नीचे के टेबल में दिखाई गई हैं

कीमत का कोट	लॉट साइज	टिक साइज	P&L/टिक	एक्सपायरी	डिलीवरी	डिलीवरी यूनिट
Gold Mini	Rs. per 10 gm	100 gm	1 rupee	Rs.10	5th day	आवश्यक 100 gm
Gold Guinea	Rs. per 8 gm	8 gm	1 Rupee	Rs.1	Last day	आवश्यक 8 gm
Gold Petal	Rs. per 1 gm	1 gm	1 Rupee	Rs.1	Last day	आवश्यक 8 gm

मुझे लगता है कि यह टेबल समझने में आसान है क्योंकि हम इससे जुड़ी जानकारियों के बारे में ऊपर भी चर्चा कर चुके हैं। इसलिए अब हम सीधे मार्जिन से जुड़ी जानकारी पर चर्चा करेंगे

Commodity	Lot size	Price	NRML Margin
1 GOLD	1 KGS	31404	157020
2 GOLGUINEA	8 GRMS	25033	1251
3 GOLDM	100 GRMS	31365	15682
4 GOLDPETAL	1 GRMS	3111	155
5 GOLPDEL	1 GRMS	3094	154

जैसा कि आप देख सकते हैं कि गोल्ड मिनी (GOLD M) कॉन्ट्रैक्ट में मार्जिन ₹15,682 का है और प्रतिशत के हिसाब से –

$$= \text{मार्जिन} / \text{कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू}$$

$$\text{कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू} = (\text{कीमत} * \text{लॉट साइज}) / \text{कीमत का कोटेशन}$$

$$= (31365 * 100) / 10$$

$$= Rs.313,650$$

$$= 15682 / 313650$$

$$= 5\%$$

अगर आप देखें तो यह करीब करीब उतना ही है जितना कि बिग गोल्ड का प्रतिशत था। अब एक बार हम गोल्ड मिनी के प्रति टिक P&L पर नजर डाल लेते हैं

$$\text{प्रति टिक P\&L} = (\text{लॉट साइज} / \text{कोटेशन}) * \text{टिक साइज}$$

$$= (100/10)*1$$

$$= Rs.10/- \text{ per tick.}$$

गोल्ड मिनी के अलावा हमारे सामने गोल्ड गिनी और गोल्ड पेटल के कॉन्ट्रैक्ट भी होते हैं। यह बहुत छोटे कॉन्ट्रैक्ट होते हैं और इनमें मार्जिन की जरूरत बहुत कम होती है। करीब करीब ₹1251 गोल्ड गिनी के लिए और ₹154 गोल्ड पेटल के लिए। लॉट साइज भी छोटा होता है और इसलिए कॉन्ट्रैक्ट की वैल्यू भी बहुत कम होती है। आपको इनके भी कई प्रकार दिखेंगे जैसे गोल्ड पेटल (दिल्ली), गोल्ड गिनी (अहमदाबाद) आदि। इसलिए आप सोने में ट्रेड करना चाहते हैं तो आपको इन पर ध्यान देने की ज्यादा जरूरत नहीं है।

मेरी राय यह है कि अगर आप गोल्ड में ट्रेड करना चाहते हैं तो या तो बिग गोल्ड कॉन्ट्रैक्ट में करें या गोल्ड मिनी कॉन्ट्रैक्ट में करें क्योंकि यहां पर लिक्विडिटी काफी होती है। दूसरे कॉन्ट्रैक्ट में लिक्विडिटी काफी कम होती है। आपको यह बताने के लिए कि कॉन्ट्रैक्ट में लिक्विडिटी कितनी होती है, MCX के हर दिन के ट्रेड के इस आंकड़े पर नजर डालिए –

- o बिग गोल्ड कॉन्ट्रैक्ट में करीब 12 से 13 हजार लॉट का ट्रेड होता है
- o गोल्ड मिनी कॉन्ट्रैक्ट के 14 से 15 हजार लॉट का ट्रेड होता है
- o गोल्ड गिनी कॉन्ट्रैक्ट में एक से डेढ़ हजार लॉट ट्रेड होते हैं
- o गोल्ड पेटल कॉन्ट्रैक्ट के 8 से 9 हजार लॉट ट्रेड होते हैं

यहां पर ध्यान देने वाली बात यह है कि आप को यह आंकड़े देखकर लगेगा कि गोल्ड पेटल में भी काफी ज्यादा लिक्विडिटी है। लेकिन याद रखिए कि गोल्ड पेटल लॉट साइज 8 ग्राम का होता है इसलिए 8 से 9 हजार लॉट का मतलब है करीब 2 से ढाई करोड़ रूपए।

एक जरूरी बात जो कि याद रखनी चाहिए वह यह है कि लिक्विडिटी हमेशा सबसे करीबी मंथ के कॉन्ट्रैक्ट में सबसे ज्यादा होती है इसलिए कोशिश कीजिए कि आप इसी में ट्रेड करें। एक्सपायरी से जितना दूर वाले कॉन्ट्रैक्ट में रहेंगे लिक्विडिटी उतनी कम होगी।

अब मुझे लगता है कि अब आप गोल्ड कॉन्ट्रैक्ट और उनसे जुड़ी बातों को काफी हद तक समझ सकेंगे होंगे। इसलिए अगले अध्याय में हम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में गोल्ड की कीमतों के संबंध और अंतरराष्ट्रीय कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी चीजों पर चर्चा करेंगे। यह भी जानने कि गोल्ड पर किन चीजों का असर पड़ता है और गोल्ड और इक्विटी तथा डॉलर में क्या संबंध होता है।

इस अध्याय की मुख्य बातें

1. MCX पर ट्रेड होने वाले बुलियन कॉन्ट्रैक्ट में सबसे ज्यादा ट्रेड सोने में होता है।
2. सोने के कॉन्ट्रैक्ट के कई अलग-अलग प्रकार होते हैं- बिग गोल्ड, गोल्ड मिनी, गोल्ड गिनी, गोल्ड पेटल।
3. सबसे ज्यादा लोकप्रिय कॉन्ट्रैक्ट है बिग गोल्ड लेकिन इसमें मार्जिन बहुत ज्यादा लगता है करीब ₹125000।
4. बिग गोल्ड के प्रति टिक P&L ₹100 का होता है।
5. प्रति टिक P&L निकालने का फार्मूला = (लॉट साइज / कोटेशन) * टिक साइज
6. सोने का दूसरा सबसे लोकप्रिय कॉन्ट्रैक्ट है गोल्ड मिनी जिसमें करीब ₹15000 का मार्जिन लगता है।
7. गोल्ड पेटल और गोल्ड गिनी, सोने के दूसरे ऐसे कॉन्ट्रैक्ट हैं जिनमें मार्जिन कम है लेकिन इन कॉन्ट्रैक्ट में लिक्विडिटी भी काफी कम होती है।
8. अपने नियरेस्ट मंथ यानी करीबी महीने के कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेड करना सबसे अच्छा होता है क्योंकि उसमें सबसे ज्यादा लिक्विडिटी होती है।
9. इन सारे कॉन्ट्रैक्ट में डिलीवरी जरूरी होती है इसलिए यह अच्छा होगा कि आप अपने इन कॉन्ट्रैक्ट को एक्सपायरी के कम से कम 4 दिन पहले क्लोज कर दें।

सोना (भाग 2)



8.1 – लंदन फिक्स (लंदन में कीमत निर्धारण)

पिछले अध्याय में हमने सोने के उन कॉन्ट्रैक्ट पर चर्चा की थी जो MCX पर मौजूद हैं। इस अध्याय की शुरुआत हम इस चर्चा से करते हैं कि सोने की स्पॉट कीमतें दुनिया भर में और भारत में कैसे तय होती हैं। लेकिन मैं यह साफ कर दूँ कि सोने की कीमत तय करने का यह तरीका सिर्फ एक तरीका है और MCX पर होने वाली सोने की ट्रेडिंग में इसका कोई बहुत ज्यादा महत्व नहीं होता है। लेकिन फिर भी इसे जानना जरूरी है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोने की कीमत हर दिन लंदन में तय की जाती है, दिन में दो बार दो अलग-अलग सत्रों के लिए। सुबह के सत्र के लिए 10:30 AM पर जिसे AM फिक्स कहा जाता है और भारत में कैसे तय होकर 3:00 PM पर जिसे PM फिक्स कहा जाता है। लंदन के सबसे बड़े बुलियन डेस्क के डेडर इस कीमत को तय करते हैं और नथन मायर रायसचाइल्ड एंड सॉन्स (Nathan Mayer Rothschild & Sons) इस काम में उन्हें मदद करते हैं।

जेपी मॉर्गन, स्टैंडर्ड चार्टर्ड, स्कोटियामोकाटा (स्कोटिया बैंक), सोसायटी जनरल जैसे करीब 10 से 11 पार्टिसिपेटिंग बैंक इस काम में हिस्सा लेते हैं। ध्यान दीजिए कि आम जनता को या दूसरे बैंकों को इस प्रक्रिया में हिस्सा लेने की इजाजत नहीं है। इन बैंकों के डीलर पहले से तय समय पर निर्धारित कॉन्फ्रेंस कॉल में कॉल करते हैं और सोने की खरीद और बिक्री की कीमतें की अपनी बिड बताते हैं। यहां आई सभी बिड और ऑफर से एक औसत कीमत निकाली जाती है और फिर उस कीमत को भाव बनता है। यहां आई सभी बिड और ऑफर से एक औसत कीमत निकाली जाती है और फिर उस कीमत को भाव बनता है। इस पूरी प्रक्रिया में 10 से 15 मिनट लगते हैं। यही प्रक्रिया शाम के सत्र के लिए यानी PM सेशन के लिए फिर से दोहराई जाती है और फिर से सोने की कीमत तय करके उसे बाजार को बता दिया जाता है।

AM और PM फिक्स में जो कीमतें तय की जाती हैं वह उस कीमत के काफी करीब होती हैं जो लंदन में हो रही सोने की ट्रेडिंग में चल रही होती हैं। इस वजह से ये कीमतें किसी भी बुलियन ट्रेडर के लिए कोई नई खबर नहीं होती हैं। एक तरह से कहा जा सकता है कि इंग्लैंड में होने वाली बहुत सारी दूसरी चीजों की तरह यह भी एक तरीके की परंपरा है जिसे निभाया जा रहा है।

भारत में भी कुछ इसी तरीके की परंपरा है लेकिन इतनी विस्तृत नहीं है। आपको पता ही है कि भारत में सोने की सबसे ज्यादा खपत होती है और भारत इसे आयात करता है। भारत में सोना निर्धारित बैंकों द्वारा आयात किया जाता है और फिर यही सोना बुलियन डीलर्स को सपनाई किया जाता है (कुछ शुल्क लगाने के बाद)। इसके बाद बुलियन डीलर्स एप्लिकेशन अपने नेटवर्क के द्वारा इस सोने के लिए बोली मंगाना है, यह बिड या बोली इस आधार पर मंगाई जाती है कि डीलर को कस कीमत पर किनासा सोना खरीदना या बेचना है। इन कीमतों के आधार पर एक औसत कीमत निकाली जाती है और यही भारत में सोने की उस दिन की कीमत होती है। वास्तव में यह एक तरीके का चक्र है। डीलर सोना का भाव भेजने के पहले MCX में सोने की फ्यूचर कीमत पर नजर डालते हैं और उसके आधार पर ही अपना भाव बुलियन एप्लिकेशन को भेजते हैं। इसके बाद यह कीमतें डीलर और ज्वेलर्स के नेटवर्क को भेजी जाती हैं और उस दिन की कीमत तय हो जाती है।

8.2 – सोने की कीमत का अंतर

कभी कभी सोने के ट्रेडर शिकागो मॉकैटडाल एक्सचेंज यानी CME में सोने के फ्यूचर की कीमत और यहां भारत में MCX पर सोने की फ्यूचर कीमत के अंतर को देखते हैं और उसके आधार पर यह मान लेते हैं कि यहां आर्बिट्रिज का मौका बन रहा है। उन्हें यह मौका इसलिए दिखाता है क्योंकि वो ये मान लेते हैं कि सोना एक अंतर्राष्ट्रीय कमांडी है और आमतौर पर दुनिया भर में इसकी कीमतें एक जैसी होना चाहिए और जब कभी ऐसा नहीं होता तो वो एक आर्बिट्रिज का मौका है। उदाहरण के तौर पर अगर 995 प्योरिटी का सोना CME में \$433 पर क्वाट (quote) हो रहा है तो MCX पर भी 10 ग्राम सोने की कीमत \$430 के आस पास ही होनी चाहिए।

लेकिन ऐसा नहीं होता है, इन दोनों कीमतों में काफी अंतर होता है और इस वजह से ही CME और MCX के फ्यूचर कीमत में हमेशा एक अंतर होता है। तो यहां सवाल यह उठता है कि दोनों जगह के फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट की कीमतों में इतना अंतर क्यों होता है?

आइए इस को समझते हैं-

इस बात को समझने के लिए पहले यह जानना जरूरी है कि भारत में सोने की स्पॉट कीमतें कैसे तय की जाती हैं।

याद रखिए कि भारत में सोने का आयात होता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में और खासकर अमेरिका में, सोने की कीमत प्रति ट्रॉय औंस (per troy ounce basis) में क्वाट (quote) किया जाता है। एक ट्रॉय औंस करीब-करीब 31.1035 ग्राम होता है। अब मान लीजिए कि अमेरिकी स्पॉट बाजार में सोना 1320 डॉलर प्रति ट्रॉय औंस में बिक रहा है ऐसे में अगर डॉलर 65 रुपए का है तो भारत में सोने की स्पॉट कीमत क्या होनी चाहिए?

आमतौर पर लोग पहले अमेरिका में 10 ग्राम सोने की कीमत अमेरिकी डॉलर में पता कर लेते हैं और उसके बाद उस भारत में USD-INR के रेट से गुणा करके यहां पर सोने की कीमत पता करते हैं। आइए ऐसा कर के देखते हैं

31.1 ग्राम सोने की कीमत \$1320 इसलिए 10 ग्राम सोने की कीमत \$424.43 होगी। अब चूंकि USD INR 65 पर है इसलिए भारत में 10 ग्राम सोने की कीमत होगी करीब 27,588 रुपए

लेकिन वास्तव में यह इतना सीधा सादा नहीं होता। भारत में जब सोना आयात होता है (बैंक इसे आयात करते हैं) तो उन्हें सोने पर झूटी और टैक्स भी देना होता है। इसलिए भारत में सोने की स्पॉट कीमतों में यह शुल्क भी शामिल होना चाहिए। एक नजर डालिए कि सोने के आयात में क्या-क्या शुल्क शामिल होते हैं-

1. CIF (Cost, insurance and freight) कीमत, बीमा और किराया भाड़ा)
2. कस्टम झूटी
3. सैस (Cess)
4. बैंक का चर्च

इन सारी वजहों से भारत में सोने की वास्तविक कीमत बढ़ जाती है। इसको और अच्छे से समझने के लिए आप यहां पर ट्रेडिंग Q&A पर नजर डाल सकते हैं। [this post on TradingQ&A](#)

तो उदाहरण के तौर पर अगर अमेरिका में सोने की स्पॉट कीमत \$422 प्रति 10 ग्राम है तो भारत में बाकी सारे खर्चों को जोड़ने के बाद स्पॉट की कीमत काफी ऊपर होगी। उदाहरण के तौर पर आप मान सकते हैं कि भारत में यह कीमत \$435 के आसपास होगी और इस तरह से दोनों जगहों पर यह अंतर करीब करीब \$15 का होगा।

तो यह तो हुई स्पॉट कीमतों में अंतर की बात लेकिन फ्यूचर की कीमतों के बारे में क्या, याद रखिए कि फ्यूचर की कीमत हमेशा स्पॉट की कीमत से ही निगलती है। फ्यूचर कीमत को स्पॉट कीमत से जोड़ने वाला फार्मूला है -

$$F = S * e^{(rt)}$$

आप फ्यूचर कीमत के बारे में और यहां पर पढ़ सकते हैं [futures pricing](#).

तो जहां अमेरिकी बाजार में सोने की फ्यूचर कीमत यहां के स्पॉट की कीमत के आधार पर तय होती है यानी ऊपर के उदाहरण में \$420 के अनुसार, वहीं भारत में सोने की फ्यूचर की कीमत यहां के स्पॉट बाजार के आधार पर तय होगी जो कि उदाहरण में \$435 के करीब है। इसी वजह से CME और MCX की फ्यूचर कीमतों में अंतर होता है, और इसे आर्बिट्रिज का मौका नहीं समझना चाहिए।

8.3 – सोने की कीमत पर किन बातों का असर पड़ता है

दुनिया भर के निवेशकों की एक खास आदत है वो सोने में तब जबर निवेश करते हैं जब दुनिया के आर्थिक बाजारों में अनिश्चितता का माहौल होता है। सोने को एक सुरक्षित निवेश माना जाता है और यह माना जाता है कि किसी भी तरीके की आर्थिक मंदी में सोना उनके निवेश को बचाकर रखेगा।

उदाहरण के तौर पर जून 2016 में BREXIT की घटना रही थी, जिसने दुनिया भर के बाजारों को हिला कर रख दिया था तो इस वजह से सोने की कीमतों पर क्या असर पड़ा, इसे आप नीचे के चार्ट में देख सकते हैं

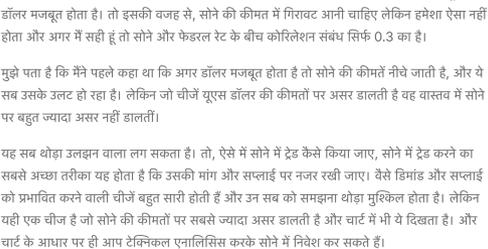


घटना के दौरान और घटना के बाद सोने की कीमतों में तेजी आई थी और इस चार्ट पर आपको जो बड़े कैडलर दिख रहे हैं वह 24 जून के बाद के हैं, जिस दिन ब्रेक्सिट का फैसला आ गया था। मतलब यह कि ब्रेक्सिट का फैसला आने के बाद सोने में और तेजी आई थी। तो होता यह कि जब भी दुनिया में किसी भी तरीके का अनिश्चितता का माहौल बनता है तो निवेशक सोना खरीदने लगते हैं क्योंकि सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है।

इतिहास में जितनी भी बड़ी घटनाएं हुई हैं, उनका सोने की कीमतों पर असर पड़ा है। जैसे क्रेला तेल संकट, मध्य एशिया संकट, इजरायल फिलिस्तीन, यूरोपियन यूनियन शरणार्थी संकट, ग्रीस का आर्थिक संकट, यूरो संकट हो या फिर लेहमैन ब्रदर्स संकट। यह याद रखने की बात है कि जब भी दुनिया में कोई बड़ी घटना होती है तो सोने की कीमतों पर असर पड़ता है।

इसके आधार पर हम एक बड़ा निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अनिश्चितता में सोने की कीमत बढ़ती है। वास्तव में, आर्थिक अनिश्चितता के समय में रिस्की निवेश जैसे इक्विटी में निवेश कम हो जाता है और सोने जैसे सुरक्षित माने जाने वाले ऐसेट में निवेश बढ़ जाता है।

अनिश्चितता वाली घटनाओं के अलावा भी, दैनिक तौर पर भी निवेशक सोने में निवेश इसलिए करते हैं क्योंकि इसे मुद्रास्फीति यानी इन्फ्लेशन से बचाने वाले निवेश के तौर पर देखा जाता है। यह माना जाता है कि लंबे समय में सोना लगातार बढ़ता रहेगा अगर आप सोने के काफी लंबे समय के चार्ट को देखेंगे तो यह विचार सही भी दिखेगा -



Source: <http://www.lbma.org.uk/pricing-and-statistics>

एक नजर ऊपर के चार्ट पर डालिए। 1970 में सोना करीब \$35 का था और 2016 में, आज सोना \$1360 का है। मतलब इसने करीब 37 गुना रिटर्न दिया है। लेकिन जब आप इसे CAGR के हिसाब से देखेंगे, तो यह साल दर साल करीब 8% की वृद्धि दिखा रहा है। आमतौर पर इस दौरान दुनिया में मुद्रास्फीति की दर करीब 5 से 6% की रही है। इसका मतलब है अगर आपने सोने में निवेश किया था तो आपने करीब 8% की कमाई की लेकिन दूसरी तरफ आपने मुद्रास्फीति की वजह से 6% गंवा दिया। इस तरह आपने कुल 2% की कमाई की। लेकिन, खासकर भारत जैसे देशों में जहां पर मुद्रास्फीति की दर ज्यादा है यहां पर तो सोने ने कोई कमाई कर के नहीं दी है।

8.4 – सोना, डॉलर, रुपया और ब्याज दर

सोने की कीमतों में होने वाले बदलाव इस बात से भी प्रभावित होते हैं कि करंसी के बाजार में क्या चल रहा है और अर्थव्यवस्था में क्या चल रहा है। सोने को एक सुरक्षित निवेश माना जाता है और यह माना जाता है कि लंबे समय में सोना लगातार बढ़ता रहेगा अगर आप सोने के काफी लंबे समय के चार्ट को देखेंगे तो यह विचार सही भी दिखेगा -



Source: <https://fred.stlouisfed.org/graph/?g=33vD>

ये सोने और अमेरिकी डॉलर का ग्राफ है। इन दोनों के बीच विपरीत संबंध भी जो कि इस ग्राफ में साफ नजर आ रहे हैं, एक ऊपर होता है तो दूसरा नीचे होता है। इस तरह के संबंध की दो खास वजहें हैं

1. जब डॉलर की कीमत किसी करंसी के मुकाबले कम होती है, तो दूसरी करंसी की कीमत बढ़ती है। उस करंसी की कीमत में आई इस बढ़ोतरी की वजह से सोने जैसी कमांडी की मांग में भी तेजी आती है। जब सोने की मांग बढ़ती है तो फिर कीमतें बढ़ती हैं।
2. USD में आ रही गिरावट की वजह से निवेशकों की रुचि इसमें कम हो जाती है और इन्वेस्टर अपने पैसे को सुरक्षित निवेश यानी सोने में लगाने लगते हैं।

लेकिन यह हमेशा सच नहीं होता, कई बार ऐसा भी होता है कि सोना और अमेरिकी डॉलर दोनों बढ़ते हैं। उदाहरण के तौर पर जब सऊदी अरब में संकट हुआ था तो वहां के घरेलू निवेशक सऊदी में निवेश नहीं करना चाहते थे और अपने पैसे को सोने या अमेरिकी डॉलर जैसे सुरक्षित ऐसेट में लगाना चाहते थे। इस वजह से इन दोनों की कीमतों में बढ़ोतरी हुई थी।

इससे एक बात तो साफ हो गई है कि सोने की कीमतों पर अमेरिकी डॉलर की कीमत में कोई बदलाव का असर पड़ता है। लेकिन सोने पर बाकी दूसरी चीजों का क्या असर पड़ता है और वास्तव में कोई असर पड़ता है या नहीं-यह देखते हैं। उदाहरण के तौर पर अमेरिका के फेडरल रेट में आई बढ़ोतरी की वजह से यूएस डॉलर मजबूत होता है। तो इसकी वजह से, सोने की कीमत में गिरावट आनी चाहिए लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता और अगर मैं सोना हूँ तो इसकी वजह से, रेट के बीच कोर्रिलेशन संबंध सिर्फ 0.3 का है।

मुझे पता है कि मैंने पहले कहा था कि अगर डॉलर मजबूत होता है तो सोने की कीमतें नीचे जाती है, और ये सब उसके उलट हो रहा है। लेकिन जो चीजें यूएस डॉलर की कीमतों पर असर डालती हैं यह वास्तव में सोने पर बहुत ज्यादा असर नहीं डालतीं।

यह सब थोड़ा उलझन वाला लग सकता है। तो, ऐसे में सोने में ट्रेड कैसे किया जाए, सोने में ट्रेड करने का सबसे अच्छा तरीका यह होता है कि उसकी मांग और सपनाई पर नजर डालें। जैसे डिमांड और सपनाई को प्रभावित करने वाली चीजें बहुत सारी होती हैं और उन सब को समझना थोड़ा मुश्किल होता है। लेकिन यही एक चीज है जो सोने की कीमतों पर सबसे ज्यादा असर डालती है और चार्ट में भी ये दिखता है। और चार्ट के आधार पर ही आप टेक्निकल एनालिसिस करके सोने में निवेश कर सकते हैं।

जब आप इक्विटी में निवेश करते हैं तो फंडामेंटल एनालिसिस बहुत ज्यादा काम आती है लेकिन जब कमांडी और करंसी की बात हो तो टेक्निकल एनालिसिस अच्छा होता है।

8.5 – सोने पर टेक्निकल एनालिसिस

आगर आप टेक्निकल एनालिसिस के बारे में नहीं जानते हैं तो मेरी सलाह होगी कि टेक्निकल एनालिसिस पर हमारे मांझुब को पढ़ें।

टेक्निकल एनालिसिस की सबसे बड़ी खासियत यह है कि किसी भी ऐसेट के लिए उसका इस्तेमाल किया जा सकता है- चाहे वह करंसी हो या कमांडीटी। अब टेक्निकल एनालिसिस का सोने पर इस्तेमाल करते हैं और देखते हैं कि यह कैसे काम करता है।

जब मैं सोने में ट्रेड करता हूँ तो मेरा इरादा बहुत साफ होता है कि यह छोटे समय का ट्रेड रेट है और इस ट्रेड को कुछ दिनों से ट्रेड करवाने में अपने पास होल्ड करने वाला नहीं हूँ।

जब भी मैं ट्रेड को चुनना चाहता हूँ तो सबसे पहले एक लंबे समय के चार्ट पर नजर डालता हूँ। इसके समय से मेरा मतलब है कि 2 साल या उससे लंबा चार्ट। यहां पर मैं बड़ी कलंगा। मैं गोल्ड BEES (ETF) के दो साल के एंड ऑफ द डे चार्ट (End of the Day) पर नजर डालूंगा जिससे मुझे गोल्ड यानी सोने के बारे में एक मुझे ट्रेड के बारे में पता चल सके। साथ में एक महत्वपूर्ण प्राइस प्वाइंट यानी कीमत बिंदु का भी पता चल सके।

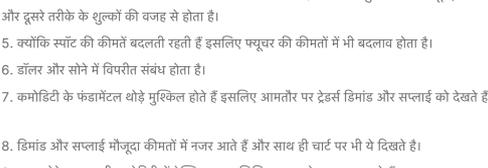


ऊपर के चार्ट से मुझे पता चला कि

1. सोना 2013 के अंत से गिरना शुरू हुआ और 2015 के अंत तक गिरता ही रहा
2. 2015 के अंतिम कुछ महीनों में कीमत एक तरीके से अपने सबसे निचले स्तर पर आ गई थी
3. सोने में सितंबर 2015 से दिसंबर 2015 के बीच में एक तरीके का डबल बॉटम बना था
4. 2016 की शुरुआत से सोने की कीमतें ऊपर जाने लगी थी
5. 2016 की शुरुआत से ही हर गिरावट पर ट्रेडर्स सोने को खरीद रहे हैं
6. साफ है कि सोने में अंत अब नहीं रही है और यह इस बात से नजर आता है कि सोना 2013 की ऊंचाइयों तक वापस पहुंच गया है

इन सारी बातों के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि सोने में अब लॉग ट्रेड लिया जा सकता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैंने सोने में शॉर्ट नहीं करूंगा, जब मुझे एक शॉर्ट करने में फायदा नजर आएगा तो मैं यह जरूर करूंगा। लेकिन जब मैं शॉर्ट करूंगा तो मुझे पता होना चाहिए कि ट्रेडर ब्याज गिरावट का इस्तेमाल खरीद करने के लिए करेगा क्योंकि वो हर गिरावट पर खरीद रहे हैं। ऐसे में, मैं अपनी शॉर्ट पोजीशन को जल्दी से कवर कर लूंगा। ध्यान दीजिए कि अभी तक मैंने सिर्फ एक मोटा मोटी नजरिया बनाया है लेकिन मैं अभी किसी निश्चित कीमत स्तर को नहीं चुना है।

अब मैं सोने के छोटी अवधि के चार्ट पर नजर डालूंगा, जिससे मैं ट्रेड करने के सही मौके को चुन सकूँ। नीचे के चार्ट पर नजर डालिए। वैसे तो ट्रेडिंग के मौके मुझे चार्ट के दाहिने हिस्से में मिलेंगे लेकिन अभी थोड़ा समय चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -



यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2015 में जारी किया गया होगा। लेकिन इस कॉन्ट्रैक्ट में तब तक कोई लिक्विडिटी नहीं आती है जब तक ये अपने एक्सपायरी के पास ना पहुंच जाय यानी अक्टूबर 2016 के करीब ना पहुंच जाय। हवा अगर बाजारों में बहुत ज्यादा लिक्विडिटी हो तब शायद इस कॉन्ट्रैक्ट में भी कुछ लिक्विडिटी पहले भी आ सकती है।

अब चार्ट के बाएं हिस्से पर नजर डालते हैं और ट्रेडिंग के लिए मौके ढूँढते हैं। मैं इस चार्ट को पी-सपोर्ट करूंगा जिससे मुझे पिछले कुछ समय के कैडल नजर आ सकें। मैंने 9 और 21 दिन एक्सपोनंशियल मूविंग एवरेज चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -

यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2015 में जारी किया गया होगा। लेकिन इस कॉन्ट्रैक्ट में तब तक कोई लिक्विडिटी नहीं आती है जब तक ये अपने एक्सपायरी के पास ना पहुंच जाय यानी अक्टूबर 2016 के करीब ना पहुंच जाय। हवा अगर बाजारों में बहुत ज्यादा लिक्विडिटी हो तब शायद इस कॉन्ट्रैक्ट में भी कुछ लिक्विडिटी पहले भी आ सकती है।

अब चार्ट के बाएं हिस्से पर नजर डालते हैं और ट्रेडिंग के लिए मौके ढूँढते हैं। मैं इस चार्ट को पी-सपोर्ट करूंगा जिससे मुझे पिछले कुछ समय के कैडल नजर आ सकें। मैंने 9 और 21 दिन एक्सपोनंशियल मूविंग एवरेज चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -

यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2015 में जारी किया गया होगा। लेकिन इस कॉन्ट्रैक्ट में तब तक कोई लिक्विडिटी नहीं आती है जब तक ये अपने एक्सपायरी के पास ना पहुंच जाय यानी अक्टूबर 2016 के करीब ना पहुंच जाय। हवा अगर बाजारों में बहुत ज्यादा लिक्विडिटी हो तब शायद इस कॉन्ट्रैक्ट में भी कुछ लिक्विडिटी पहले भी आ सकती है।

अब चार्ट के बाएं हिस्से पर नजर डालते हैं और ट्रेडिंग के लिए मौके ढूँढते हैं। मैं इस चार्ट को पी-सपोर्ट करूंगा जिससे मुझे पिछले कुछ समय के कैडल नजर आ सकें। मैंने 9 और 21 दिन एक्सपोनंशियल मूविंग एवरेज चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -

यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2015 में जारी किया गया होगा। लेकिन इस कॉन्ट्रैक्ट में तब तक कोई लिक्विडिटी नहीं आती है जब तक ये अपने एक्सपायरी के पास ना पहुंच जाय यानी अक्टूबर 2016 के करीब ना पहुंच जाय। हवा अगर बाजारों में बहुत ज्यादा लिक्विडिटी हो तब शायद इस कॉन्ट्रैक्ट में भी कुछ लिक्विडिटी पहले भी आ सकती है।

अब चार्ट के बाएं हिस्से पर नजर डालते हैं और ट्रेडिंग के लिए मौके ढूँढते हैं। मैं इस चार्ट को पी-सपोर्ट करूंगा जिससे मुझे पिछले कुछ समय के कैडल नजर आ सकें। मैंने 9 और 21 दिन एक्सपोनंशियल मूविंग एवरेज चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -

यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2015 में जारी किया गया होगा। लेकिन इस कॉन्ट्रैक्ट में तब तक कोई लिक्विडिटी नहीं आती है जब तक ये अपने एक्सपायरी के पास ना पहुंच जाय यानी अक्टूबर 2016 के करीब ना पहुंच जाय। हवा अगर बाजारों में बहुत ज्यादा लिक्विडिटी हो तब शायद इस कॉन्ट्रैक्ट में भी कुछ लिक्विडिटी पहले भी आ सकती है।

अब चार्ट के बाएं हिस्से पर नजर डालते हैं और ट्रेडिंग के लिए मौके ढूँढते हैं। मैं इस चार्ट को पी-सपोर्ट करूंगा जिससे मुझे पिछले कुछ समय के कैडल नजर आ सकें। मैंने 9 और 21 दिन एक्सपोनंशियल मूविंग एवरेज चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -

यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2015 में जारी किया गया होगा। लेकिन इस कॉन्ट्रैक्ट में तब तक कोई लिक्विडिटी नहीं आती है जब तक ये अपने एक्सपायरी के पास ना पहुंच जाय यानी अक्टूबर 2016 के करीब ना पहुंच जाय। हवा अगर बाजारों में बहुत ज्यादा लिक्विडिटी हो तब शायद इस कॉन्ट्रैक्ट में भी कुछ लिक्विडिटी पहले भी आ सकती है।

अब चार्ट के बाएं हिस्से पर नजर डालते हैं और ट्रेडिंग के लिए मौके ढूँढते हैं। मैं इस चार्ट को पी-सपोर्ट करूंगा जिससे मुझे पिछले कुछ समय के कैडल नजर आ सकें। मैंने 9 और 21 दिन एक्सपोनंशियल मूविंग एवरेज चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -

यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2015 में जारी किया गया होगा। लेकिन इस कॉन्ट्रैक्ट में तब तक कोई लिक्विडिटी नहीं आती है जब तक ये अपने एक्सपायरी के पास ना पहुंच जाय यानी अक्टूबर 2016 के करीब ना पहुंच जाय। हवा अगर बाजारों में बहुत ज्यादा लिक्विडिटी हो तब शायद इस कॉन्ट्रैक्ट में भी कुछ लिक्विडिटी पहले भी आ सकती है।

अब चार्ट के बाएं हिस्से पर नजर डालते हैं और ट्रेडिंग के लिए मौके ढूँढते हैं। मैं इस चार्ट को पी-सपोर्ट करूंगा जिससे मुझे पिछले कुछ समय के कैडल नजर आ सकें। मैंने 9 और 21 दिन एक्सपोनंशियल मूविंग एवरेज चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -

यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

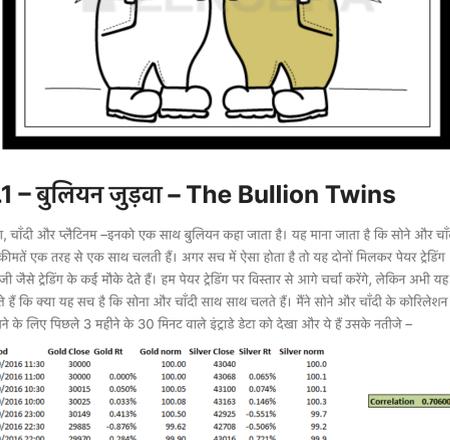
सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2015 में जारी किया गया होगा। लेकिन इस कॉन्ट्रैक्ट में तब तक कोई लिक्विडिटी नहीं आती है जब तक ये अपने एक्सपायरी के पास ना पहुंच जाय यानी अक्टूबर 2016 के करीब ना पहुंच जाय। हवा अगर बाजारों में बहुत ज्यादा लिक्विडिटी हो तब शायद इस कॉन्ट्रैक्ट में भी कुछ लिक्विडिटी पहले भी आ सकती है।

अब चार्ट के बाएं हिस्से पर नजर डालते हैं और ट्रेडिंग के लिए मौके ढूँढते हैं। मैं इस चार्ट को पी-सपोर्ट करूंगा जिससे मुझे पिछले कुछ समय के कैडल नजर आ सकें। मैंने 9 और 21 दिन एक्सपोनंशियल मूविंग एवरेज चार्ट के बाएं तरफ फोकस कीजिए -

यह चार्ट 2015 के अंतिम कुछ महीनों से शुरू हुआ है और 2016 की जून तक इसमें बहुत कम काम दिख रही है। अब कीमत देखें या वॉल्यूम दोनों हैं। क्योंकि यह बात समझने आएगी। कुछ भी बोलना नहीं है और कीमतें अपस गैप अप या गैप डाउन हो रही हैं। अपना ध्यान बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है?

सोने के कॉन्ट्रैक्ट 1 साल पहले जारी

चाँदी



9.1 – बुलियन जुड़वा – The Bullion Twins

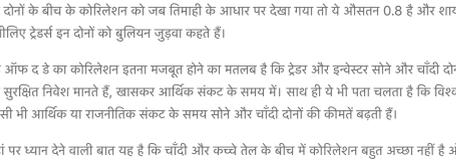
सोना, चाँदी और प्लैटिनम –इनको एक साथ बुलियन कहा जाता है। यह माना जाता है कि सोने और चाँदी की कीमतें एक तरह से एक साथ चलती हैं। अगर सच में ऐसा होता है तो यह दोनों मिलकर पेपर ट्रेडिंग स्ट्रेटजी जैसे ट्रेडिंग के कई मौके देते हैं। हम पेपर ट्रेडिंग पर विस्तार से आगे चर्चा करेंगे, लेकिन अभी यह देखते हैं कि क्या यह सच है कि सोना और चाँदी साथ साथ चलते हैं। मैंने सोने और चाँदी के कोरिलेशन को जानने के लिए पिछले 3 महीने के 30 मिनट वाले डेट्राइड डेटा को देखा और ये हैं उसके नतीजे –

Period	Gold Close	Gold Rt	Gold norm	Silver Close	Silver Rt	Silver norm
5/10/2016 11:30	3000	0.007%	100.00	43060	0.065%	100.1
5/10/2016 10:30	30015	0.050%	100.05	43100	0.074%	100.1
5/10/2016 10:00	30025	0.033%	100.08	43163	0.146%	100.3
4/10/2016 23:00	30149	0.413%	100.50	42925	-0.551%	99.7
4/10/2016 22:30	29885	-0.876%	99.62	42708	-0.506%	99.2
4/10/2016 22:00	29970	0.284%	99.90	43016	0.721%	99.8
4/10/2016 21:30	30016	0.153%	100.05	43239	0.518%	100.5
4/10/2016 21:00	30016	0.000%	100.05	43275	0.083%	100.5
4/10/2016 20:30	30140	0.413%	100.47	43353	0.180%	100.7
4/10/2016 20:00	30180	0.133%	100.60	43617	0.609%	101.3
4/10/2016 19:30	30250	0.232%	100.83	43723	0.243%	101.6
4/10/2016 19:00	30200	-0.165%	100.67	43821	0.224%	101.8
4/10/2016 18:30	30350	0.497%	101.17	44253	0.986%	102.8
4/10/2016 18:00	30380	0.099%	101.27	44278	0.050%	102.9
4/10/2016 17:30	30500	0.395%	101.67	44521	0.549%	103.0
4/10/2016 17:00	30541	0.462%	102.10	44632	0.752%	103.7
4/10/2016 16:30	30660	0.062%	102.40	44700	0.152%	103.9
4/10/2016 16:00	30630	-0.098%	102.10	44770	0.157%	104.0
4/10/2016 15:30	30630	0.000%	102.10	44808	0.085%	104.1
4/10/2016 15:00	30625	-0.016%	102.08	44750	-0.129%	104.0

इंद्रा डे में यह कोरिलेशन 0.7 निकलता है जो कि काफी अच्छा है। मेरा अनुमान है कि अगर हम इस कोरिलेशन को एंड ऑफ द डे के हिसाब से निकालें तो यह संख्या और भी बढ़ी आएगी। तो इसका मतलब है कि ये दोनों धातुएं इंद्राडे के हिसाब से साथ साथ चलती हैं। आपको याद होगा कि हमने कोरिलेशन के बारे में USD INR के अध्याय में चर्चा की थी। अगर आपने उसे नहीं पढ़ा है तो अध्याय 5 के 5.3 हिस्से को पढ़िए।

अगर इंद्राडे कोरिलेशन 0.7 जितना करीब है तो हम सोने पर लॉग और चाँदी पर शार्ट या चाँदी पर शार्ट और सोने पर लॉग जैसे ट्रेड ले सकते हैं। ये एक तरीके की हेजिंग स्ट्रेटजी होगी जहां पर एक ही ऐसेट पर आप एक समय में लॉग और शार्ट दोनों हो सकते हैं। यहां पर सिर्फ यह बताने की कोशिश की जा रही है कि इस तरह की ट्रेडिंग स्ट्रेटजी को बनाना संभव है। अभी मुझे पता चला है कि इसका कोई ट्रेड करने की जरूरत नहीं है।

ऐसा ट्रेड करने के लिए अभी और बहुत सारी चीजों को जानना जरूरी है। पेपर ट्रेडिंग के बारे में हम आगे बात करेंगे, लेकिन अभी आप सोना और चाँदी के इस इंद्रा डे चार्ट पर नजर डालिए, मैंने जानबूझ कर इसको सो से शुरू किया है जिससे आप ठीक से दोनों की तुलना कर सकें –



अगर आपको सिर्फ इस ग्राफ को दिखाया जाए और कहा जाए कि यह बताइए कि दोनों धातुएं यानी सोना और चाँदी कितना साथ साथ चलते हैं तो आप शायद यही कहेंगे कि इन दोनों के बीच में कोई संबंध नहीं है। लेकिन आंकड़े कुछ और ही बताते हैं।

जैसा मैंने पहले कहा था कि मैंने कोरिलेशन और ग्राफ बनाने के लिए यहां पर इंद्राडे डेटा लिया है। थोड़े लंबे समय का डेटा और अच्छी सूचनाएं दे सकता है। मैंने थॉमसन रॉयटर के एक सर्वे में से भी सोने और चाँदी के बीच के कोरिलेशन का डेटा निकाला है और उस डेटा से ये पता चला –

CORRELATIONS OF CHANGES IN DAILY PRICES					
	Q1 15	Q2 15	Q3 15	Q4 15	Q1 16
Gold	0.87	0.70	0.62	0.95	0.89
US\$ Index	-0.37	-0.05	-0.05	-0.75	-0.85
Oil (WTI)	-0.16	-0.08	0.32	0.84	0.42
CMB Spot Metals	0.42	0.50	0.25	0.85	0.85
CSCI	-0.42	0.08	0.44	0.84	0.64
Copper	-0.48	0.59	0.39	0.92	0.74
S&P 500	-0.30	0.29	0.27	-0.13	0.41

इन दोनों के बीच के कोरिलेशन को जब तिमाही के आधार पर देखा गया तो ये औसतन 0.8 है और शायद इसीलिए ट्रेडर्स इन दोनों को बुलियन जुड़वा कहते हैं।

एंड ऑफ द डे का कोरिलेशन इतना मजबूत होने का मतलब है कि ट्रेडर और इन्वेस्टर सोने और चाँदी दोनों को सुरक्षित निवेश मानते हैं, खासकर आर्थिक संकट के समय में। साथ ही ये भी पता चलता है कि विश्व के किसी भी आर्थिक या राजनीतिक संकट के समय सोने और चाँदी दोनों की कीमतें बढ़ती हैं।

यहां पर ध्यान देने वाली बात यह है कि चाँदी और कच्चे तेल के बीच में कोरिलेशन बहुत अच्छा नहीं है और आप इस पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

9.2 – चाँदी से जुड़ी जरूरी जानकारी

चाँदी का उपयोग औद्योगिक उत्पादन में, फोटोग्राफी में, फेशन में और इलेक्ट्रिक और इलेक्ट्रॉनिक सामानों में होता है। इसीलिए चाँदी की मांग हमेशा बनी रहती है। अमेरिका के सिल्वर इंस्टिट्यूट ने लंदन ही में किए गए अपने सर्वे में कहा है कि दुनिया भर में चाँदी की मांग 1170.5 मिलियन आउंस की है। अगर इतिहास देखें तो दिखेगा कि चाँदी की मांग हर साल करीब 2.5% बढ़ जाती है। इसमें से ज्यादातर मांग औद्योगिक उत्पादन से ही आती है। इससे साफ है कि चाँदी की मांग इस बात पर निर्भर करती है कि दुनिया भर में वस्तुओं का उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन कैसा चल रहा है। उसके लिए भी खास तौर पर चीन और भारत जैसे अर्थव्यवस्था पर नजर रखी जाती है।

दूसरी तरफ अगर सप्लाई पर नजर डालें तो, दुनिया भर में खदानों से निकलने वाली चाँदी, सरकारी बिक्री और स्क्रेप सहित सभी तरह की चाँदी को मिलाकर कुल उत्पादन 1040.6 मिलियन आउंस का होता है। इससे साफ है कि चाँदी एक ऐसी क्मोडिटी है जिसमें सप्लाई मांग से कम है। वास्तव में चाँदी की सप्लाई में सालों से बड़ी बढ़ोतरी नहीं हुई है। इसकी सप्लाई में करीब 1.4% का ही इजाफा हुआ है।

नीचे के चार्ट में आप चाँदी की डिमांड और सप्लाई पर नजर डाल सकते हैं –

TABLE 1 - WORLD SILVER SUPPLY AND DEMAND										
(Million ounces)	2008	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015
Supply										
Mine Production	643.4	667.7	684.7	717.3	753.0	757.6	790.8	823.7	868.3	886.7
Net Government Sales	78.5	42.5	30.5	15.6	44.2	12.0	7.4	7.9	-	-
Scrap	207.1	204.2	202.0	201.2	227.5	261.5	295.5	302.1	368.3	346.1
Net Recycling Supply	-78.8	-28.1	-8.7	-22.4	-50.4	-32.2	-42.1	-34.3	-36.8	-7.6
Total Supply	871.3	896.3	908.6	916.7	1,075.2	1,043.3	1,094.6	988.9	1,053.3	1,040.6
Demand										
Jewelry	174.5	182.3	177.6	176.9	190.0	187.9	185.4	217.8	224.0	226.5
Coins & Bars	50.7	56.1	59.3	91.6	144.4	210.4	190.5	242.1	236.1	292.3
Silverware	62.1	60.2	58.4	53.2	51.6	49.2	42.7	58.9	60.7	62.9
Industrial Fabrication	648.9	661.0	656.8	542.6	616.3	615.0	619.1	679.1	611.2	586.2
—of which Electrical & Electronics	242.3	262.5	271.7	227.4	301.2	290.8	266.7	296.0	263.4	246.7
—of which Brazing Alloys & Solders	54.7	58.3	61.6	53.6	60.9	62.7	60.6	63.2	66.1	61.1
—of which Photography	142.2	117.0	98.2	71.6	67.5	61.2	54.2	50.5	48.5	46.7
—of which "Photovoltaic"	-	-	-	-	-	75.8	62.9	62.5	68.2	77.6
—of which Ethylene Oxide	6.6	7.9	7.4	4.8	8.7	6.2	4.7	7.7	5.0	32.2
—of which Other Industrial*	203.1	215.3	219.9	180.4	212.1	179.4	165.8	169.3	165.1	146.4
Physical Demand	936.3	959.6	1,085.1	864.2	1,036.4	1,121.8	1,004.6	1,137.9	1,131.9	1,170.5
Physical Surplus/Deficit	-99.0	-69.3	-76.6	52.5	38.8	-78.5	-2.0	-149.0	-78.6	-129.8
ETP Inventory Build	126.8	54.8	101.3	156.9	125.5	-24.0	155.3	2.5	1.5	-17.7
Exchange Inventory Build	-9.0	21.5	-7.1	-5.3	-7.4	12.2	62.2	8.9	-8.9	0.3
Net Balance	-196.8	-145.5	-270.7	-89.2	-83.3	-66.0	-19.5	-160.2	-71.3	-112.5
Silver Price, \$ per oz.	11.95	13.38	14.99	14.67	20.19	35.12	31.15	23.79	19.08	16.68
* Photovoltaic demand included in "Other Industrial" prior to 2011										

इस पूरे सर्वे की रिपोर्ट को आप यहां पढ़ सकते हैं। **survey report**

डिमांड और सप्लाई की स्थिति को देखते हुए यह साफ है कि चाँदी में ट्रेड करने के काफी मौके मिल सकते हैं। तो अब अगला सवाल यह है कि चाँदी की कीमत कौन तय करता है। वास्तव में चाँदी की कीमत भी उसी तरीके से तय होती है जैसे सोने की कीमत तय होती है, यानी लंदन में पार्लिसिंग बैंक के द्वारा ये कीमत तय की जाती है। सोने और चाँदी की कीमत कैसे तय होती है यह जानने के लिए आप इसे पढ़ सकते हैं

–**read this**.

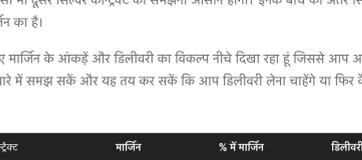
9.3 – चाँदी के कॉन्ट्रैक्ट

चाँदी के कॉन्ट्रैक्ट 4 तरीके के होते हैं जिनको आप MCX पर ट्रेड कर सकते हैं। इन कॉन्ट्रैक्ट के बीच का अंतर मुख्यतः उनकी कीमत का अंतर होता है। इसी वजह से उनके लिए मार्जिन भी अलग-अलग होती है। एक नजर डालिए इन चारों कॉन्ट्रैक्ट पर –

कॉन्ट्रैक्ट	प्रारंभ कोट	लॉट साइज	टिक साइज	P&L	एक्सपायरी	डिलीवरी यूनिट
सिल्वर	1	30 किलो	Rs.1/टिक	Rs.30/टिक	एक्सपायरी महीने का पाँचवा दिन	30 किलो
सिल्वर मिनी	1	5 किलो	Rs.1/टिक	Rs.5/टिक	एक्सपायरी महीने का अंतिम दिन	30 किलो
सिल्वर माइक्रो	1	1 किलो	Rs.1/टिक	Rs.1/टिक	एक्सपायरी महीने का अंतिम दिन	30 किलो
सिल्वर 1000	1	1 किलो	Rs.1/टिक	Rs.1/टिक	एक्सपायरी महीने का अंतिम दिन	1 किलो

ऊपर के चारों कॉन्ट्रैक्ट में सिल्वर 30kg कॉन्ट्रैक्ट और सिल्वर मिनी कॉन्ट्रैक्ट सबसे ज्यादा ट्रेड होते हैं। हम इन पर विस्तार से चर्चा करेंगे। सबसे पहले सिल्वर के मुख्य कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं।

सिल्वर कॉन्ट्रैक्ट में चाँदी की कीमत को किलोग्राम में कोट किया जाता है। इसका मतलब यह है कि MCX के ट्रेडिंग टर्मिनल पर चाँदी के कॉन्ट्रैक्ट की जो कीमत दिखाई जाती है वो 1 किलो चाँदी की होती है। इस कीमत में इंपोर्ट ड्यूटी, टैक्स और दूसरे तरीके के शुल्क शामिल होते हैं। नीचे के स्क्रीनशॉट पर नजर डालिए, इसे काइंट से लिया गया है –



चाँदी के दिसंबर फ्यूचर की मौजूदा कीमत 42,266 रुपए है, ध्यान दें कि ये प्रति किलो कीमत है। ये कॉन्ट्रैक्ट 30 किलोग्राम (लॉट साइज) का है इसलिए कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी –

$$= 30 * 42,266$$

$$= \text{Rs } 12,67,980$$

चाँदी पर मार्जिन करीब 5% होती है। नीचे के चित्र में आप देख सकते हैं कि इन कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेड करने के लिए कितना मार्जिन देना पड़ेगा –

Exchange: MCX

Symbol: SILVER DEC-16

Net quantity: 1

Contract (margin requirement): **Rs: 68,619**

Exposure margin: **Rs: 0**

Total margin: **Rs: 68,619**

अगर प्रतिशत में निकालना हो तो

$$1267980 / 68619$$

$$= 5.41\%$$

प्रति टिक P&L निकालने के लिए इस फार्मूले का इस्तेमाल करना होगा

$$\text{प्रति टिक P\&L} = (\text{लॉट साइज} / \text{क्वोटेशन}) * \text{टिक साइज}$$

$$= (30 \text{ kgs} / 1 \text{ kg}) * \text{Rs.1/-}$$

$$= \text{Rs. } 30\text{-/}$$

तो चाँदी के हर टिक पर आप या तो Rs.30/- कमाते हैं या Rs.30/- गंवाते हैं

एक्सपायरी के हिसाब से देखें तो अक्टूबर 2016 को चाँदी के कॉन्ट्रैक्ट मौजूद हैं वो हैं (सभी कॉन्ट्रैक्ट उस महीने की 5 तारीख को एक्सपायर होते हैं) –

- दिसंबर 2016
- मार्च 2017
- मई 2017
- जुलाई 2017
- सितंबर 2017

जब दिसंबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट एक्सपायर होता है तो दिसंबर 2017 का कॉन्ट्रैक्ट जारी होता है। अरब तक आप यह बात जान चुके हैं कि सबसे ज्यादा लिक्विड कॉन्ट्रैक्ट वह होते हैं जो अपनी एक्सपायरी के करीब होते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर हम अक्टूबर 2016 में हैं और हमें चाँदी में ट्रेड करना है तो मैं दिसंबर 2016 के कॉन्ट्रैक्ट को चुनूंगा।

यहां यह भी याद रखिए कि इक्विटी में सेटलमेंट हमेशा कैश में होता है, फिजिकल नहीं होता है। लेकिन जब क्मोडिटी की बात आती है तो सेटलमेंट फिजिकल होता है और इसलिए यहां पर डिलीवरी देनी होती है। इसका मतलब है कि अगर आपने चाँदी के 10 लॉट ले रखे हैं और आपने डिलीवरी लेना चुना है तो आपको 300 किलो चाँदी की डिलीवरी मिलेगी। इस डिलीवरी को लेने के लिए आपको शुल्क में ही इंगित करना होता है, ये काम आप एक्सपायरी के 4 दिन पहले तक कर सकते हैं। इसका मतलब है कि अगर एक्सपायरी 5 तारीख को है तो आपको डिलीवरी लेने का अपना इरादा 1 तारीख तक बताना होता है।

अगर आप ज़ेरोधा पर ट्रेड कर रहे हैं तो हम आपको इस बात की इजाजत नहीं देते हैं कि आप किसी क्मोडिटी की फिजिकल डिलीवरी लें। इसका मतलब यह है कि आपको अपनी पोजीशन को एक्सपायरी महीने की 1 तारीख के पहले क्लोज करना होगा। जहां तक मेरी बात है मैं व्यक्तिगत तौर पर यह पसंद करता हूँ कि अपनी पोजीशन को जल्दी से जल्दी क्लोज कर सकें और क्मोडिटी की फिजिकल डिलीवरी के चक्कर में ना पड़ूँ।

सिल्वर देने वाली एक और बात है कि चाँदी के मेन कॉन्ट्रैक्ट में डिलीवरी जरूरी है लेकिन सिल्वर मिनी और इन्वर माइक्रो कॉन्ट्रैक्ट में यह जरूरी नहीं है। इसका मतलब यह है कि आप सिल्वर मिनी या माइक्रो कॉन्ट्रैक्ट को एक्सपायर होने दे सकते हैं और कैश में सेटलमेंट कर सकते हैं। लेकिन सिल्वर 30kg कॉन्ट्रैक्ट में आपके पास यह सुविधा नहीं है कि आप कैश में सेटल कर सकें।

अब एक और जरूरी बात, जरा इस चित्र पर नजर डालिए –

Commodity	Unit	Location
SILVER1000	1 KGS	AHMEDABAD
SILVERMICRO	1 KGS	NEWDELHI
SOYABEAN	100 KGS	INDORE
SUGARMEDEL	100 KGS	DELHI
SUGARSKL	100 KGS	KOLHAPUR
SUGARSKLP	100 KGS	KOLHAPUR
TIN	1 KGS	MUMBAI
WHEAT	100 KGS	DELHI
ZINC	1 KGS	MUMBAI
ZINCMINI	1 KGS	MUMBAI

ऊपर के टेबल में आप देखेंगे कि हर क्मोडिटी के साथ एक जगह का नाम भी दिया गया है। जैसे उदाहरण के तौर पर सिल्वर माइक्रो के आगे अहमदाबाद का नाम लिखा है। इसका क्या मतलब है ?

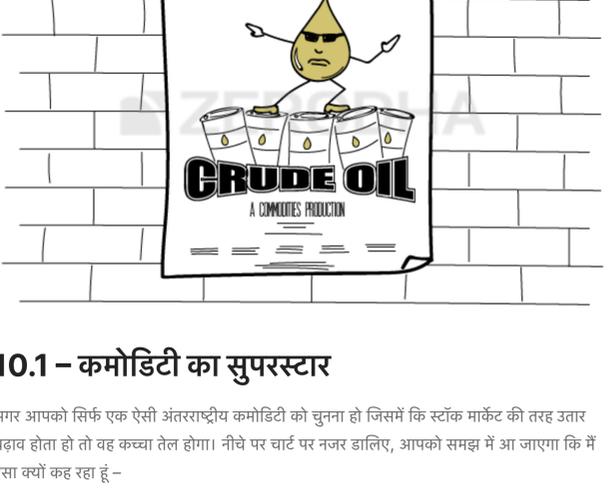
हमें पता है कि एक्सपायरी पर स्पॉट मार्केट में अंडरलाइंग की कीमत और फ्यूचर कीमत एक जगह पर आकर मिल जाती है। इक्विटी के मामले में तो अंडरलाइंग और उसका फ्यूचर एक ही टैकफॉर्म पर ट्रेड होते हैं। मतलब NSE या BSE पर। उदाहरण के तौर पर, इकोसिस का स्पॉट NSE पर इकोसिस के फ्यूचर कीमत में उला जाएगा, लेकिन क्मोडिटी के मामले में ऐसा नहीं होता क्योंकि यहां पर स्पॉट मार्केट अलग होता है। उदाहरण के तौर पर काली मिर्च और रबर – कोच्चि में ट्रेड होते हैं, सोना मुंबई और अहमदाबाद में ट्रेड होता है। इसलिए एक्सपायरी पर सोने के फ्यूचर की कीमत सोने के किस स्पॉट कीमत से मिलेगी, मुंबई की कीमत से मिलेगी या अहमदाबाद की कीमत से? इसी वजह से MCX में हर क्मोडिटी के आगे उस क्मोडिटी के स्पॉट मार्केट का नाम लिखा है जिससे आपको पता चल सके कि एक्सपायरी पर कीमत किस जगह की स्पॉट कीमत से मिलेगी।

9.4 – चाँदी के दूसरे कॉन्ट्रैक्ट

अगर आपने ऊपर बताए गए मेन सिल्वर कॉन्ट्रैक्ट की जानकारी को समझ लिया है तो आपके लिए MCX पर ट्रेड हो कर किसी भी दूसरे सिल्वर कॉन्ट्रैक्ट को समझना आसान होगा। इनके बीच का अंतर सिर्फ लॉट साइज का और मार्जिन का है।

मैं आपके लिए मार्जिन के आंकड़े और डिलीवरी का विकल्प नीचे दिखा रहा हूँ जिससे आप अलग-अलग कॉन्ट्रैक्ट के बारे में समझ सकें और यह तय कर सकें कि आप डिलीवरी लेना चाहेगी या फिर कैश में सेटल करेंगे।

कच्चा तेल (भाग 1), इतिहास



10.1 – कमोडिटी का सुपरस्टार

अगर आपको सिर्फ एक ऐसी अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी को चुनना हो जिसमें कि स्टॉक मार्केट की तरह उतार चढ़ाव होता हो तो वह कच्चा तेल होगा। नीचे पर चार्ट पर नजर डालिए, आपको समझ में आ जाएगा कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ –



आपको दिखेगा- \$140 तक की तेज उछाल, उसके बाद एक गिरावट और फिर \$110 तक की बढ़त फिर से वापस \$30 तक गिरावट। कच्चा तेल का चार्ट आपके अंदर की सारी भावनाओं को सामने ले आता है, जैसा कि एक अच्छी फिल्म में होता है। जैसा कि आप जानते हैं कि यह एक अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी है। लाखों लोग इसमें ट्रेड करते हैं और इसी वजह से इसमें ट्रेड करना काफी जटिल यानी पेचीदा है।

तो यहां कच्चे तेल में हो क्या रहा है? कच्चा तेल \$115 से \$28 तक क्यों गिरा? इस तरह का भयानक डर बाजार में क्यों फैला? कच्चे तेल में अब क्या हो रहा है? अब यह किधर जा रहा है? यह सब समझने के लिए हमें थोड़ा सा इतिहास में जाना पड़ेगा – 2014 और 2015 की घटनाओं में।

इस अध्याय में हम यही करेंगे। इस अध्याय को ठीक से समझने के लिए पीछे जाते हैं और 2015 के पहले 6 महीनों को देखते हैं कि उस समय क्या हो रहा था? –

10.2 – संकट का पुनरावलोकन

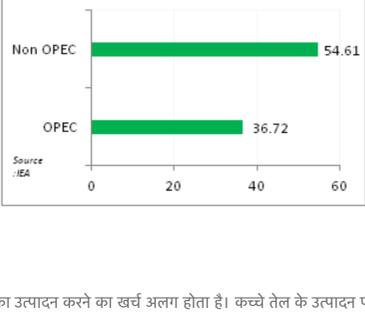
जनवरी 2014 में कच्चा तेल \$110 प्रति बैरल था जो कि जनवरी 2016 में \$28 प्रति बैरल तक गिर गया। ब्रेंट क्रूड के इतिहास में पिछले 5 सालों में शायद यह अब तक की सबसे बड़ी गिरावट थी। वैसे इस गिरावट से कई कंपनियों को और कई देशों को बहुत फायदा हुआ। लेकिन कच्चा तेल पैदा करने वाली अर्थव्यवस्थाओं पर इसका बहुत बुरा असर पड़ा। किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि कच्चा तेल 75% तक गिर जाएगा। तो क्या यह इस गिरावट का सबसे निचला स्तर यानी बॉटम था? ये किसी को नहीं पता, लेकिन यह गिरावट जितनी तेज थी उसको देख कर यह भरोसा नहीं होता कि यहां बॉटम बन चुका है या गिरावट अपने निचले स्तर तक पहुंच गई है।

तो, वास्तव में हुआ क्या था?

कच्चे तेल में आई इस गिरावट को समझने के लिए हमें यह समझना होगा कि कच्चे तेल का कारोबार कैसे होता है और इस गिरावट के पहले तक इस धंधे को कैसे चलाया जाता था? इस चर्चा से आपको कच्चे तेल व्यापार के बारे में काफी कुछ समझने को मिल सकता है। कच्चे तेल का उत्पादन करने वाले देश हर दिन कई मिलियन बैरल कच्चा तेल, अमेरिका, चीन, भारत और यूरोप के अलग-अलग देशों को एक्सपोर्ट करते हैं। कच्चा तेल निकालने वाले देशों को दो समूहों में बांटा जाता है

- ऑर्गेनाइजेशन आफ पेट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कंट्रीज यानी ओपेक (OPEC) जिनमें सऊदी अरब, कतर, कुवैत और UAE आदि शामिल हैं।
- कच्चे तेल का उत्पादन करने वाले दूसरे देश जैसे ब्राजील, कनाडा, रूस, मैक्सिको, नॉर्वे आदि जो कि OPEC का हिस्सा नहीं है और इसलिए उनको नॉन ओपेक देश कहा जाता है।

इन दोनों समूहों के देशों यानी ओपेक और नॉन ओपेक देशों के द्वारा करीब 90 मिलियन बैरल यानी 9 करोड़ बैरल कच्चा तेल हर दिन निकाला जाता है। नीचे के टेबल में आप यह देख सकते हैं कि ओपेक देश कितने तेल का उत्पादन करते हैं और नॉन ओपेक देश कितने कच्चे तेल का उत्पादन करते हैं –



कारण

हर देश में कच्चे तेल का उत्पादन करने का खर्च अलग होता है। कच्चे तेल के उत्पादन पर उनका खर्च कितना होता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश की आर्थिक हालत कैसी है और वह किस तरह की टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रहा है। उत्पादन का खर्च भले ही सबके लिए अलग-अलग हो लेकिन कच्चे तेल की कीमत हमेशा बाजार तय करता है। ऐसे में हर देश की हमेशा ये कोशिश होती है कि वो कच्चा तेल उस कीमत पर बेच सके जहां उसे अपने उत्पादन खर्च से ज्यादा पैसा मिल सके। कोई भी देश ब्रेक इवन प्वाइंट (प्रति बैरल उत्पादन खर्च) से कम की कीमत पर कच्चा तेल बेचने को तैयार नहीं होता क्योंकि उससे उनके देश के बजट पर बुरा असर पड़ता है। नीचे के टेबल में आप OPEC देशों के कच्चे तेल उत्पादन का प्रति बैरल खर्च यानी उनका ब्रेकइवन प्वाइंट देख सकते हैं –

देश	प्रति बैरल ब्रेकइवन प्वाइंट*
इरान	\$130.7
अल्जीरिया	\$130.5
नाइजीरिया	\$122.5
वेनेजुएला	\$117.5
सऊदी अरब	\$106.0
इराक	\$100.6
UAE	\$77.3
कतर	\$60.0
कुवैत	\$54.0

इस कीमत के आधार पर आप देख सकते हैं कि अगर 2013 तक कच्चा तेल 100 डॉलर के ऊपर बिक रहा था तो यह कच्चे तेल का उत्पादन करने वाले इन देशों के लिए बहुत ही अच्छी स्थिति थी। लेकिन पिछले कुछ समय में हुए बदलाव ने कच्चे तेल के कारोबार से जुड़ी चीजों को काफी हद तक बदल दिया है। खासकर इन तीन मुख्य घटनाओं ने कच्चे तेल की कीमतों पर काफी असर डाला

- अमेरिकी शेल ऑयल** – अमेरिकी शेल ऑयल एक ऐसा कच्चा तेल है जो ऑयल शेल (एक तरीके का पत्थर) से निकलता है। यह कच्चे तेल की तरफ का ही उत्पाद है, इसे निकालने की टेक्नोलॉजी विकसित हो चुकी है और इसका उत्पादन का खर्च काफी कम होता है। जिसकी वजह से इस तरह के तेल का उत्पादन काफी बढ़ गया और बाजार में सस्ता कच्चा तेल मिलने लगा है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि अमेरिका के इस शेल ऑयल का इतना भंडार है कि वह कई पीढ़ियों तक चलेगा। अमेरिका के 2 राज्य–टेक्सास (Texas) और नॉर्थ डकोटा (North Dakota) में होने वाले इस शेल ऑयल के उत्पादन से अमेरिका में कच्चे तेल का आयात कम हो गया है। जिसकी वजह से कच्चे तेल की कीमतों में काफी गिरावट की शुरुआत हुई।
- तेल उत्पादक देशों के सामूहिक प्रयास की कमी** – अमेरिका में शेल ऑयल का उत्पादन बढ़ने की वजह से कच्चे तेल में गिरावट आई और ऐसे में उम्मीद थी कि कच्चे तेल का उत्पादन करने वाले देश अपना उत्पादन कम करेंगे जिससे कि सप्लाई और डिमांड के बीच में एक संतुलन बना रहे। लेकिन ओपेक देश ना ही अपने सदस्यों को और ना ही गैर ओपेक देशों को इस बात के लिए समझा पाए कि कच्चे तेल का उत्पादन कम कर के तेल की कीमत को गिरने से रोका जा सकता है। वास्तव में ये माना गया कि कच्चे तेल का उत्पादन कम करना, कच्चे तेल के उत्पादन करते रहने के मुकाबले ज्यादा महंगा पड़ेगा।
- चीन का असर** – चीन दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में से एक है जो कि लौह अयस्क, कोयला, कच्चा तेल जैसी बहुत सारी अंतर्राष्ट्रीय कमोडिटी का आयात करता है। वास्तव में 2013 में चीन ने कच्चे तेल के आयात के मामले में अमेरिका को भी पीछे छोड़ दिया था, लेकिन अब ऐसा महसूस होने लगा है कि चीन की अर्थव्यवस्था उतनी तेजी से नहीं बढ़ रही है जैसा कि पहले बड़ रही थी। जिसकी वजह से अंतर्राष्ट्रीय कमोडिटी की मांग कम हो गयी है। इस वजह से भी कच्चे तेल की कीमत में आ रही गिरावट पर रोक लगी।
- बाजार की हालत** – इन तीनों वजह से कच्चे तेल में एक बिकवाली आई और इस बिकवाली में आग में घी वाला काम किया ट्रेडरों ने जिन्होंने कच्चे तेल के कॉन्ट्रैक्ट में काफी शार्ट पोजीशन बना रखी थी।

आमतौर पर जब कच्चा तेल गिरता है तो अमेरिकी डॉलर उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले मजबूत होता है। ऐसा होना स्वाभाविक भी है क्योंकि जब कच्चे तेल की कीमत बढ़ती है तो अमेरिका को अकाउंट डेफिसिट बढ़ता है (याद रहे कि अमेरिका मध्य एशिया से कच्चा तेल आयात करता है), ऐसा होना अमेरिकी डॉलर के लिए एक अच्छा संकेत नहीं होता है। इसी वजह से, जब इसका उल्टा होता है यानी कच्चा तेल गिरता है तो अमेरिकी डॉलर मजबूत होता है। इस तरह से डॉलर और कच्चे तेल के बीच में उलटा यानी इनवर्स संबंध है। याद कीजिए कि सन 2008 में जब कच्चा तेल अपने सबसे ज्यादा ऊंचाई पर यानी \$148 की ऊंचाई पर पहुंच गया था तो अमेरिकी डॉलर यूरो के मुकाबले 1.6 पर था।

रूस का असर

गैर ओपेक देशों में से रूस कच्चे तेल का सबसे बड़ा उत्पादक और एक्सपोर्टर यानी निर्यातक है। रूस का फेडरेशन करीब करीब 40% कच्चे तेल का एक्सपोर्ट करता है। कच्चे तेल में आई गिरावट की वजह से रूस की अर्थव्यवस्था काफी कमजोर पड़ गई। जो तीन कारण रूस के विरुद्ध काम कर रहे थे, उनमें से दो कच्चे तेल से जुड़े हुए थे

- तेल का कीमत**- रूस की अर्थव्यवस्था को ठीक रखने के लिए कच्चे तेल की कीमत \$105 से \$107 के आसपास होनी चाहिए। इसलिए जब कच्चा तेल \$50 तक पहुंच गया तो रूस के बजट पर इसका काफी असर पड़ा
- रुबल का संकट**- याद रखिए कि रूस एक उभरती अर्थव्यवस्था है। कच्चे तेल की कीमत में गिरावट आने की वजह से रूस की करेंसी रुबल यूएस डॉलर के मुकाबले काफी कमजोर हो गई। ये कमजोरी इतनी बड़ी कि रूस के सेंट्रल बैंक को ब्याज दरें 7.5% तक बढ़ानी पड़ी, जिससे कि रुबल को और ज्यादा टूटने से बचाया जा सके।
- क्रिमिया का प्रभाव** – रूस को यूक्रेन को लेकर जो रवैया था, उसे देखते हुए कई पश्चिमी देशों ने रूस के ऊपर प्रतिबंध लगा दिए। इस वजह से रूस का दूसरे देशों पूंजी लेना मुश्किल हो गया। ऐसा तब हुआ जब रूस को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी।

इसी समय सीरिया में एक अलग से संकट पैदा हो गया, साथ ही दूसरे कई और स्थानीय मुद्दे भी पैदा हो गए। इन सबकी वजह से रूस में हालात सुधरने के उम्मीद और भी कम हो गई।

भारत के आर्थिक हालात का असर

अगर ऊपर से देखा जाए तो कच्चे तेल में आने वाली गिरावट भारत जैसे देश के लिए काफी फायदेमंद है क्योंकि इस वजह से पेट्रोलियम पर दी जाने वाली सब्सिडी कम होगी। भारत कच्चे तेल का काफी आयात करता है (कुल जरूरत का करीब करीब दो तिहाई) और इसकी वजह से ऑयल इंपोर्ट पर उसे काफी खर्च करना पड़ता है। इसीलिए कच्चे तेल की कीमत गिरने का मतलब है कि फिस्कल डेफिसिट में कमी आएगी, इन्फ्लेशन में कमी आएगी और ब्याज दरें कम हो सकेंगी। भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए ये सारी चीजें अच्छी हैं।

लेकिन कच्चे तेल में गिरावट का एक और आयाम है। जहां कच्चे तेल की कीमत कम होने से आयात का खर्च गिरेगा, वहीं एक्सपोर्ट से होने वाली हमारी कमाई पर भी असर पड़ेगा। भारत से होने वाला ज्यादातर एक्सपोर्ट UAE, अमेरिका, सऊदी अरब, कुवैत, ईरान, चीन जैसे देशों को होता है जिनमें से ज्यादातर देशों की अर्थव्यवस्था कच्चे तेल पर निर्भर करती है। कच्चे तेल की कीमत गिरने की वजह से इन देशों के खर्च करने की क्षमता घटेगी और इसलिए भारत कऽ एक्सपोर्ट पर इसका असर पड़ेगा।

अगर आप अक्टूबर 2014 में RBI द्वारा जारी किए गए इंपोर्ट और एक्सपोर्ट के डेटा को देखें तो इसमें ये तथ्य साफ दिखेगा- जहां कच्चे तेल के आयात पर होने वाला खर्च 19% कम हुआ है, हमारा एक्सपोर्ट भी 5% कम हुआ है। साफ है कि कच्चे तेल की कीमत में कमी से उतना बड़ा फायदा नहीं हुआ जितना दिखता है। कच्चे तेल की गिरावट क्या असर डाल सकती है इसका एक नमूना 6 जनवरी 2015 को हमें देखने को मिला जब NSE निफ्टी 255 प्वाइंट यानी 3% गिरा और बाजार में एक हाहाकार मच गया।

भारतीय कंपनियों पर असर

सरकारी ऑयल कंपनियों जैसे एचपीसीएल, बीपीसीएल, इंडियन ऑयल आदि को कच्चे तेल की कीमतों में आई गिरावट का सीधा फायदा मिलता है। कच्चे तेल की कीमत में गिरावट की वजह से इन कंपनियों को वर्किंग कैपिटल की जरूरत कम पड़ती है। बीपीसीएल और एचपीसीएल ने तो वास्तव में अपने कुल शॉर्ट टर्म कर्ज का 50% से 30% पिछले 2 साल में चुका दिया है। अगर कच्चा तेल \$50 के आसपास स्थिर हो गया तो फिर इन कंपनियों के लिए यह बहुत फायदे वाली बात होगी, इससे उनकी बैलेंस शीट सुधरेगी और कमाई भी बढ़ेगी।

क्या ये अंत है

अब सब इस बात पर निर्भर करता है कि कच्चे तेल की सप्लाई और डिमांड किस तरीके से रहती है। जैसा कि सऊदी के राजकुमार अल-वालीद बिन तलाल ने कहा कि अगर सप्लाई जहां है वही रहती है और डिमांड भी जहां है वही रहती है, तो कीमत यहां पर बॉटम नहीं बनाएगी, उसमें और गिरावट संभव है। साथ ही अमेरिका ने कच्चे तेल के निर्यात को लगात 40 साल पुराना प्रतिबंध हटा दिया है इसका मतलब है कि बाजार में कच्चे तेल की सप्लाई बढ़ेगी और कीमतों पर भी दबाव बढ़ेगा।

सितंबर 2016 में ओपेक देशों में अंततः इस बात के लिए सहमति हो गई कि कच्चे तेल का उत्पादन कम किया जाए। आप ब्लूमबर्ग के इस लेख को यहां पढ़ सकते हैं। **article on Bloomberg.**

वैसे तो अमेरिकन शेल ऑयल ने बाजार में हलचल मचा दी है, लेकिन इसका एक दूसरा हिस्सा भी है। जो कंपनियां इस शेल ऑयल को निकाल रही हैं वह कितनी मजबूत हैं, क्या उनके बैलेंस शीट में ज्यादा लेवरेज है, क्या वह शेल ऑयल रिजर्व को जरूरत से ज्यादा बढ़ा बता रही हैं, आगे जाते हुए इन सवालों का जवाब बाजार को जरूर मिलेगा और इसका असर कच्चे तेल की कीमतों पर पड़ेगा।

लेकिन अगर अभी आप मुझसे पूछे कि क्या कच्चा तेल अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है तो इसका जवाब देना मेरे लिए संभव नहीं है।

ध्यान दीजिए कि वैरिस्टी के सारे दूसरे अध्यायों की तरह इस अध्याय में कोई मुख्य बातें नहीं हैं। मैंने यहां सिर्फ यह बताया है कि कच्चे तेल में क्या हो रहा है। आगे जाते हुए यह सिर्फ एक ऐसा इतिहास बन सकता है जिसकी कोई जरूरत नहीं रह जाए।

ध्यान दें – मैंने यह सारी बातें द स्पेशल रिपोर्ट में से ली हैं जो कि मैंने दलाल स्ट्रीट इन्व्हेस्टमेंट जर्नल के लिए लिखा था। ***The special report***

कच्चा तेल (भाग 2), कच्चे तेल का परितंत्र

11.1 – कंपनियों की जानकारी

मुझे उम्मीद है कि पिछले अध्याय में आपको कच्चे तेल के मौजूदा फंडामेंटल के बारे में जानकारी मिल गई होगी। हो सकता है कि आप में से कुछ लोग यह भी जानना चाहते हैं कि कच्चा तेल कैसे निकाला जाता है और उसे रिफाइनरी तक कैसे पहुंचाया जाता है? यूट्यूब पर चल रहा 'आयल एंड गैस वीडियो' चैनल ये काम बहुत अच्छे तरीके से करता है, जिसमें छोटे-छोटे वीडियो के जरिए इस बारे में बताया जाता है। अगर आप सारे वीडियो नहीं देख सकते हैं तो कम से कम इस एक वीडियो को जरूर देखें। **watch this one**

इस एनिमेटेड वीडियो में बताया गया है कि कैसे कच्चे तेल को जमीन की नीचे या समुंद्र के नीचे से निकाला जाता है। इस वीडियो को देख कर आपको समझ में आएगा कि आयल रिग कैसे करते हैं? वो बड़े-बड़े प्लेटफॉर्म होते हैं जो समंदर में तैरते रहते हैं और जिनकी चिमनी में से आग निकलती रहती है। अबन ऑफशोर, सोलन एक्सप्लोरेशन, केर्न इंडिया आदि कुछ ऐसी कंपनियां हैं जो इस तरीके के इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करती हैं। मुझे पता है कि बहुत सारे ट्रेडर और कई निवेशक इन कंपनियों में निवेश करते हैं जबकि उनको यह भी नहीं पता होता कि ये कंपनियां काम क्या करती हैं। मुझे लगता है कि यह अच्छा तरीका नहीं है। आपको हमेशा ऐसी कंपनियों में निवेश करना चाहिए जिनके बारे में आप जानते हों। इसीलिए मैं यह कोशिश करूंगा कि कच्चे तेल से जुड़ी लिस्टेड कंपनियों के बारे में आप जान लें और इसी उद्देश्य से मैं यहां पर इस इंडस्ट्री के ढांचे के बारे में भी बात करूंगा।

11.2 – अपस्ट्रीम, डाउनस्ट्रीम और मिडस्ट्रीम

मैं यहां एक बात साफ कर दू कि मैं ऑयल और गैस सेक्टर का एक्सपर्ट नहीं हूँ, मेरी जानकारी बहुत सीमित है। लेकिन कच्चे तेल के एक ट्रेडर के तौर पर मुझे इस इंडस्ट्री के कामकाज को समझना जरूरी लगता है, क्योंकि इसे समझना तभी मुझे इसमें ट्रेड के सही मौके मिल सकते हैं। उदाहरण के तौर पर- हो सकता है कि कच्चे तेल के कारोबार में कुछ बड़े बदलाव हो रहे हों और उनका कच्चे तेल के कारोबार पर कोई बड़ा असर नहीं पड़ रहा हो, लेकिन डाउनस्ट्रीम कंपनियों पर उसका असर पड़ सकता है और उनमें ट्रेडिंग का एक अच्छा मौका मिल जाए। इसीलिए यह जरूरी है कि आप इस इंडस्ट्री के ढांचे को समझें और इसमें कहां-कहां ट्रेडिंग के मौके बन सकते हैं उसको पहचानें। मैं इसी बात की कोशिश करूंगा कि आप इस इंडस्ट्री के बारे में ज्यादा से ज्यादा जान सकें और इस सेक्टर से जुड़ी कंपनियों को पहचान सकें और पूरे ऑयल और गैस सेक्टर में वो कंपनियों कैसे फिट बैठती हैं, उसकी समझ आपको आ जाए।

तो आइए शुरू करते हैं

ऑयल एंड गैस इंडस्ट्री को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है

1. अपस्ट्रीम इंडस्ट्री
2. डाउनस्ट्रीम इंडस्ट्री
3. मिडस्ट्रीम इंडस्ट्री

आइए अब इन तीनों के बारे में बारी-बारी से जान लेते हैं सबसे पहले शुरू करते हैं अपस्ट्रीम कंपनी से



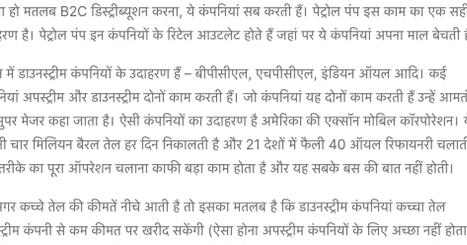
अपस्ट्रीम कंपनियां

अपस्ट्रीम कंपनी वह कंपनी होती है जो कच्चा तेल खोजने के लिए जियोलाॉजिकल सर्वे करती है, जगह-जगह बोरवेल से कुआं खोदती है और देखती है कि वहां पर जमीन के नीचे क्या मिल रहा है। अगर उनको तेल मिलता है तो वह फिर तेल की खुदाई और उसको निकालने का काम शुरू करती हैं। कई बार अपस्ट्रीम कंपनियों को कच्चा तेल खोजने और एक अच्छा मुनाफे वाला तेल का कुआं बनाने में सालों लग जाते हैं। तेल निकालना और कच्चे तेल को जमा करके बैरल में रखना ही इन कंपनियों का काम होता है (पूरी दुनिया में हर दिन लाखों या मिलियन बैरल कच्चे तेल का उत्पादन होता है)। यह कंपनी R&D करती हैं, इंजीनियरिंग के बड़े बड़े काम करती हैं और इनके पास बड़े-बड़े ऐसेट होते हैं। इसीलिए इन कंपनियों का खर्च बहुत ज्यादा होता है।

लेकिन इन कंपनियों का कच्चा तेल किस कीमत पर बिकेगा, यह उन कंपनियों के हाथ में नहीं होता। कच्चे तेल की कीमतें बाजार में तय होती हैं और बाजार के खिलाड़ी जैसे में और आप भी इस कीमत पर असर डालते हैं। हर अपस्ट्रीम कंपनी के लिए खुद का एक ब्रेक इवन प्वाइंट होता है जो कि उनके प्रति बैरल कच्चा तेल निकालने की कीमत के बराबर होता है। कई बार ब्रेक इवन प्वाइंट को **फुल साइकिल कॉस्ट (Full cycle cost)** भी कहते हैं। अपस्ट्रीम कंपनियां यह कोशिश करती हैं कि उनके खर्च कम हों और वह अपने फुल साइकिल कॉस्ट को नीचे ला सकें।

ओपनजीसी, केर्न इंडिया, रिलायंस इंडस्ट्रीज, ऑयल इंडिया आदि कुछ ऐसी कंपनियां हैं जो अपस्ट्रीम कंपनियां हैं। इसी तरीके से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शेल, बीपी शेवरान भी इसी तरीके की कंपनियां हैं।

यहां पर ध्यान देने वाली बात यह है कि कच्चे तेल की कीमत में कमी अपस्ट्रीम कंपनियों के लिए फायदे की बात नहीं है, खासकर उन कंपनियों के लिए जिनका फुल साइकिल कॉस्ट ज्यादा हो। साफ है कि इन कंपनियों के लिए फायदा तब होता है जब कच्चे तेल की कीमत बढ़ती है क्योंकि इनके तेल निकालने का खर्चा तो एक जैसा ही रहता है लेकिन कीमत बढ़ने पर उनकी मार्जिन बढ़ जाती है।



डाउनस्ट्रीम कंपनियां

अब बात करते हैं **डाउनस्ट्रीम कंपनियों** की। अपस्ट्रीम कंपनियों का काम सिर्फ कच्चा तेल निकालने का होता है। आपको पता है कि कच्चा तेल कच्चा ही होता है, अगर उससे पेट्रोल या डीजल बनाना है तो उस कच्चे तेल को रिफाइन करना पड़ता है। डाउनस्ट्रीम इंडस्ट्री यही काम करती हैं। ये कंपनियां अपस्ट्रीम कंपनी से कच्चा तेल खरीदती हैं, उसको रिफाइन करती हैं और पेट्रोल, डीजल, एविएशन फ्यूल, मरीन ऑयल, केरोसिन, लुब्रिकेंट, वैक्स और एलपीजी जैसी चीजें बनाती हैं।

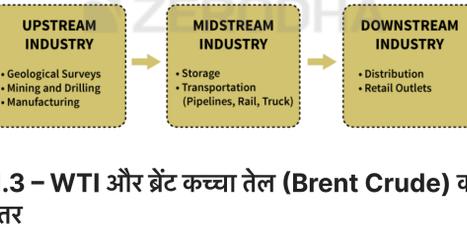
इस सेक्टर की कंपनियां अपने उत्पादों के वितरण का भी काम करती हैं। चाहे उन्हें अपना माल दूसरी कंपनियों को बेचना हो यानी B2B वितरण करना हो या फिर अपना माल को उपभोक्ता यानी कंज्यूमर को बेचना हो मतलब B2C डिस्ट्रीब्यूशन करना, ये कंपनियां सब करती हैं। पेट्रोल पंप इस काम का एक उदाहरण है। पेट्रोल पंप इन कंपनियों के रिटेल आउटलेट होते हैं जहां पर ये कंपनियां अपना माल बेचती हैं। भारत में डाउनस्ट्रीम कंपनियों के उदाहरण हैं – बीपीसीएल, एचपीसीएल, इंडियन ऑयल आदि। कई कंपनियां अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम दोनों काम करती हैं। आमतौर पर कच्चे तेल की कीमत में उन्हें आमतौर पर सुपर मेजर कहा जाता है। ऐसी कंपनियों का उदाहरण है अमेरिका की एक्सॉन मॉबिल कॉर्पोरेशन। ये कंपनी चार मिलियन बैरल तेल हर दिन निकालती है और 21 देशों में फैली 40 ऑयल रिफायनरी चलाती है। इस तरीके का पूरा ऑपरेशन चलाना काफी बड़ा काम होता है और यह सबके बस की बात नहीं होती।

तो अगर कच्चे तेल की कीमतें नीचे आती है तो इसका मतलब है कि डाउनस्ट्रीम कंपनियां कच्चा तेल अपस्ट्रीम कंपनी से कम कीमत पर खरीद सकेंगी (ऐसा होना अपस्ट्रीम कंपनियों के लिए अच्छा नहीं होता है क्योंकि तेल निकालने में उनकी मेहनत तो पहले जितनी ही होती है)। आमतौर पर कच्चे तेल की कीमत में गिरावट का फायदा अमेरिका और ब्रिटेन जैसे विकसित देशों में उपभोक्ता को तुरंत मिल जाता है क्योंकि डाउनस्ट्रीम कंपनियां इस गिरावट को ग्राहकों तक पहुंचा देती हैं लेकिन इस तरीके का फायदा विकासशील देशों के ग्राहकों जैसे हमें और आपको तुरंत नहीं मिलता।

यहां पर आपके ध्यान देने वाली कुछ बातें हैं

- अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम कंपनियों के बीच में विपरीत संबंध होता है
- कच्चे तेल की कम कीमत अपस्ट्रीम कंपनियों के लिए बुरी होती है लेकिन डाउनस्ट्रीम कंपनियों के लिए फायदेमंद होती है
- कच्चे तेल की ऊंची कीमत अपस्ट्रीम के की कंपनियों के लिए फायदेमंद होती है लेकिन डाउनस्ट्रीम कंपनियों के लिए नुकसानदायक होती है

अगली बार जब आप कच्चे तेल की कीमतों को नीचे जाता जाता देखें तो ओपनजीसी और बीपीसीएल को शॉर्ट करने की कोशिश ना करें बल्कि पहले समझें कि वह कहां डाउनस्ट्रीम है या अपस्ट्रीम और उस हिस्सा से तय करें कि तेल की कीमतों का उस कंपनी पर क्या असर पड़ेगा। इसको समझने के बाद ही ट्रेडिंग का सही फैसला करें।



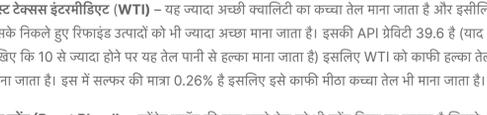
मिडस्ट्रीम कंपनियां

अब हम **मिडस्ट्रीम कंपनियों** के बारे में समझते हैं।

मिडस्ट्रीम कंपनियां वह होती हैं जो अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम कंपनियों के बीच में एक तरह से फूरियर का काम करती हैं। यह वह कंपनियां हैं जो कच्चे तेल को तेल के कुंए से रिफाइन नापा जाता है। इसके लिए वह तेल पाइपलाइन लगाती हैं, ऑयल टैंकर से कच्चा तेल पहुंचाती हैं और कई बार कच्चे तेल को बड़े-बड़े जहाजों में भरकर समुद्र के रास्ते से एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाती हैं। आप इन्हें कच्चे तेल का होलसेलर भी मान सकते हैं। कुछ मिडस्ट्रीम कंपनियां कच्चे तेल को कुछ इट तक रिफाइन भी करती हैं, जिससे वह इसमें कुछ वैल्यू एडिशन कर सकें। इस तरीके से वह डाउनस्ट्रीम कंपनियों का कुछ काम भी खुद कर देती हैं क्योंकि मिडस्ट्रीम कंपनियां अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम दोनों तरीके की कंपनियों के लिए काम करती हैं इसलिए वह कच्चे तेल की कीमतों में बदलाव को बहुत ज्यादा पसंद नहीं करतीं। उनके लिए कच्चे तेल की कीमत को बढ़ना या घटना दोनों ही अच्छा नहीं होता। अगर कच्चे तेल की कीमत बढ़ती है तो डाउनस्ट्रीम कंपनियों को नुकसान होता है और कच्चे तेल की कीमत घटती है तो अपस्ट्रीम कंपनियों का नुकसान होता है और दोनों ही स्थितियां मिडस्ट्रीम कंपनियों के लिए अच्छी नहीं होतीं।

मिडस्ट्रीम कंपनियों के उदाहरण हैं Trans-Canada, स्पेक्ट्रा एनर्जी, विलियम एंड कंपनी आदि।

इस पूरे कारोबार को ठीक से समझने के लिए नीचे के चित्र पर नजर डालिए



11.3 – WTI और ब्रेंट कच्चा तेल (Brent Crude) का अंतर

बहुत सारे लोगों को लगता है कि कच्चा तेल एक ही तरीके का होता है जैसे कि सोना। लेकिन यह सच नहीं है। क्या आपको पता है कि कच्चे तेल की अलग-अलग किस्में होती हैं? इन अलग-अलग किस्मों के अलग-अलग लक्षण होते हैं और यह इस पर निर्भर करता है कि वो कच्चा तेल कहां से निकल रहा है। जगह का असर ज्यादा ज्यादा होता है कि कच्चे तेल का रंग (हल्का पीला, सुनहरा, काला), वो कितना गाढ़ा है, उसमें सल्फर कितना है या होलोटिलिटी कैसी है, यह सब बदल जाता है।

इन सब वजहों से कच्चे तेल की कई किस्में होती हैं। मैं इन सब के बारे में पूरा नहीं जानता इसलिए उन सब के बारे में बात नहीं कर सकता। लेकिन वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट यानी **WTI** और ब्रेंट-इन दोनों के बीच के अंतर को मैं जानता हूँ और किसी कच्चे तेल के ट्रेडर के लिए इसी अंतर को जानना जरूरी है। इसीलिए हम इस पर बात करेंगे।

हम इस अंतर के बारे में जानना शुरू करें उसके पहले कच्चे तेल के उन दो जरूरी लक्षणों पर बात कर लेते हैं, जिनकी वजह से कच्चे तेल की अलग-अलग किस्में पैदा होती हैं।

API ग्रेविटी – API का मतलब है अमेरिकन पैट्रोलियम इंस्टीट्यूट। यह एक तरीके का पैमाना है जिससे कूड़ यानी कच्चे तेल के वजन (लाइटनेस-*lightness*) को पानी के मुकाबले नापा जाता है। इसकी API ग्रेविटी 39.6 है (याद रखिए कि 10 से ज्यादा होने पर यह तेल पानी से हल्का माना जाता है)। इसलिए WTI को काफी हल्का तेल माना जाता है। इस में सल्फर की मात्रा 0.26% है इसलिए इसे काफी मीठा कच्चा तेल भी माना जाता है।

ब्रेंट ब्लेंड (Brent Blend) – ब्लेंडेड स्कॉच की तरह कच्चे तेल को भी ब्लेंड किया जा सकता है जिससे उसकी अलग-अलग किस्में बनाई जा सकें। कहा जाता है कि ब्रेंट ब्लेंड को 15 अलग-अलग कुओं के तेल को मिलाकर बनाया जाता है। ब्रेंट ब्लेंड में सल्फर की मात्रा 0.37% होती है इसलिए WTI से कम इसी तेल को माना जाता है लेकिन WTI जितना मीठा नहीं। इसकी API ग्रेविटी 38.0 है जो कि इसे काफी हल्का तेल बनाती है।

अपनी अलग-अलग विशेषताओं की वजह से ही यह दोनों तेल अलग-अलग कीमत पर बिकते हैं। इन दोनों तरह की तेलों की कीमतों पर नजर डालिए

Energy

INDEX	UNITS	PRICE	CHANGE	%CHANGE	CONTRACT	TIME (EST)	2 DAY
CL1COM	USD/BBL	44.93	-0.49	-1.08%	Dec 2016	2:11 AM	
WTI Crude Oil (Nymex)							
CO1COM	USD/BBL	46.13	-0.36	-0.77%	Jan 2017	2:12 AM	
Brent Crude (ICE)							

ब्रेंट कूड की कीमत WTI से ज्यादा है। आपके लिए यह जानना भी जरूरी है कि MCX पर कच्चे तेल का ट्रेड ब्रेंट के आधार पर होता है, WTI के आधार पर नहीं। वास्तव में ब्रेंट कच्चा तेल ही दुनिया भर में कच्चे तेल की कीमतों का बेंचमार्क माना जाता है।

11.3 – कच्चे तेल की इन्वेंट्री का स्तर (Crude Oil Inventory Levels)

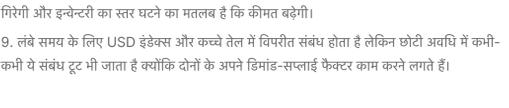
कच्चे तेल की सप्लाई और डिमांड का असर इसकी कीमत पर पड़ता है और इस वजह से इस धंधे से जुड़ी कई कंपनियों के मुनाफे पर भी असर पड़ता है। इसीलिए कच्चे तेल की इन्वेंट्री कितनी है इस पर नजर रखना बहुत जरूरी होता है। आप इस जानकारी का इस्तेमाल ना सिर्फ MCX पर कच्चे तेल में ट्रेडिंग के लिए कर सकते हैं बल्कि आप बीपीसीएल, एचपीसीएल, इंडियन ऑयल जैसी कंपनियों के शेयर में ट्रेडिंग करने के लिए भी इस जानकारी का इस्तेमाल कर सकते हैं। दुनिया भर में इन्वेंट्री कितनी है इसकी जानकारी देने वाले दो संगठन हैं

1. **यूएस एनर्जी इनफार्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन (US EIA)** – यह हर हफ्ते कच्चे तेल की इन्वेंट्री की रिपोर्ट निकालते हैं। आप इस जानकारी को यहाँ – **information here** – देख सकते हैं। ध्यान रखिए कि इन्वेंट्री में बढ़ोतरी तब होती है जब मांग में कमी हो या फिर सप्लाई ज्यादा हो। इन्वेंट्री का बढ़ना कच्चे तेल की कीमतों के लिए बुरा होता है इसकी वजह से अपस्ट्रीम कंपनियों पर भी इसका बुरा असर पड़ता है दूसरी तरफ इन्वेंट्री का कम होना यह बताता है कि मांग काफी ज्यादा है या फिर उत्पादन कम हो रहा है दोनों ही स्थितियों में कच्चे तेल की कीमतों पर अच्छा असर पड़ता है यानी यह ऊपर जाती है और यह अपस्ट्रीम कंपनियों के लिए बेहतर होता है।
2. **OECD कूड ऑयल इन्वेंट्री** – OECD का मतलब होता है ऑर्गनाइजेशन आफ इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट। OECD भी कच्चे तेल की इन्वेंट्री का हाल बताता है लेकिन यह US EIA की तरह हर हफ्ते ये अनुमान नहीं देता। तेल की इन्वेंट्री का हाल जानने के लिए आप OECD की वेबसाइट पर जा सकते हैं।

11.4 – अमेरिकी डॉलर और कच्चे तेल में संबंध

कच्चा तेल और अमेरिकी डॉलर में विपरीत संबंध होता है। अमेरिकी डॉलर के मजबूत होने का मतलब है कि कच्चा तेल की कीमतें नीचे जाएंगी, इसी तरीके से अगर अमेरिकी डॉलर कमजोर होता है तो कच्चे तेल की कीमतें ऊपर जाती हैं। यहां पर ध्यान देने वाली बात यह है कि इन दोनों ऐंसेट की अपनी अलग-अलग सप्लाई और डिमांड की स्थितियां होती हैं जो उनकी कीमतों को तय करती हैं। लेकिन फिर भी यह दोनों ऐंसेट आपस में जुड़े हुए हैं।

अगर आप कूड ऑयल Vs डॉलर के चित्र को सच करेंगे तो ऐसे क्वार्ट चार्ट मिल जाएंगे जो इस विपरीत संबंध को दिखाते हैं। यहां एक उदाहरण देखिए



यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि इस चार्ट में अमेरिकी डॉलर का जो रेड दिखाया गया है वह अमेरिकी डॉलर का स्पॉट रेट नहीं है बल्कि डॉलर इंडेक्स है जोकि दुनिया भर की कई करेंसी के मुकाबले डॉलर को दिखाता है। ऐसा करना इसलिए जरूरी है क्योंकि कच्चा तेल एक इंटरनेशनल क्मोडिटी है और इस बात का कच्चे तेल पर कोई असर नहीं पड़ता कि इसे कहां खरीदा जा रहा है। इसका पैमेंट हमेशा अमेरिकी डॉलर में ही होता है।

इसी वजह से अगर अमेरिकी डॉलर किसी भी वजह से बढ़ता है तो दुनिया भर के देश ज्यादा कच्चा तेल खरीदना शुरू कर देते हैं क्योंकि तब उन्हें उतनी ही डॉलर में ज्यादा तेल मिल जाता है। इससे इन्वेंट्री का स्तर कम होता है और फिर तेल की कीमत बढ़ जाती है।

अगर लंबी अवधि के लिए देखें तो ऊपर दिया गया तर्क हमेशा सच साबित होता है। लेकिन याद रखिए कि दोनों ऐंसेट के अपने खुद के फंडामेंटल होते हैं इसलिए कभी ऐसी स्थिति भी हो सकती है कि डॉलर और कच्चे तेल के बीच का विपरीत संबंध टूट जाए और दोनों एक ही दिशा में बढ़ने लगें। याद रखिए कि विपरीत संबंध केवल यह बताता है कि यह दोनों अलग-अलग दिशाओं में चलेंगे, लेकिन यह नहीं बताता कि दोनों में बदलाव कितना होगा। उदाहरण के लिए अगर डॉलर 10% गिरता है तो इसका मतलब यह नहीं है कि कच्चा तेल भी 10% ही गिरेगा।

अगले अध्याय में हम MCX पर कूड ऑयल के अलग-अलग कॉन्ट्रैक्ट के बारे में जायेंगे।

इस अध्याय की मुख्य बातें

1. ऑयल और गैस इंडस्ट्री के ढांचे को समझना और इसमें कौन सी कंपनी किस जगह फिट होती है इसे समझना काफी महत्वपूर्ण है।
2. अपस्ट्रीम कंपनियों को ज्यादा ऐंसेट की जरूरत पड़ती है और वो तेल की खुदाई का काम करती हैं।
3. कच्चे तेल की कीमत का बढ़ना अपस्ट्रीम कंपनियों के लिए अच्छ होता है और कीमत का घटना बुरा।
4. डाउनस्ट्रीम कंपनियां मुख्य तौर पर रिफाइनरी होती हैं। कच्चे तेल की कीमत का बढ़ना उनके लिए अच्छा नहीं होता है, जबकि कीमत का घटना उनके लिए अच्छा होता है क्योंकि उनका मार्जिन बढ़ने में मदद करता है।
5. मिडस्ट्रीम कंपनियां लॉजिस्टिक्स का काम करती हैं। ये कंपनियां तेल की कीमत में स्थिरता पसंद करती हैं, क्योंकि वो अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम कंपनियों दोनों के लिए काम करती हैं।
6. WTI और ब्रेंट, कच्चे तेल की दो किस्में होती हैं। इनके बीच मुख्य तौर पर API ग्रेविटी और स्वीटनेस का अंतर होता है।
7. ब्रेंट कूड को कच्चे तेल की कीमत का बेंचमार्क माना जाता है।
8. इन्वेंट्री का स्तर जानना बहुत जरूरी होता है। इन्वेंट्री का स्तर बढ़ना बताता है कि कच्चे तेल की कीमत गिरेगी और इन्वेंट्री का स्तर घटने का मतलब है कि कीमत बढ़ेगी।
9. लंबे समय के लिए USD इंडेक्स और कच्चे तेल में निगेटिव संबंध होता है लेकिन छोटी अवधि में कमी-कमी ये संबंध टूट भी जाता है क्योंकि दोनों के अपने डिमांड-सप्लाई फैक्टर काम करने लगते हैं।

कच्चा तेल (भाग 3), कच्चे तेल का कॉन्ट्रैक्ट

2.1 – कॉन्ट्रैक्ट

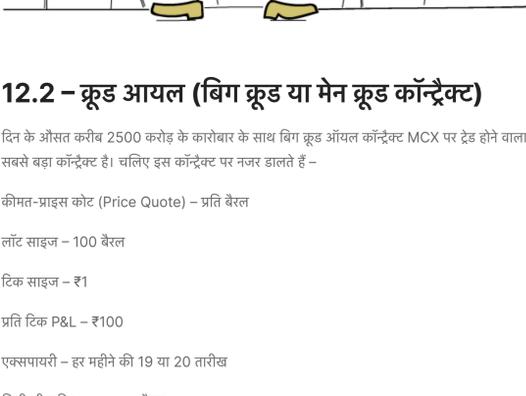
MCX पर जिस कर्मांडिटी का सबसे ज्यादा कारोबार होता है वो है कूड ऑयल यानी कच्चा तेल। MCX पर हर दिन इस कर्मांडिटी में कुल मिलाकर (ज्यादा कॉन्ट्रैक्ट) औसतन 3000 करोड़ रुपए से अधिक का कारोबार होता है यानी करीब-करीब 8500 बैरल कच्चे तेल का कारोबार हर दिन होता है। कच्चे तेल के इस कारोबार में कंपनियां और ट्रेडर दोनों हिस्सा लेते हैं। तकरीबन हर दिन अपस्ट्रीम कंपनियां (जैसे ओएनजीसी, रिलायंस और केन) और डाउनस्ट्रीम कंपनियां (जैसे IOC, BPCL, HPCL) MCX पर अपने आर्डर देती हैं। मुझे लगता है कि यह कंपनियां मुख्य तौर पर स्पॉट मार्केट में पोजीशन को हेज (hedge) करने के लिए अपने आर्डर MCX पर ट्रेड करते हैं जिससे कि वह स्पॉट बाजार में उठापटक से बच सकें। जबकि ट्रेडर सिर्फ स्पेकुलेशन करते हैं जिससे कि वह कच्चे तेल से कुछ कमाई कर सकें।

मेरी सलाह यह होगी कि आप **MCX की भाव कॉपी** को देखें। इससे आपको किसी भी कॉन्ट्रैक्ट की लिक्विडिटी और वॉल्यूम के बारे में पता चल सकेगा।

MCX पर मुख्यतः दो कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेडिंग होती है

- कूड ऑयल (बिग कूड या मेन कूड कॉन्ट्रैक्ट)
- कूड ऑयल मिनी (The Baby Version)

इस अध्याय में हम देखेंगे कि इ कॉन्ट्रैक्ट में किस तरीके की शर्तें होती हैं – एक्सपायरी से लेकर मार्जिन और प्रति टिक P&L तक



12.2 – कूड आयल (बिग कूड या मेन कूड कॉन्ट्रैक्ट)

दिन के औसत करीब 2500 करोड़ के कारोबार के साथ बिग कूड ऑयल कॉन्ट्रैक्ट MCX पर ट्रेड होने वाला सबसे बड़ा कॉन्ट्रैक्ट है। चलिए इस कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं –

कीमत-प्राइस कोट (Price Quote) – प्रति बैरल

लॉट साइज – 100 बैरल

टिक साइज – ₹1

प्रति टिक P&L – ₹100

एक्सपायरी – हर महीने की 19 या 20 तारीख

डिलीवरी यूनिट – 50,000 बैरल

फिजिकल डिलीवरी – मुंबई/ JNPT पोर्ट

इस जानकारी को जरा बेहतर तरीके से समझते हैं। MCX पर कच्चा तेल प्रति बैरल के हिसाब से कोट (Quote) होता है। एक बैरल करीब 42 गैलन या 159 लीटर के बराबर होता है। नीचे हमने कूड ऑयल के मार्केट डेटा का चित्र दिखाया है

CRUDEOIL DEC FUT		MCX		-1.72 % ▼ 3197.00	
BIDS		OFFERS			
PRICE	ORDERS	QTY.	PRICE	ORDERS	QTY.
3197.00	12	98	3198.00	5	7
3196.00	9	77	3199.00	19	123
3195.00	16	67	3200.00	44	108
3194.00	6	28	3201.00	10	38
3193.00	9	51	3202.00	26	114
Total	2,395	Total	3,907		
EXPIRY	2016-12-19	VOL. TRADED	60,386		
O 3255.00	H 3255.00	L 3176.00	C 3253.00		

जैसा कि आप देख सकते हैं कि 19 दिसंबर 2016 को एक्सपायर होने वाला कूड ऑयल का कॉन्ट्रैक्ट ₹3197 पर है। हमें पता ही है कि यह कीमत प्रति बैरल कीमत है।

लॉट साइज 100 बैरल का है, इसका मतलब है कि अगर आप इस कॉन्ट्रैक्ट को खरीदना चाहते हैं तो कॉन्ट्रैक्ट की कीमत होगी

लॉट साइज * कीमत

= 100 * 3198 (लॉग जाने की ऑफर कीमत)

= **Rs.319,800/-**

तो यह तो हुई कॉन्ट्रैक्ट की कीमत लेकिन मार्जिन का क्या? कच्चे तेल में मार्जिन दूसरी किसी भी कर्मांडिटी के मुकाबले ज्यादा होती है। अगर अपने पोजीशन को अगले दिन के लिए रखना चाहते हैं तो फिर करीब 9% का मार्जिन आपको देना पड़ सकता है।

इसका मतलब है कि कच्चे तेल के एक लॉट के लिए आपको जो मार्जिन डिपॉजिट देना होगा, वह है –

9% * 319800

= **Rs.28,782/-**

वैसे आप चाहें तो जेरोधा के मार्जिन कैलकुलेटर का इस्तेमाल कर सकते हैं और मार्जिन का अनुमान लगा सकते हैं। नीचे उसका ही चित्र है

#	Commodity	Lot size	Price	NRML Margin	MIS Margin
8	CRUDEOIL	100 BBL	3253	29114	14557
9	CRUDEOILM	10 BBL	3251	2912	1456

अगर इस समय कच्चे तेल की कीमत ₹3253 है तो NRML (सौदे औरनाइट पोजीशन) के लिए ₹29,114 के मार्जिन की जरूरत पड़ेगी। लेकिन अगर आप इंद्राडे ट्रेड (MIS) करना चाहते हैं तो मार्जिन की जरूरत करीब करीब 4.5% की ही रह जाएगी। जैसा कि आप ऊपर के चित्र में देख सकते हैं कि MIS के लिए मार्जिन करीब 14,557 रुपए है।

12.3 – ट्रेडिंग के लिए कच्चे तेल के सही कॉन्ट्रैक्ट को कैसे चुनें (एक्सपायरी का तर्क)

कच्चे तेल के कॉन्ट्रैक्ट हर महीने में जारी होते हैं। अभी जारी होने वाले कॉन्ट्रैक्ट की एक्सपायरी 6 महीने के बाद होगी। उदाहरण के तौर पर नवंबर 2016 में जारी हो रहे कॉन्ट्रैक्ट की एक्सपायरी 6 महीने बाद यानी मई 2017 में होगी। MCX इसकी जानकारी लगातार अपने सर्कुलर जारी करके देता रहता है। लेकिन व्यक्तिगत तौर पर मुझे कभी-कभी उस जानकारी को समझने में मुश्किल होती है जो कि एक्सपायरी टेबल में दी जाती है। MCX हमें ये बताना चाहता है –

मौजूदा महीना	कॉन्ट्रैक्ट जारी	एक्सपायरी
नवंबर 2016	मई 2017	19th मई
दिसंबर 2016	जून 2017	19th जून
जनवरी 2017	जुलाई 2017	19th जुलाई
फरवरी 2017	अगस्त 2017	21st अगस्त
मार्च 2017	सितंबर 2017	19th सितंबर
अप्रैल 2017	अक्टूबर 2017	18th अक्टूबर
मई 2017	नवंबर 2017	17th नवंबर

लेकिन MCX का सर्कुलर जो बताता है वो ये है

Contract Launch Calendar of Crude Oil

Contract Month	Contract Launch Date	Contract Expiry Date
January 2017	20 th July 2016	19 th January 2017
February 2017	22 nd August 2016	17 th February 2017
March 2017	20 th September 2016	20 th March 2017
April 2017	20 th October 2016	19 th April 2017
May 2017	21 st November 2016	19 th May 2017
June 2017	20 th December 2016	19 th June 2017
July 2017	20 th January 2017	19 th July 2017
August 2017	20 th February 2017	21 st August 2017
September 2017	21 st March 2017	19 th September 2017
October 2017	20 th April 2017	18 th October 2017
November 2017	22 nd May 2017	17 th November 2017
December 2017	20 th June 2017	18 th December 2017

तो नवंबर 2016 का कॉन्ट्रैक्ट मई 2016 में जारी हुआ होगा।

खैर, यहां पर ध्यान देने वाली बात यह है कि

- हर महीने एक नया कॉन्ट्रैक्ट होता है जो 6 महीने पहले जारी हुआ होता है
- ये कॉन्ट्रैक्ट 6 महीने बाद एक्सपायर होते हैं उस महीने की 19 तारीख के करीब
- इस तरह से हर कॉन्ट्रैक्ट 6 महीने तक चलते हैं

ट्रेडिंग करने के लिए हमेशा पास के महीने वाला कॉन्ट्रैक्ट यानी नियर मंथ का कॉन्ट्रैक्ट चुनना चाहिए। मान लीजिए कि आज नवंबर 5, 2016 है, तो मैं उस कॉन्ट्रैक्ट को चुनूंगा जो कि 19 नवंबर 2016 एक्सपायर हो रहा है। साथ ही, नवंबर 15 या 16 को जब एक्सपायरी में कुछ ही दिन बचेगें तो मैं दिसंबर 2016 के कॉन्ट्रैक्ट में चला जाऊंगा। इसके पीछे की वजह बहुत सीधी है, मौजूदा महीने के कॉन्ट्रैक्ट (इस उदाहरण में नवंबर 2016) में हमेशा लिक्विडिटी ज्यादा होती है और जब मौजूदा महीने का कॉन्ट्रैक्ट एक्सपायर होने वाला होता है तो अगले महीने के कॉन्ट्रैक्ट (इस उदाहरण में दिसंबर 2016) में लिक्विडिटी बढ़ने लगती है।

बाजार में मौजूद बाकी सारे कॉन्ट्रैक्ट में कुछ कारोबार नहीं होता जब तक वो नियर मंथ के नहीं बनते।

12.3 – कूड ऑयल मिनी का कॉन्ट्रैक्ट

कूड ऑयल मिनी का कॉन्ट्रैक्ट छोटा होने की वजह से ट्रेडर्स में काफी लोकप्रिय है। इसकी वजह ये है कि इसमें

- मार्जिन की जरूरत कम पड़ती है।
- प्रति टिक P&L भी छोटा होता है। *क्या आपको पता है कि लोग कम नुकसान देखा चाहते हैं भले ही मुनाफा ज्यादा ना दिखे?*

इस कॉन्ट्रैक्ट की जानकारी इस प्रकार है

कीमत – प्राइस कोट (Price Quote) – प्रति बैरल

लॉट साइज – 10 बैरल

टिक साइज – ₹1

प्रति टिक P&L – ₹10

एक्सपायरी – हर महीने की 19 या 20 तारीख

डिलीवरी यूनिट – 50,000 बैरल

फिजिकल डिलीवरी – मुंबई/JNPT पोर्ट

अब एक नजर डालते हैं कीमत के कोट (Quote) पर –

CRUDEOILM DEC FUT		MCX		+3.12 % ▲ 3210.00	
BIDS		OFFERS			
PRICE	ORDERS	QTY.	PRICE	ORDERS	QTY.
3210.00	1	1	3211.00	11	89
3209.00	6	105	3212.00	8	26
3208.00	9	160	3213.00	5	23
3207.00	4	83	3214.00	12	32
3206.00	3	53	3215.00	20	54
Total	10,448	Total	2,478		
EXPIRY	2016-12-19	VOL. TRADED	88,728		
O 3125.00	H 3230.00	L 3125.00	C 3113.00		

कूड ऑयल मिनी का दिसंबर फ्यूचर ₹3210 प्रति बैरल पर है। इसकी कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी

= 3210 * 10

= **Rs.32,100/-**

इसमें मार्जिन की जरूरत प्रतिशत के हिसाब से थोड़ी ज्यादा होती है। NRML के लिए करीब 9.5% और MIS के लिए 4.8% ।

अगर रुपयों में देखें तो NRML के लिए मार्जिन होगी ₹3049 और MIS के लिए होगी ₹1540, तो आप देख सकते हैं कि कूड ऑयल के मुख्य कॉन्ट्रैक्ट के मुकाबले यहां मार्जिन काफी कम है।

लॉट साइज और मार्जिन के अलावा बाकी चीजें दोनों ही कॉन्ट्रैक्ट में एक जैसी होती हैं।

12.4 – कच्चे तेल में आर्बिट्राज

नीचे का चित्र देखें

CRUDEOILM DEC FUT		MCX		+3.47 % ▲ 3221.00	
BIDS		OFFERS			
PRICE	ORDERS	QTY.	PRICE	ORDERS	QTY.
3221.00	1	1	3222.00	11	93
3220.00	9	71	3223.00	7	84
3219.00	5	51	3224.00	8	51
3218.00	7	47	3225.00	36	110
3217.00	4	25	3226.00	12	23
Total	4,864	Total	1,518		
EXPIRY	2016-12-19	VOL. TRADED	73,529		
O 3135.00	H 3232.00	L 3128.00	C 3113.00		

ऊपर के चित्र के पहले हिस्से में कूड ऑयल दिसंबर फ्यूचर को दिखाया गया है और इसकी मार्केट डेटा भी दिखाई गई है जबकि चित्र का दूसरा हिस्सा कूड ऑयल मिनी के दिसंबर कॉन्ट्रैक्ट को उस और उसके मार्केट डेटा को दिखाता है।

अगर सब कुछ एक जैसा रहे तो इन दोनों कॉन्ट्रैक्ट की कीमत करीब-करीब एक जैसी दिखनी चाहिए क्योंकि इन दोनों का अंडरलाइंग एक ही है। और हम देख सकते हैं कि यहां पर दोनों कॉन्ट्रैक्ट की कीमत ₹3221 ही है

लेकिन अगर इन दोनों की कीमत एक जैसी नहीं हो तो?

मान लीजिए किसी वजह से दोनों कॉन्ट्रैक्ट अलग-अलग कीमत पर हैं। अगर कूड ऑयल 3221 पर है और कूड ऑयल मिनी 3217 पर है, तो क्या यहां एक ट्रेड का मौका है? जी हां बिल्कुल सही पहचाना आपने, यहां पर एक आर्बिट्राज का मौका है और इसको इस तरह से ट्रेड करना चाहिए –

कूड ऑयल = 3221

कूड ऑयल मिनी = 3217

रिस्क फ्री मुनाफे की संभावना (आर्बिट्राज) = 3221-3217 = 4

ट्रेड कैसे होगा –

हमें पता है कि किसी भी आर्बिट्राज के ट्रेड में हमेशा सस्ते एसेट को खरीदना चाहिए और महंगे एसेट को बेचना चाहिए। तो इस मामले में –

हम कूड ऑयल मिनी को 3217 पर खरीदेंगे और कूड ऑयल को ₹3221 पर बेचेंगे। यह भी याद रखें एक आर्बिट्राज के मौके का अच्छा इस्तेमाल करने के लिए हमें दोनों तरफ बराबर की मात्रा का ट्रेड करना चाहिए।

कूड ऑयल की कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू – 3221 * 10 = Rs.3,22,100/-

कूड ऑयल मिनी की कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू – 3217 * 10 = Rs.32,170/-

तो यह देखते हुए हमें कूड ऑयल मिनी के 10 लॉट 3217 पर खरीदने होंगे और कूड ऑयल का एक लॉट 3221 पर बेचना होगा। इस तरह से दोनों कॉन्ट्रैक्ट साइज एक बराबर हो जाएंगे और आर्बिट्राज सही तरीके से काम करेगा।

जब हम इस ट्रेड को ठीक तरीके से कर लेंगे तो आर्बिट्राज फायदा मिल जाएगा। याद रखिए कि हर आर्बिट्राज में कीमतें कहीं एक जगह जाकर मिलती हैं। मान लीजिए इस मामले में कीमत ₹3230 पर मिलती है।

तो इसका मतलब यह होगा कि हम कूड ऑयल मिनी पर 13 प्वाइंट बना रहे होंगे और कूड ऑयल पर 9 प्वाइंट का नुकसान सह रहे होंगे। इस तरह से कुल मिलाकर हमें 4 प्वाइंट का मुनाफा होगा।

वास्तव में कीमत कहीं भी हो आपको 4 प्वाइंट का मुनाफा जरूर मिलेगा।

याद रखें कि इस तरह के मौके हर दिन नहीं मिलते। अगर ऐसे मौके आते भी हैं तो एल्गोरिदम (Algorithm) उसको आपसे पहले पकड़ लेते हैं। लेकिन कभी-कभी मैंने ऐसे मौकों को कुछ मिनिटों तक चलते हुए देखा है।

तो ट्रेड के ऐसे मौकों के लिए नजर खुली रखिए और अगर ये मिलें तो उसे पकड़ लीजिए।

इसके साथ ही कच्चे तेल पर हमारी यह बातचीत यहीं खत्म होती है। अगले कुछ अध्यायों में हम मेटल यानी धातुओं के कारोबार पर नजर डालेंगे।

इस अध्याय की मुख्य बातें

- कच्चे तेल के दो कॉन्ट्रैक्ट उपलब्ध होते हैं – कूड ऑयल और कूड ऑयल मिनी।
- दोनों कॉन्ट्रैक्ट में लॉट साइज अलग-अलग होता है। बड़े कूड ऑयल का लॉट साइज 100 बैरल का होता है जबकि कूड ऑयल मिनी का लॉट साइज 10 बैरल का होता है।
- दोनों कॉन्ट्रैक्ट में कीमत प्रति बैरल के आधार पर बताई जाती है।
- हर महीने कच्चे तेल का एक नया कॉन्ट्रैक्ट जारी होता है जो 6 महीने बाद एक्सपायर होता है।
- एक्सपायरी हर महीने की 19 तारीख के आसपास होती है।
- मौजूदा महीने के कॉन्ट्रैक्ट में सबसे ज्यादा लिक्विडिटी होती है।
- दोनों कॉन्ट्रैक्ट के बीच में आर्बिट्राज का मौका मिलने पर पैसे कमाए जा सकते हैं लेकिन यह ध्यान देना होता है कि कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू एक बराबर हो।

कॉपर और एल्युमिनियम

13.1 – सुमितोमो कॉपर स्कैंडल (घोटाला)

अगर आप क्मोडिटी बाजार के बारे में थोड़ा सा भी जानते हैं तो आपने सुमितोमो कॉपर स्कैंडल की कहानी जरूर सुनी होगी। इस स्कैंडल की शुरुआत करीब 1995 में हुई- जापान में। लेकिन यह स्कैंडल इतना बड़ा था कि दुनिया भर के क्मोडिटी बाजारों और क्मोडिटी ट्रेडिंग पर इसने असर डाला और आज तक इसके बारे में चर्चा होती है। इसे ट्रेडिंग को जगो का एक नमूना माना जाता है।

सुमितोमो कॉर्पोरेशन जापान की एक बहुत बड़ी कंपनी है, इसका मुख्यालय जापान में है और ये वहाँ पर निरन्तर है। इसका कारोबार दुनिया भर में है और ये कई तरह के कारोबार करती है। कंपनी तरह-तरह की वस्तुओं और क्मोडिटी की ट्रेडिंग करती है। उन दिनों सुमितोमो में कॉपर ट्रेडिंग यानी तांबे की ट्रेडिंग का एक बहुत बड़ा विभाग था। कंपनी स्पॉट बाजार में कॉपर खरीदती थी और फिर उनको अपने भंडार गृहों में जमा कर के रखती थी, जिससे उसकी ट्रेडिंग कर सके। साथ ही, लंदन मेटल एक्सचेंज पर कॉपर के फ्यूचर्स में भी कंपनी काफी निवेश करती थी। सुमितोमो के मुख्य कॉपर ट्रेडर थे- यासुओ हमानाका। कॉपर यानी तांबे से जुड़ी किसी भी चीज के लिए सुमितोमो में उन्हीं का नाम लिया जाता है।



तो उस घोटाले या स्कैंडल में क्या हुआ था-

- यासुओ हमानाका ने स्पॉट बाजार में कॉपर खरीदा और उसको अपने भंडार गृहों में जमा कर लिया।
- उन्होंने यह कॉपर केवल जापान में नहीं खरीदा बल्कि दुनियाभर के बाजारों में खरीदा और अलग-अलग जगहों पर उनको जमा करके रखा।
- इसका मतलब है कि कॉपर के स्पॉट बाजार में वह लॉज थे यानी खरीदारी कर रहे थे।
- दुनियाभर के बाजारों में जितना कॉपर स्पॉट में खरीदा जा बेचा जा उसका 5% सुमितोमो के पास था। उस समय इस दुनिया में यासुओ हमानाका से ज्यादा कॉपर किसी के पास नहीं था। इस तरह से वो एक ऐसी स्थिति में था जहाँ पर वह कॉपर की कीमतों को अपने हिसाब से कंट्रोल कर सकता था।
- साथ ही, उसने लंदन मेटल एक्सचेंज यानी LME पर कॉपर फ्यूचर भी खरीद रखा था।
- हर ट्रेडर को पता था कि यासुओ हमानाका कॉपर का सबसे बड़ा Bull (बुल) था, लेकिन कोई ये नहीं जानता था कि उसने काफी सुमितोमो का सबसे बड़ा Bull (बुल) था, लेकिन कोई ये नहीं जानता था कि उसने कितना एक्सचेंज ले रखा है। (क्योंकि उस समय LME अपने ओपन इंटररेट डाटा को पब्लिक में जारी नहीं करता था।)
- जब भी कोई ट्रेडर या ट्रेडिंग कंपनी कॉपर को शॉर्ट करती थी तो हमानाका उसको खरीद लेता था। उसके लिए ऐसा करना आसान था क्योंकि सुमितोमो के पास काफी कैश था और कंपनी इस ट्रेड को फंड कर रही थी।
- यासुओ हमानाका ने इतना बड़ी मात्रा में कॉपर खरीदा था कि कॉपर की कीमतें ऊपर चली गईं।
- याद रखें कि कॉपर एक इंटरनेशनल यानी अंतरराष्ट्रीय क्मोडिटी है और इसकी कीमतें बाजार तय करता है (LME फ्यूचर)।
- तो LME पर कीमत ऊपर गई, शॉर्ट करने वाले ट्रेडर फंस गए और हमानाका ने फ्यूचर्स में काफी मुनाफा कमाया।
- शॉर्ट करने वाले ट्रेडर को डिफॉल्ट करना पड़ा और उन्हें एक्सपायरी पर कॉपर की डिलीवरी देनी पड़ी।
- ऐसे में, हर ट्रेडर को सुमितोमो से महंगी कीमत पर कॉपर खरीदना पड़ता था जिसका मतलब था कि सुमितोमो अपनी स्पॉट की पोजीशन पर भी बहुत सारे मुनाफा कर रहा था।
- यह मुनाफा इतना बढ़ता गया कि यासुओ हमानाका कॉपर का किंग बन गया।

यह सब एक दशक से ज्यादा ऐसे ही चलता रहा। लेकिन 90 के दशक के शुरुआत में चीन ने अपना कॉपर का उत्पादन बढ़ा दिया। वहाँ उत्पादन इतना ज्यादा होने लगा कि बाजार में हर तरफ कॉपर आसानी से मिलने लगा। इस वजह से, कॉपर की कीमतें नीचे आने लगी और हमानाका को मुश्किल होने लगी। उसके पास इतना माल था कि उसे बाजार में बेचना आसान नहीं था। आखिर बाजार में सब कुछ तो वह खुद ही खरीद रहा था। तब उसने अपनी लॉजिंग पोजीशन को बचाए रखने के लिए पैसों उधार पर लेने शुरू कर दिए। याद रखिए कि ये सबी पोजीशन लेवरेज वाली थी और जब आपके पास किसी लेवरेज पोजीशन की बहुत बड़ी मात्रा होती है, तो कीमत में छोटा सा बदलाव भी आपका बड़ा भारी नुकसान करा सकता है।

फिर एक दिन यहीं हुआ, कॉपर की कीमत जोर से गिरने और यासुओ हमानाका का कॉपर साम्राज्य ध्वंस हो गया। घाटा इतना बड़ा था कि सुमितोमो कॉर्पोरेशन को दिवालियापन यानी बैंकप्टसी (bankruptcy) के लिए अर्जी देनी पड़ी। 1995 की कीमतों में कंपनी को करीब 5 बिलियन डॉलर का नुकसान हुआ।

इसके बाद वही हुआ जो आमतौर पर होता है। कुछ लोगों पर उंगलियाँ उठूँ, कुछ मुकदमे हुए, कुछ सफाई दी गई और ड्रामा चलता रहा। लेकिन इस कहानी से सीख ये मिलती कि रिस्क मैनेजमेंट कितना जरूरी होता है। इसके बारे में बात हम एक अलग भाईबूल में करेंगे।

लेकिन अभी हम कॉपर से जुड़ी जरूरी जानकारी के लिए आगे बढ़ते हैं।

13.2 – कॉपर की जरूरी जानकारी

कॉपर यानी तांबा एक बेस मेटल है। MCX पर इसका अच्छा खासा कारोबार होता है। जो धातुएं सोने और चांदी की तरह महंगी पड़ती नहीं होती हैं उन्हें बेस मेटल कहा जाता है।

MCX पर कॉपर में हर दिन करीब ₹2,050 करोड़ रूपए का कारोबार होता है और करीब 55,000 लॉट्स बेचे और खरीदे जाते हैं। MCX पर कॉपर में काफी लिक्विडिटी होती है। यह लिक्विडिटी सोना या ग्लूड ऑयल के बराबर होती है।

कॉपर एक बहुत ही जरूरी धातु है। खपत के मामले में, स्टील और एल्युमिनियम के बाद यह तीसरे नंबर की सबसे ज्यादा इसकी खपत वाली धातु है। एल्युमिनियम की तरह ही कॉपर की कीमत सीधे तौर पर दुनिया की आर्थिक हालत से जुड़ी होती है। आपको शायद पता हो कि कॉपर इलेक्ट्रिसिटी यानी बिजली का एक अच्छा कंडक्टर है और इसलिए कॉपर का इस्तेमाल बिजली के तार बनाने में होता है। शायद आपको यह भी पता हो कि टेस्ता की कार बनाने में कॉपर की मोटर का इस्तेमाल होता है।

इसके अलावा कॉपर का इस्तेमाल बहुत सारी चीजों में होता है, जैसे

- बिल्डिंग और कंस्ट्रक्शन
- कॉपर प्लॉय मोडल
- इलेक्ट्रिक और इलेक्ट्रॉनिक
- प्लंबिंग
- औद्योगिक उत्पादन
- टेलेकॉम
- रेलवे।

लेकिन भरे लिए इसका सबसे महत्वपूर्ण उपयोग यह है-



क्या आप अनुमान लगा पाए, अगर हां तो आपकी और मेरे रुचि में ये कॉमन हैं।

कॉपर की मांग हमेशा वैसे ही चलती है जैसे एल्युमिनियम की चलती है। नीचे के चित्र पर नजर डालिए।



स्रोत- हिंडालको की वार्षिक रिपोर्ट 2015-16

2015 में रिफाइनड कॉपर की दुनिया भर की डिमांड करीब 24 मिलियन टन थी। इसमें से आधी मांग चीन और जापान से थी। कॉपर की सप्लाई उसकी मांग से ज्यादा थी और क्मोडिटी बाजार में ज्यादा माल आने की वजह से कीमतें पिछले कुछ सालों के मुकाबले काफी नीचे थीं।

कॉपर की फंडामेंटल की जानकारी तो जरूरी है, लेकिन किसी भी दूसरी क्मोडिटी की तरह ही कॉपर की ट्रेडिंग में भी मैं चार्ट पर ज्यादा भरोसा करता हूँ। इसलिए आइए पहले कॉन्ट्रैक्ट की जरूरत बाताओं को समझ लेते हैं। एल्युमिनियम और कॉपर दोनों में दो तरह के कॉन्ट्रैक्ट होते हैं – बिंग कॉपर कॉन्ट्रैक्ट और इसका मिनी कॉन्ट्रैक्ट। पहले बिंग कॉपर कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं।

कीमत-ग्राइस कोट (Price Quote) – प्रति किलोग्राम

लॉट साइज – 1 मिट्रिक/मेट्रिक टन

टिक साइज – ₹0.05

प्रति टिक P&L – ₹0.05 * 1000 = ₹50

एक्सपायरी – हर महीने की अंतिम तारीख

डिलीवरी यूनिट – 10 मिट्रिक टन

फरवरी 2017 में एक्सपायर हो रहे कॉन्ट्रैक्ट के कोट (Quote) पर नजर डालते हैं

यहां पर कीमत ₹ 389.1 प्रति किलो दिख रही है। इस वजह से कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी –

लॉट साइज * कीमत

= 1000 * 389.1

= **Rs.389,100/-**

NRML ट्रेड की मार्जिन को नीचे दिखाया गया है –

COPPER 17FEB FUT						MCX	-0.13%	389.10
PRICE		BIDS		OFFERS				
	ORDERS	QTY.	PRICE	ORDERS	QTY.			
389.10	1	5	389.15	4	12			
389.05	2	3	389.20	7	31			
389.00	9	19	389.25	2	9			
388.95	3	7	389.30	3	8			
388.90	8	30	389.35	2	27			
Total		2,059		Total		2,643		
EXPIRY		%2017-02-28		VOL. TRADED		15,170		
O		391.50		H		393.65		
L		388.75		C		389.60		

तो ये है 30,544 यानी करीब 7.8%, जबकि MIS ट्रेड की मार्जिन इसकी आधी होगी।

कॉपर मिनी कॉन्ट्रैक्ट का लॉट साइज छोटा है इसलिए प्रति टिक P&L भी छोटा होगा और मार्जिन भी।

कीमत – ग्राइस कोट (Price Quote) – प्रति किलोग्राम

लॉट साइज – 250 किलोग्राम

टिक साइज – ₹0.05

प्रति टिक P&L – ₹0.05 * 250 = ₹ 12.50

एक्सपायरी – हर महीने की अंतिम तारीख

डिलीवरी यूनिट – 10 मिट्रिक टन

मेरी सलाह यह होगी कि आप कॉपर में ट्रेड करने के लिए या फिर किसी भी क्मोडिटी में ट्रेड करने के लिए टेक्निकल एनालिसिस का सहारा लें। कॉपर जैसी किसी भी लिक्विड क्मोडिटी में टेक्निकल एनालिसिस अच्छा काम करती है। और अगर आपको सिर्फ कॉन्ट्रैक्ट की जरूरी जानकारी पता हो तो आप आसानी से ये ट्रेड कर सकते हैं।

अब एल्युमिनियम की तरफ बढ़ते हैं।

13.3 – एल्युमिनियम की जरूरी जानकारी

याद रखिए कि यहां पर हमारा इरादा सिर्फ जरूरी जानकारी को चुनना है। हम इस विषय के विस्तार में नहीं जा रहे हैं क्योंकि हमारा इरादा इस क्मोडिटी में ट्रेड करने का है और ऐसा ट्रेड जिसमें हम इन्हें सिर्फ 2 या 3 दिनों के लिए ही होल्ड करेंगे। इसलिए बनाय फंडामेंटल जानकारी बढ़ाते जाने के अलावा फोकस इस पर होना चाहिए कि कीमत कैसे चल रही है। इसलिए मैं जरूरी जानकारी टूना और हमारा के अंत में कुछ बुलेट प्वाइंट भी टूना जिससे आप इन चीजों को ठीक से समझ सकें। इसके बाद कॉन्ट्रैक्ट की जानकारी को देखेंगे।

आमतौर पर एल्युमिनियम का नाम आते ही हम सबसे एक पतले सिल्वर फॉयल (Silver Foil) का ध्यान आता है जिसमें आप अपना खाना लपेटते हैं। लेकिन एल्युमिनियम के और बहुत सारे इस्तेमाल होते हैं। एल्युमिनियम के बारे में कुछ जरूरी बातें आपको जाननी चाहिए, जो हैं

1. एल्युमिनियम की सप्लाई बहुत ज्यादा है (एल्युमिनियम की कोई कमी नहीं है)। पृथ्वी की सतह का करीब 8% हिस्सा एल्युमिनियम से बना हुआ है मतलब दुनिया में ऑक्सीजन और सिलिकॉन के बाद सबसे ज्यादा आसानी से मिलने वाली वस्तु एल्युमिनियम है।
2. एल्युमिनियम में जंग नहीं लगता और इसलिए इसका इस्तेमाल काफी ज्यादा होता है।
3. एल्युमिनियम के उत्पादन में बिजली का खर्च बहुत ज्यादा होता है। एक मेट्रिक टन एल्युमिनियम बनाने के लिए करीब 17.4 मेगावाट बिजली की जरूरत पड़ती है। यहां देखिए –

CONSOLIDATED STATEMENT OF PROFIT AND LOSS FOR THE YEAR ENDED 31 st MARCH, 2016					
	Note No.	Year ended 31/03/2016	(₹ crore)	Year ended 31/03/2015	
INCOME					
Revenue from Operations:	27	102,84.77	106,695.56	2,442.81	2,414.48
Gross Revenue from Operations				100,042.16	104,281.10
Less: Excise Duty				1,215.30	1,047.74
Net Revenue from Operations				101,827.48	105,836.84
Other Income	28				
Total Income					
EXPENSES					
Purchases of Stock-in-Trade		1.48	36.56		
Cost of Materials Consumed	29	58,100.65	66,133.05		
Changes in Inventories of Finished Goods, Work-in-Progress and Stock-in-Trade	30	1,285.22	(1,237.89)		
Employee Benefits Expenses	31	8,238.34	7,991.23		
Power and Fuel	32	9,318.92	8,378.52		
Finance Costs	33	5,548.84	4,378.42		
Depreciation and Amortisation	34	4,126.56	3,493.38		
Impairment Losses/(Reversals) (Net)	35	160.63	97.18		
Other Expenses	36	14,507.72	14,635.03		
Total Expenses		100,586.78	103,165.51		

ऊपर के चित्र में हाईलाइट करके दिखाया गया हिस्सा हिंडालको का यह खर्च है जो वह जगो कंपनी बिजली और ईंधन पर करती है। जैसा कि आप देख सकते हैं कि ये कुल खर्च का करीब 10% है। याद रखिए कि हिंडालको के पास अपने खुद के बिजली घर हैं इसलिए मुझे लगता है कि यह खर्च उस बिजली पर किया गया है जिस बिजली की खरीदारी अपने द्वारा करते हैं बिजली के इस्तेमाल बाद की गयी है।

1. ये जानना भी जरूरी है कि एल्युमिनियम को रि-साइकिल करने में काफी कम बिजली लगती है। एल्युमिनियम को बनाने में जितनी बिजली खर्च होती है, उसका सिर्फ 5% ही रि-साइकिल करने में लगती है।
2. एल्युमिनियम को बनाने में जितनी बिजली खर्च होती है, उसका सिर्फ 5% ही रि-साइकिल करने में लगती है।
3. एल्युमिनियम के बहुत सारे इस्तेमाल होते हैं- एक स्मार्टफोन से लेकर बड़े हवाई जहाज बोइंग 747 तक। शायद आपको पता हो कि एक बोइंग 747 बनाने में करीब 70,000 किलो एल्युमिनियम का इस्तेमाल होता है।
4. एल्युमिनियम का और भी बहुत सारे उद्योगों में इस्तेमाल होता है जैसे ऑटोमोटिव, बिल्डिंग और कंस्ट्रक्शन, डिफेंस, इलेक्ट्रिक, इलेक्ट्रॉनिक, फार्मास्यूटिकल और व्हाइट गुट्स वगैरह।
5. एल्युमिनियम एक ऐसा धातु है जिसकी सप्लाई और डिमांड दोनों काफी ज्यादा है।
6. MCX पर एल्युमिनियम की कीमत अंतरराष्ट्रीय कीमत के हिसाब से ऊपर-नीचे होती है और अंतरराष्ट्रीय कीमत LME (London Metal Exchange) के कारोबार से तय होती है।

नीचे के चित्र को ध्यान से देखने पर आपको समझ में आया कि एल्युमिनियम का उत्पादन, सप्लाई और कीमत (LME पर) किस तरीके से चलती हैं।



स्रोत- हिंडालको वार्षिक रिपोर्ट 2015 2016

यह चार्ट बहुत ही रोचक है। इसके आधार पर आप ट्रेडिंग के कुछ सिद्धांत बना सकते हैं। जैसे चार्ट को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटे हैं और देखते हैं-

1. दुनिया के उत्पादन को देखें (नीले बार से दिखाए गए)- 2015 में एल्युमिनियम का उत्पादन करीब 56 मिलियन टन का था। इसका मतलब है कि पिछले साल के मुकाबले इसके उत्पादन में 4% की बढ़ोतरी हुई।
2. इसके उत्पादन में पिछले 8 साल में CAGR तोर पर 6% की बढ़ोतरी हुई।
3. इसकी मांग (पीले रंग का बार) इसके उत्पादन के बराबर है। इसका मतलब है कि सप्लाई और डिमांड में कोई अंतर नहीं है।
4. वास्तव में सप्लाई और डिमांड पिछले कई सालों से ऐसा ही रहा है, उनमें बदलाव नहीं हुआ है।
5. एल्युमिनियम की कीमत पिछले कुछ सालों में कैसे आई है। यह आमतौर पर \$1,500 प्रति टन पर है जबकि इसकी कीमत का सबसे ऊँचा स्तर \$2,500 प्रति टन रहा है। इसका मतलब ये है कि इसकी कीमत उस रिफाईंस्तर से काफी कम है। आपने कई बार सुना होगा कि दुनिया में क्मोडिटी की एक तरीके से बाढ़ आ गई है। चीन में क्मोडिटी की मांग जिस तरीके से बढ़ी है, उसने एल्युमिनियम की कीमतों पर काफी असर डाला है।
6. भारत में एल्युमिनियम की मांग दुनिया के दूसरे देशों के मुकाबले ज्यादा (प्रतिशत के आधार पर) है। हिंडालको की वार्षिक रिपोर्ट के हिसाब से भारत में एल्युमिनियम की मांग करीब 2 मिलियन टन सालाना की है। इस मांग को ज्यादातर आयात के जरिए पूरा किया जाता है।

मुझे लगता है कि शुरुआत करने के लिए एल्युमिनियम के बारे में इतनी फंडामेंटल जानकारी आपके लिए काफी है। मैं एल्युमिनियम की ट्रेडिंग टेक्निकल एनालिसिस के जरिए ही कलंगा क्योंकि मैं इसको कम समय के लिए होल्ड करने का इरादा रखता हूँ। मैं कभी भी इस ट्रेड को कुछ ट्रेडिंग सेशन से ज्यादा होल्ड नहीं करूंगा।

तो अब आप बढ़ते हैं और MCX पर एल्युमिनियम के कॉन्ट्रैक्ट को देखते हैं।

13.4 – एल्युमिनियम के कॉन्ट्रैक्ट की जानकारी

MCX पर एल्युमिनियम के दो मुख्य कॉन्ट्रैक्ट होते हैं- एक बिंग एल्युमिनियम कॉन्ट्रैक्ट और दूसरा एल्युमिनियम मिनी कॉन्ट्रैक्ट। इन दोनों के बीच में अंतर सिर्फ लॉट साइज का होता है और इसी वजह से इनकी कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू भी अलग-अलग होती है। पहले हम बिंग एल्युमिनियम कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं।

बिग एल्युमिनियम कॉन्ट्रैक्ट में हर दिन औसतन करीब-करीब 375 करोड़ रूपए का कारोबार होता है। कभी-कभी इस ट्रेड का औसत वॉल्यूम 500 करोड़ तक भी पहुंच जाता है। आपको समझ में आ ही गया होगा कि यह उतना ज्यादा नहीं है जितना सोना या कच्चे तेल में होता है।

इस कॉन्ट्रैक्ट की बाकी जानकारी ये है –

कीमत-ग्राइस कोट (Price Quote) – प्रति किलोग्राम

लॉट साइज – 5 मिट्रिक टन

टिक साइज – ₹0.05

प्रति टिक P&L – ₹0.05 * 5000 = ₹ 250

एक्सपायरी – महीने की अंतिम तारीख

डिलीवरी यूनिट – 10 मिट्रिक टन

कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू काफी कम है –

= 1000 * 118.4 (लॉज जाने की ऑफर कीमत)

= **Rs. 118,400/-**

NRML ट्रेड की मार्जिन होगी 6,779 रुपये, जो कि करीब 5.7% है। MIS ट्रेड की मार्जिन काफी कम है करीब 3,389 रुपये जो कि कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू की करीब 2.8% है।

प्रति टिक P&L है ₹50, इस वजह से ट्रेडिंग आसान है।

मुझे लगता है कि इतनी जानकारी एल्युमिनियम में ट्रेडिंग शुरू करने के लिए काफी है। सब कुछ तो आपको सिर्फ चार्ट को देखना है, एक नजरिया बनाना है, उस हिसाब से अपना ट्रेड लगाना है और आप एक अच्छे ट्रेडर बन सकते हैं- अगर आप एल्युमिनियम के बारे में और ज्यादा जानना चाहते हैं तो आप इस वेबसाइट पर नजर डालते हैं। <http://www.world-aluminium.org/> और <http://www.aluminium.org/>

इस अध्याय की मुख्य बातें

1. तांबा और एल्युमिनियम यानी कॉपर और एल्युमिनियम दोनों बेस मेटल हैं।
2. एल्युमिनियम बहुत ज्यादा आसानी से मिलने वाली धातु है (ऑक्सीजन और सिलिकॉन के बाद सबसे आसानी से)।
3. एल्युमिनियम और कॉपर दोनों के डिमांड और सप्लाई में एक तरीके का संतुलन बना हुआ है।
4. एल्युमिनियम और कॉपर की दोनों की कीमतें पिछले कुछ साल में नीचे आई हैं।
5. LME पर यानी लंदन मेटल एक्सचेंज पर एल्युमिनियम और कॉपर की कीमत होती है उसको दुनिया भर में कीमत के लिए बेंचमार्क माना जाता है।
6. एल्युमिनियम और कॉपर दोनों में मुख्य तौर पर दो कॉन्ट्रैक्ट होते हैं बिग कॉन्ट्रैक्ट और मिनी कॉन्ट्रैक्ट।
7. दोनों कॉन्ट्रैक्ट में अंतर सिर्फ लॉट साइज का होता है, जिसकी वजह से कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू और मार्जिन पर असर पड़ता है।

तो अब आप बढ़ते हैं और MCX पर एल्युमिनियम के कॉन्ट्रैक्ट को देखते हैं।

13.4 – एल्युमिनियम के कॉन्ट्रैक्ट की जानकारी

MCX पर एल्युमिनियम के दो मुख्य कॉन्ट्रैक्ट होते हैं- एक बिग एल्युमिनियम कॉन्ट्रैक्ट और दूसरा एल्युमिनियम मिनी कॉन्ट्रैक्ट। इन दोनों के बीच में अंतर सिर्फ लॉट साइज का होता है और इसी वजह से इनकी कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू भी अलग-अलग होती है। पहले हम बिग एल्युमिनियम कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं।

बिग एल्युमिनियम कॉन्ट्रैक्ट में हर दिन औसतन करीब-करीब 375 करोड़ रूपए का कारोबार होता है। कभी-कभी इस ट्रेड का औसत वॉल्यूम 500 करोड़ तक भी पहुंच जाता है। आपको समझ में आ ही गया होगा कि यह उतना ज्यादा नहीं है जितना सोना या कच्चे तेल में होता है।

लेड और निकल

14.1 – लेड- थोड़ा इतिहास थोड़ी जरूरी जानकारी



आपको शायद भरोसा ना हो, लेकिन लेड नाम की इस धातु ने रोम के साम्राज्य को गिराने में एक भूमिका अदा की थी। जरा सोचिए- सोना नहीं, चांदी नहीं कोई हीरे जवाहरात नहीं बल्कि लेड, एक ऐसी धातु जो कि बहुत आसानी से पाई जाती है, उसने इतने बड़े साम्राज्य को गिरा दिया।

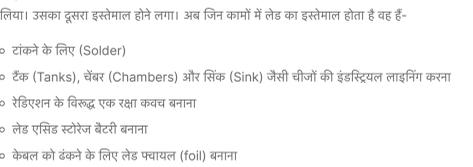
में यहां इतिहास की बात ज्यादा नहीं करेगा। लेकिन यह एक बहुत ही रोचक जानकारी है इसलिए इस मौके का फायदा उठाकर मैं यह जानकारी आप तक पहुंचाना चाहता हूँ।

पहले लेड नाम की इस धातु के लक्षण या गुणों पर नजर डाल लेते हैं यह एक

- भारी और चमकीली धातु है
- यह काफी लचीली होती है और इससे तार बनाए जा सकते हैं
- इससे बिजली नहीं गुजर सकती मतलब यह बिजली का बैट कंडक्टर है
- इस पर आसानी से जंग नहीं लगता है
- यह काफी सघन होती है
- यह काफी आसानी से मिलती है

लेड की खोज काफी पहले ही हो गयी थी और इसका इस्तेमाल प्रागैतिहासिक काल से हो रहा है। ये सबसे पहले खोजी गयी धातु है इस बात के सबूत के तौर पर मिस्र में लेड से बनी मूर्तियां मिली हैं जो 4000 ईसा पूर्व की हैं। शायद लेड का सबसे ज्यादा इस्तेमाल रोम के साम्राज्य में यानी रोमन साम्राज्य में हुआ था और उस समय इसका उत्पादन भी काफी ज्यादा होने लगा था। रोम के लोग लेड का इस्तेमाल पानी के पाइप, पानी की टंक, खाने के बर्तनों और यहां तक कि सौंदर्य प्रसाधनों में भी करने लगे थे।

नीचे के चित्र में आप रोमन काल का एक पानी की पाइप देख सकते हैं



स्रोत – वेलकम इमेजेस, UK

ऐसा माना जाता है कि रोमन काल में लेड की पाइप से घर में पानी पहुंचना ऐश्वर्य का एक संकेत माना जाता था। पानी के पाइप पर उसके मालिक का नाम लिखा होता था (जैसा कि आप ऊपर के चित्र में देख सकते हैं) जिससे लोगों को उसके मालिक के ऐश्वर्य का पता चल सके।

लेड नाम की इस धातु का इतना ज्यादा इस्तेमाल अंत में रोमन साम्राज्य को महंगा पड़ा। आप शायद जानते हो कि मानव के शरीर में लेड का कोई इस्तेमाल नहीं होता। यह जहरीला होता है और इससे कैंसर तक हो सकता है। लेड का इतना ज्यादा इस्तेमाल अंततः उनको महंगा पड़ा। पाइप के जरिए पानी लाने की वजह से बहुत सारे लोगों की जान गई, खासकर बड़े-बड़े फैसले करने वाले अधिकारियों और नेताओं की जान इसकी वजह से चली गई। ऐसा माना जाता है कि इतने लोगों की मौत की वजह से रोमन साम्राज्य का पतन हो गया।

खैर, रोमन साम्राज्य के खत्म होने के बाद लोगों में जागरूकता आई और उन्होंने लेड का बेहतर इस्तेमाल जान लिया। उसका दूसरा इस्तेमाल होने लगा। अब जिन कामों में लेड का इस्तेमाल होता है वह हैं-

- टांकने के लिए (Solder)
- टैंक (Tanks), चैंबर (Chambers) और सिंक (Sink) जैसी चीजों की इंडस्ट्रियल लाइनिंग करना
- रेडिएशन के विरुद्ध एक रक्षा कवच बनाना
- लेड एसिड स्टोरेज बैटरी बनाना
- केबल को टंकने के लिए लेड पचायल (foil) बनाना
- पिगमेंट और कमांडो बनाना
- पानी के जहाज बनाना

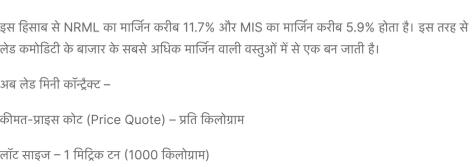
बहुत सारे लोग पैसिंग में लिखाई के लिए लगाने वाले लेड को लेड धातु के तौर पर समझते हैं लेकिन वह लेड अलग होती है वह ग्रेफाइट से बनती है, वास्तव में लेड से नहीं बनती।

पिछले कुछ सालों से लेड की सप्लाई और डिमांड स्थिर रही है। एक बार इसके डाटा पर नजर डालिए –

World Refined Lead Supply and Usage 2011 - 2016					
000 tonnes	2011	2012	2013	2014	2015
Mine Production	4617	4902	5244	4929	4763
Metal Production	10684	10646	11157	10959	10836
Metal Usage	10536	10589	11154	10949	10864

स्रोत – <http://www.ilzsg.org/>

वास्तव में पिछले कुछ सालों में लेड की कीमतें एक रेंज में ही रही हैं। लेड के लॉग टर्म चार्ट पर नजर डालिए खासतौर पर अंतिम कुछ सालों पर-



आगर आप MCX पर लेड में फ्यूचर ट्रेडिंग करना चाहते हैं तो आपको मुख्य तौर पर इसकी कीमतों के आधार पर ही ट्रेडिंग करनी होगी। व्यक्तिगत तौर पर मैं फंडामेंटल के आधार पर या फिर खबरों के आधार पर लेड में ट्रेडिंग नहीं करना चाहूंगा। लेकिन अगर आप ऐसा करना चाहते हैं तो लेड के फंडामेंटल डाटा को देखने के लिए यहां क्लिक करें।

14.2 – कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियाँ

इसके कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियों पर एक नजर डालते हैं। MCX पर दूसरी कई धातुओं की तरह लेड के भी दो कॉन्ट्रैक्ट होते हैं – लेड (बिग कॉन्ट्रैक्ट) और लेड मिनी। पहले लेड के बिग कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियों पर एक नजर डालते हैं।

कीमत-प्राइस कोट (Price Quote) – प्रति किलोग्राम

लॉट साइज – 5 मिट्रिक टन (5000 किलोग्राम)

टिक साइज – ₹0.05

प्रति टिक P&L – ₹0.05 * 5000 = ₹ 250

एक्सपायरी – महीने की अंतिम तारीख

डिलीवरी यूनिट – 10 मिट्रिक टन

जनवरी 2017 में एक्सपायर हो रहे कॉन्ट्रैक्ट के कोट (Quote) पर नजर डालते हैं

LEAD JAN FUT <small>MCX</small>						+0.81 %		137.05	
BIDS		OFFERS							
PRICE	ORDERS	QTY.	PRICE	ORDERS	QTY.				
137.05	1	1	137.10	2	3				
137.00	2	2	137.15	5	5				
136.95	6	6	137.20	10	16				
136.90	7	11	137.25	7	11				
136.85	8	17	137.30	8	16				
Total		528		Total		652			
EXPIRY		%2017-01-31		VOL. TRADED		1,202			
O 136.60		H 137.35		L 136.50		C 135.95			

यहां पर कीमत ₹137.05 प्रति किलो दिख रही है। इसलिए कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी –

लॉट साइज * कीमत

= 5000 * 137.05

= **Rs.685,250/-**

NRML ट्रेड की मार्जिन को नीचे दिखाया गया है –

#	Commodity	Lot Size	Price	NRML Margin	MIS Margin
17	LEAD	5 MT	135.95	80482	40241
17	LEADMINI	1 MT	136	16442	8221

जैसा कि आप देख सकते हैं कि NRML ट्रेड (ओवरनाइट पोजिशन) के लिए मार्जिन 80,482 रुपये है, और MIS (इट्टा डे) के लिए मार्जिन 40,241 रुपये है।

इस हिसाब से NRML का मार्जिन करीब 11.7% और MIS का मार्जिन करीब 5.9% होता है। इस तरह से लेड कमांडिटी के बाजार के सबसे अधिक मार्जिन वाली वस्तुओं में से एक बन जाती है।

अब लेड मिनी कॉन्ट्रैक्ट –

कीमत-प्राइस कोट (Price Quote) – प्रति किलोग्राम

लॉट साइज – 1 मिट्रिक टन (1000 किलोग्राम)

टिक साइज – ₹0.05

प्रति टिक P&L – ₹0.05 * 1000 = ₹ 50

एक्सपायरी – महीने की अंतिम तारीख

डिलीवरी यूनिट – 10 मिट्रिक टन

जनवरी 2017 में एक्सपायर हो रहे लेड मिनी के कॉन्ट्रैक्ट के कोट (Quote) पर नजर डालते हैं

यहां पर कीमत ₹ 137.5 प्रति किलो दिख रही है। इसलिए कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी –

लॉट साइज * कीमत

= 1000 * 137.5

= **Rs.137,500/-**

NRML ट्रेड की मार्जिन को नीचे दिखाया गया है –

#	Commodity	Lot Size	Price	NRML Margin	MIS Margin
17	LEAD	5 MT	135.95	80482	40241
17	LEADMINI	1 MT	136	16442	8221

इस हिसाब से NRML का मार्जिन करीब 11.7% के बिग कॉन्ट्रैक्ट की तरह ही होता है। लेड मिनी का कॉन्ट्रैक्ट (NRML और MIS दोनों के लिए) लेड के लिए कॉन्ट्रैक्ट की तरह ही होता है। लेकिन यहां पर कॉन्ट्रैक्ट का लॉट साइज छोटा है इसलिए मार्जिन के लिए पैसे कम लगते हैं।

14.3 – लेड कॉन्ट्रैक्ट का तर्क

MCX हर महीने एक नया कॉन्ट्रैक्ट जारी करता है और हर नया कॉन्ट्रैक्ट पांचवें महीने के अंतिम कामकाजी दिन को समाप्त होता है। उदाहरण के तौर पर MCX जनवरी 2017 में मई 2017 का कॉन्ट्रैक्ट जारी करेगा और मई 2017 का यह कॉन्ट्रैक्ट मई के अंतिम कामकाजी दिन को खत्म होगा।

ध्यान दें कि जनवरी 2017 का अपना कॉन्ट्रैक्ट जनवरी के अंतिम कामकाजी दिन को खत्म होगा। जैसा की आप नीचे के टेबल में देख सकते हैं कि जनवरी का कॉन्ट्रैक्ट करीब 5 महीने पहले यानी सितंबर 2016 में जारी हुआ है।

कॉन्ट्रैक्ट को इस तरह से इसलिए जारी किया जाता है क्योंकि हर समय मौजूदा महीने यानी करंट मंथ का एक कॉन्ट्रैक्ट मौजूद रहे।

नीचे के टेबल पर नजर डालिए –

Contract Months	Launch	Contract Months	Expiry
September		January	
October		February	
November		March	
December		April	
January		May	
February		June	
March		July	
April		August	
May		September	
June		October	
July		November	
August		December	

हालांकि हर कॉन्ट्रैक्ट एक्सपायरी से 5 महीने पहले जारी होता है, लेकिन उसमें लिक्विडिटी अंतिम महीने में ही आती है। इसीलिए हमेशा मौजूदा महीने के कॉन्ट्रैक्ट में ही ट्रेडिंग करना फायदेमंद होता है, क्योंकि ज्यादा लिक्विडिटी की वजह से बिड और आस्क का स्प्रेड कम मिलता है, और स्प्रेड कम मिलता तो इंपैक्ट कॉस्ट (Impact Cost) कम होता है, और इंपैक्ट कॉस्ट कम होने से फायदा यह होता है कि जब आप मार्केट ऑर्डर डालते हैं तो आपको नुकसान भी कम होता है।

14.4 – निकल की जरूरी जानकारी

निकल और इससे जुड़े दुसरे मिश्रधातु का हमारे जीवन में बहुत उपयोग होता है। किचन का सामान हो, मोबाइल फोन हो, मेडिकल से जुड़े उपकरण हो, बिल्डिंग हो, बिजली का उत्पादन और यहां तक कि ट्रांसपोर्ट में भी, निकल का इस्तेमाल हर जगह किया जाता है। निकल का सबसे ज्यादा इस्तेमाल स्टेनलेस स्टील बनाने में होता है। निकल के कुल उत्पादन का करीब 65% स्टेनलेस स्टील बनाने में जाता है।

निकल के डिमांड और सप्लाई पर एक नजर डालिए

Primary Nickel Production (000 tonnes)	2009	2010	2011	2012	2013	2014
Africa	36.6	36.3	36.7	41.2	59.0	75.2
America	234.1	223.1	268.0	306.1	293.3	295.7
Asia	432.0	537.6	631.2	728.0	922.5	939.6
Europe	446.1	503.4	515.7	510.3	498.3	483.6
EU27	81.5	108.7	119.2	117.8	116.6	109.4
Oceania	167.6	141.4	150.2	174.1	189.9	199.8
World Total	1316.4	1441.8	1601.8	1759.7	1963.1	1993.6

Primary Nickel Usage (000 tonnes)	2009	2010	2011	2012	2013	2014
Africa	31.7	24.0	23.9	24.6	22.9	21.4
America	121.8	153.2	165.0	166.4	174.8	181.9
Asia	760.4	929.4	1050.6	1109.9	1233.7	1308.6
Europe	317.7	355.9	364.5	364.1	350.8	353.9
EU27	279.9	317.4	325.5	322.0	310.6	313.5
Oceania	2.7	2.7	2.7	2.7	2.7	2.7
World Total	1234.3	1465.2	1606.7	1667.7	1784.9	1868.5

जैसा कि आप देख सकते हैं कि निकल की उत्पादन इसकी मांग से ज्यादा हो गया है। शायद इसी वजह से पिछले कुछ सालों से निकल की कीमत डोलने लगी है।

आगर आप MCX पर निकल फ्यूचर में ट्रेडिंग करना चाहते हैं तो मेरी सलाह फिर से यही होगी कि आपको मुख्य तौर पर इसकी कीमतों के आधार पर ही ट्रेडिंग करनी होगी, फंडामेंटल के आधार पर नहीं।

14.5 – निकल के कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियाँ

निकल के भी दो कॉन्ट्रैक्ट होते हैं – निकल (बिग कॉन्ट्रैक्ट) और निकल मिनी। पहले निकल के बिग कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियों पर एक नजर डालते हैं।

कीमत-प्राइस कोट (Price Quote) – प्रति किलोग्राम

लॉट साइज – 250 किलोग्राम

टिक साइज – ₹0.10

प्रति टिक P&L – ₹0.10 * 250 = ₹25

एक्सपायरी – महीने की अंतिम तारीख

डिलीवरी यूनिट – 3 मिट्रिक टन

जनवरी 2017 में एक्सपायर हो रहे निकल के कॉन्ट्रैक्ट के कोट (Quote) पर नजर डालते हैं –

NICKEL JAN FUT <small>MCX</small>						+0.39 %		686.50	
BIDS		OFFERS							
PRICE	ORDERS	QTY.	PRICE	ORDERS	QTY.				
686.30	2	13	686.60	1	1				
686.20	2	5	686.70	2	7				
686.00	3	7	686.80	1	5				
685.90	1	2	686.90	2	9				
685.80	3	21	687.00	4	11				
Total		630		Total		1,164			
EXPIRY		%2017-01-31		VOL. TRADED		4,439			
O 686.30		H 689.40		L 685.40		C 683.80			

यहां पर कीमत ₹ 686.5 प्रति किलो दिख रही है। इसलिए कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी –

लॉट साइज * कीमत

= 100 * 686.5

= **Rs.68,600/-**

NRML ट्रेड की मार्जिन को नीचे दिखाया गया है –

#	Commodity	Lot Size	Price	NRML Margin	MIS Margin
21	NICKEL	250 KGS	688.8	16924	8462
21	NICKELM	100 KGS	688.8	6964	3547

जैसा कि आप देख सकते हैं कि NRML ट्रेड (ओवरनाइट पोजिशन) के लिए मार्जिन 16,924 रुपये है, और MIS (इट्टा डे) के लिए मार्जिन 8,462 रुपये है।

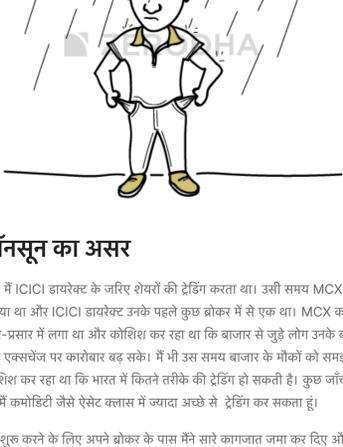
इस हिसाब से NRML का मार्जिन करीब 10% और MIS का मार्जिन करीब 5% होता है।

कॉन्ट्रैक्ट हर महीने जारी होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे लेड में होते हैं। मेरी सलाह होगी कि आप करंट मंथ के कॉन्ट्रैक्ट में ही सौदे करें क्योंकि उसमें लिक्विडिटी होगी।

इस अध्याय की मुख्य बातें

1. लेड फ्यूचर में दो कॉन्ट्रैक्ट होते हैं – बिग कॉन्ट्रैक्ट और मिनी कॉन्ट्रैक्ट।
2. लेड का लॉट साइज 5000 मिट्रिक टन और लेड मिनी का 1000 मिट्रिक टन होता है।
3. लेड का प्रति टिक P&L 250 रुपये और लेड मिनी का 50 रुपये होता है।
4. लेड की डिमांड और सप्लाई पिछले कुछ सालों से स्थिर रही है।
5. निकल फ्यूचर में दो कॉन्ट्रैक्ट होते हैं – बिग कॉन्ट्रैक्ट और मिनी कॉन्ट्रैक्ट।
6. निकल का लॉट साइज 250 किलो और निकल मिनी का 100 किलो होता है।
7. निकल का प्रति टिक P&L 25 रुपये और निकल मिनी का 10 रुपये होता है।
8. निकल की सप्लाई उसकी मांग से अधिक है।
9. लेड और निकल दोनों में ही सलाह ये होगी कि आप करंट मंथ के कॉन्ट्रैक्ट में ही सौदे करें क्योंकि उसमें लिक्विडिटी होगी।
10. लेड और निकल दोनों में ही इनकी कीमतों के आधार पर ही शॉर्ट टर्म ट्रेडिंग करनी चाहिए, फंडामेंटल के आधार पर नहीं।

इलायची और मेंथा ऑयल



15.1 – मॉनसून का असर

एक समय था, जब मैं ICICI डायरेक्ट के जरिए शेयर्स की ट्रेडिंग करता था। उसी समय MCX ने अपना कामकाज शुरू किया था और ICICI डायरेक्ट उनके पहले कुछ ब्रोकर में से एक था। MCX काफी जोर-शोर से अपने प्रचार-प्रसार में लगा था और कोशिश कर रहा था कि बाजार से जुड़े लोग उनके बारे में जान जाएं, जिससे उनके एक्सचेंज पर कारोबार बढ़ सके। मैं भी उस समय बाजार के मौकों को समझ रहा था और यह जानने की कोशिश कर रहा था कि भारत में कितने तरीके की ट्रेडिंग हो सकती है। कुछ जांच पड़ताल के बाद मुझे लगा कि मैं कमांडिटी जैसे ऐसेट क्लास में ज्यादा अच्छे से ट्रेडिंग कर सकता हूँ।

कमांडिटी में ट्रेडिंग शुरू करने के लिए अपने ब्रोकर के पास मैंने सारे कागजात जमा कर दिए और अपना ट्रेडिंग अकाउंट खोलने को कहा। मैं बैंगलूर से MCX पर ट्रेडिंग अकाउंट खोलने वाले पहले कुछ लोगों में से एक था। MCX पर अकाउंट खोलने में मुझे 12 दिन लग गए।

फिर एक दिन मेरे ब्रोकर का ध्यान आया और उसने बताया कि मैं अगले दिन से MCX पर ट्रेडिंग कर सकता हूँ। मैं इतना अधिक उत्तेजित था कि मैंने ट्रेडिंग शुरू के लिए एक दिन की छुट्टी ले ली।

मैंने अपने सबसे पहला कमांडिटी ट्रेड काली मिर्च के फ्यूचर (Pepper Futures) में किया। मैंने काली मिर्च को क्यों चुना यह तो मुझे याद नहीं है लेकिन मैंने काली मिर्च को ही चुना।

तो मैंने काली मिर्च में लॉन्ग ट्रेड किया। मैंने 10 लॉट खरीदे (शायद वो एक मिट्टिक टन का कॉन्ट्रैक्ट था)। कीमत मुझे पूरी तरह से याद नहीं है लेकिन यह करीब ₹7500 प्रति क्विंटल थी। मैंने अपने ट्रेडिंग अकाउंट के सारे पैसे इस सौदे पर लगा दिए।

इसके बाद वही हुआ जो आमतौर पर हमेशा होता है, काली मिर्च अगले 2 दिनों में अपने 52 हफ्तों के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई। मैंने और पैसे लगाए, लेकिन काली मिर्च नीचे गिरती रही और धीरे-धीरे मैंने अपने सारे पैसे इस पर लगा दिए।

निराश हो कर मैंने यह पता करने की कोशिश की कि आखिर ऐसा क्यों हुआ। तब मुझे पता चला कि कोच्चि के आसपास अच्छा मॉनसून होने की संभावना थी जिसकी वजह से काली मिर्च की फसल काफी अच्छा होने की उम्मीद थी जिसकी वजह से कीमतें गिर रही थीं।

अब जा कर मुझे समझ में आया कि किसी भी एग्री कमांडिटी में ट्रेडिंग करने के पहले हमें मॉनसून और उस फसल पर मॉनसून के असर को समझना जरूरी होता है। मैंने लिए यह समझना काफी मशगल पड़। इसीलिए मुझे वह दिन आज तक याद है।

इसी वजह से हम शुरूआत में कुछ समय इस विषय को समझने में लगाएंगे ताकि कोई भी व्यक्ति वो गलती ना दोहराए जो मैंने की थी।

यहां पर आपको यह भी बता दूँ कि जब मेरा ट्रेडिंग अकाउंट खाली हो गया था और कमांडिटी के पहले सौदे में मैंने अपने बाध्य जलाए उसके बाद काली मिर्च का फ्यूचर तेजी से ऊपर भागा और ₹12500 प्रति क्विंटल तक पहुंच गया था।

15.2 – बारिश को समझिए

भारतीय अर्थव्यवस्था की कृषि पर निर्भरता अब पहले के मुकाबले कम हो गई है। कुछ दशकों पहले तक भारत की GDP का 30% कृषि से आता था। लेकिन अब कृषि, GDP का, सिर्फ 10% हिस्सा ही है।

लेकिन कृषि और इससे जुड़ी सेवाओं में सबसे ज्यादा लोगों को रोजगार मिलता है। शायद यही वजह है कि केंद्र सरकार जब भी कोई बड़ा लोकप्रिय फैसला या सुधार करना चाहती है तो वह इसी सेक्टर में होता है।

नीचे के चित्र पर नजर डालिए। इससे आपको यह पता चलेगा कि कौन सा सेक्टर भारतीय अर्थव्यवस्था में किस तरह से योगदान करता है।

Percentage contribution to Indian Economy (by sectors)											
Year	Agribusiness, Forestry and Fishing	Industry	Mining	Manufacturing	Energy	Services	Construction	Health	Transport, Logistics	Financial services, Real Estate & Insurance	Public Administration
2012-13	10.1%	12.4%	1.7%	14.5%	1.2%	32.7%	3.2%	6.0%	2.6%	12.4%	10.4%
2013-14	10.2%	12.4%	1.7%	14.5%	1.2%	32.7%	3.2%	6.0%	2.6%	12.4%	10.4%
2014-15	9.6%	11.8%	1.4%	14.0%	1.0%	34.0%	4.0%	6.0%	3.2%	11.4%	10.0%
2015-16	9.4%	11.9%	1.4%	14.0%	1.0%	34.0%	4.0%	6.0%	3.2%	11.4%	10.0%

इस डेटा/डाटा का प्रकाशन रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया यानी RBI 1950 से लगातार करता आ रहा है और मैंने इसे उसकी वेबसाइट से लिया है। मैंने इस डेटा/डाटा में सिर्फ थोड़ा सा बदलाव किया है, जिससे कि मैं आप को प्रतिशत में हर सेक्टर का योगदान दिखा सकूँ। मैंने इस कि आप देख सकते हैं कि कुछ सालों में कृषि का योगदान प्रतिशत तौर पर घटा है जबकि सर्विसेज यानी सेवाओं (सॉफ्टवेयर और उससे जुड़ी सेवाएं) का योगदान लगातार बढ़ा है।

लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा है कि कृषि क्षेत्र में अभी भी सबसे ज्यादा रोजगार मिलता है। कृषि उद्योग और इससे जुड़े सारे लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण ये जानना होता है कि इस बार बारिश कैसी होगी। बारिश इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत में कृषि योग्य भूमि का 2/3 हिस्सा बारिश से ही सींचा जाता है।

भारत में बारिश (मॉनसून) के दो मौसम होते हैं –

1. दक्षिणी पश्चिमी मॉनसून (बारिश का मुख्य मौसम) और
2. उत्तर पूर्वी मॉनसून

बारिश के इन दो मौसमों के बारे में जानने योग्य मुख्य बातें हैं –

1. दक्षिणी पश्चिमी मॉनसून दक्षिण भारत में शुरू होता है और मध्य भारत के पूरे हिस्से में इसका प्रभाव होता है। इस मौसम की बारिश जून या जुलाई में शुरू होती है और सितंबर-अक्टूबर तक चलती है।
2. उत्तर पूर्वी मॉनसून भारत के उत्तर और पूर्वी हिस्से में प्रभाव दिखाता है। उत्तर भारत, हिमालय के आसपास, पश्चिमी हिस्से और तमिलनाडु का एक बड़ा हिस्सा इसके प्रभाव में रहता है। यह बारिश दिसंबर से शुरू होती है और मार्च तक चलती है।

मॉनसून के इन दोनों मौसमों में बीज बोए जाते हैं और फिर बाद में फसल काटी जाती है। बारिश अच्छी होगी या बुरी इसके आधार पर फसल का अनुमान लगाया जाता है।

- दक्षिणी पश्चिमी मॉनसून के समय जिस फसल की बुवाई होती है उसे खरीफ की फसल कहते हैं। इसमें खासतौर पर अलग-अलग किस्म की दालें, उड़द दाल, मूंग दाल, चावल और कपास आदि की फसल होती है। फसल की बुआई करीब मई या जून के शुरू में होती है (दक्षिणी पश्चिमी मॉनसून के शुरू होने के ठीक पहले) और इस फसल की कटाई मॉनसून के बाद अक्टूबर के महीने में होती है।
- उत्तर पूर्वी मॉनसून के समय होने वाली फसल को रबी की फसल कहा जाता है। रबी में आमतौर पर गेहूँ, चना, धनिया और सरसों आदि पैदा होता है। रबी की बुआई सर्दी के मौसम के शुरू में होती है और इसकी कटाई अप्रैल के महीने में होती है।

भारत में सबसे ज्यादा खपत वाले खाद्यान्न चावल और गेहूँ हैं और हमारे खाद्यान्न उत्पादन का 40% इन्हीं दोनों में होता है। इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था में और भारतीय खाद्यान्न सुरक्षा में इनकी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। ध्यान रखिए कि इनकी कटाई और बुआई खरीफ और रबी मौसम में होती है।

फसल की बुआई और कटाई पर लगातार नजर रखी जाती है और इसके बारे में अलग-अलग समय पर रिपोर्ट भी आती रहती है। एक नजर डालिए रबी की रिपोर्ट पर –

RABI CROP SOWING DATA

	Area sown (m ha)	
Crops	2012-13	2011-12
Wheat	29.76	28.53
Rice (rabi)	1.48	2.04
Sorghum	3.88	3.77
Coarse cereals	6.19	5.89
Gram	9.32	8.96
Pulses	14.45	14.59
Rapeseed & mustard	6.72	6.54
Oilseeds	8.62	8.46
Total rabi area	60.50	60.84

Source: Ministry of agriculture

ये है खरीफ की रिपोर्ट –

OVERALL KHARIF ACREAGE (AS ON JULY 13)

Crops	Normal Area	This year	Last year	Change (in lakh ha)
Rice	111.63	96.79	120.4	-23.61
Coarse cereals	79.82	39.76	74.39	-34.63
Pulses	32.88	20.54	32.83	-12.29
Oilseeds	78.33	67.70	86.97	-19.27
Sugarcane	46.97	52.85	50.77	2.08
Cotton	70.43	65.22	59.22	6
Jute+Mesta	8	8.18	8.79	-0.61
Total Kharif area	428.06	351.04	433.37	-82.34

अब तक दी गयी जानकारी को देखते हुए मुझे लगता है कि आपको इस समाचार को पढ़ना चाहिए। **news piece**.

मुझे लगता है कि इससे हमारी अब तक की चर्चा को समझने में आसानी होगी और आप ये समझ सकते हैं कि ये समाचार इससे किस तरह से जुड़ा हुआ है। अगर आप एग्री कमांडिटी में ट्रेडिंग करने के बारे में गंभीर हैं तो आपको इस तरह की समाचारों पर नजर रखनी चाहिए और इनकी आधार पर अपनी रणनीति बनानी चाहिए।

MCX पर जिन एग्री कमांडिटी में ट्रेड होता है, वो हैं

1. इलायची यानी कार्डमम (Cardamom)
2. केन्टर सीड
3. कॉइन
4. फूड पाम ऑयल
5. कपास
6. मेंथा ऑयल

इनमें से मेरी सलाह यह होगी कि आप इलायची और मेंथा आयल में ट्रेड करें क्योंकि यहां पर लिक्विडिटी अच्छी होती है।

आइए इन दोनों कमांडिटी पर चर्चा करते हैं, यहां यह भी ध्यान रखिए कि एग्री कमांडिटी में ट्रेडिंग 5:00 बजे तक चलती है।

15.3 – इलायची

इलायची मुख्य तौर पर दक्षिण भारत में (कर्नाटक और केरल में) पैदा होती है। भारत में पैदा होने वाली इलायची को स्मॉल कार्डमम यानी छोटी इलायची कहते हैं। भारत दुनिया में इसका दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है जबकि खपत के मामले में भारत दुनिया में नंबर 1 है। दुनिया में इलायची का सबसे बड़ा उत्पादक ग्वाटेमाला (Guatemala) है। ग्वाटेमाला में होने पैदा होने वाली इलायची मुख्य तौर पर निर्यात ही होती है।

जैसा कि आप जानते हैं कि इलायची का इस्तेमाल कई तरह की भारतीय मिठाइयों में होता है। इसके अलावा कुछ इसकी औषधियों में भी इसकी जरूरत पड़ती है, खासकर त्वचा और दांत के इलाज में इसका इस्तेमाल किया जाता है।

इलायची खरीफ की फसल है। इसकी मांग और सप्लाई निम्न चीजों पर निर्भर करती है

1. दक्षिणी पश्चिमी मॉनसून
2. इसकी गुणवत्ता यानी महक, रंग, आकार और फसल की खुशबू
3. फसल की स्थिति – जैसे कीड़ा का असर
4. भारत और ग्वाटेमाला में इसके मौजूदा स्टॉक
5. भारत में इसकी खपत का चलन (हालांकि इसमें सालों से कोई ज्यादा बदलाव नहीं आया है)

एक नजर डालते हैं इसके कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारी पर। दूसरी कई कमांडिटी की तरह MCX पर इलायची के दो तरह के कॉन्ट्रैक्ट नहीं होते हैं।

इलायची की डिमांड और सप्लाई करीब-करीब स्थिर है। इलायची से जुड़ी एक खबर में आपको यहां पढ़ना चाहना है

BusinessLine

Home	News	Markets	Companies	Money & Banking	Economy	Info-tech	Opinion
Stocks	Forex	Commodities	Gold & Silver	Today's Pick	Portfolio Tracker		

Small cardamom maintains steady aroma

OUR CORRESPONDENT COMMENTS · PRINT · T+

Like 0 Share Tweet +1 0 LinkedIn Share 0 Share

KOCHI, JANUARY 16: Small cardamom prices remained unchanged last week at auctions held in Kerala and Tamil Nadu. The matching demand and supply during the week has been attributed to the steady market trend.

Harvesting is almost over and hence the supply is unlikely to increase in the coming days, PC Punnoose, General Manager, CPMAC, told BusinessLine.

He said buyers were active and were covering apprehending short supplies in the coming weeks. Exporters were also covering and they have bought and estimated 60-70 tonnes of exportable variety capsules last week, he said.

Total arrivals during the season from August 1 up to January 13 were at 10,897 tonnes and sales were at 10,330 tonnes. The individual auction average for the season as on January 13 stood at 1,092.50 a kg.

(This article was published on January 16, 2017)

Post Comment

अब कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियों पर एक नजर डालते हैं।

कीमत-प्राइस क्वाट (Price Quote) – प्रति किलोग्राम

लॉट साइज – 100 किलोग्राम

टिक साइज – ₹0.10

प्रति टिक P&L – ₹ 10

एक्सपायरी – महीने की 15 तारीख

डिलीवरी यूनिट – 100 किलोग्राम

फरवरी 2017 में एक्सपायर हो रहे इलायची के कॉन्ट्रैक्ट के कोट (Quote) पर नजर डालते हैं

CARDAMOM FEB FUT		MCX	+0.56%	1564.00
PRICE	BIDS	QTY.	PRICE	OFFERS
1563.60	1	1	1566.50	1
1563.50	1	1	1566.60	1
1563.30	1	1	1567.50	1
1563.10	1	1	1568.00	1
1560.50	1	1	1569.40	1
Total	83	Total	81	

EXPIRY	2017-02-15	VOL. TRADED	320
	1560.00	H 1580.00	L 1554.00
			C 1555.30

यहां पर कीमत ₹1564 प्रति किलो दिख रही है। इसलिए कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी –

लॉट साइज * कीमत

= 100 * 1564

= **Rs.156,400/-**

NRML ट्रेड की मार्जिन को नीचे दिखाया गया है –

#	Commodity	Lot size	Price	NRML Margin	MIS Margin
1	ALUMINIUM	1 MT	121.75	7061	3530
2	ALUMINIUM	5 MT	121.8	35305	17652
0	CARDAMOM	100 KGS	1556.3	16237	N/A

जैसा कि आप देख सकते हैं कि NRML ट्रेड (ओवरनाइट पोजिशन) के लिए मार्जिन 16,237 रुपये है, यानी NRML ट्रेड का मार्जिन करीब 10% है।

जैसा कि आप को दिख रहा होगा कि इलायची में MIS मार्जिन उपलब्ध नहीं है। वास्तव में MCX पर किसी भी एग्री कमांडिटी के लिए MIS मार्जिन नहीं होता है। इसकी वजह यह है कि एग्री कमांडिटी में काफी ज्यादा उतार-चढ़ाव होता है और यह आसानी से सर्किट के स्तर तक पहुंच जाती है। इसलिए इनमें उसी दिन पोजिशन लेना और उससे बच निकलना आसान नहीं होता। इसीलिए किसी भी ट्रेडर के लिए अच्छा यह है कि वह अगर डे ट्रेडिंग भी कर रहा है तो वह NRML में इंटरडे पोजिशन ले।

इलायची के कॉन्ट्रैक्ट जारी होने से जुड़ी जानकारी पर एक नजर डालिए

Contract Launch Calendar for cardamom contracts expiring during the year 2016 and 2017 onwards

Contract Launch Months	Contract Expiry Months
August	January
September	February
October	March
November	April
December	May
January	June
February	July
March	August
April	September
May	October
June	November
July	December

जैसा कि आप देख सकते हैं कि हर महीने एक 6 महीने का फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट जारी किया जाता है। उदाहरण के तौर पर जनवरी में जून का फ्यूचर जारी होता है। जून का फ्यूचर 15 जून तक चलना (याद रखें की एक्सपायरी हर महीने के 15 तारीख को होती है)। जैसा कि आपको पता ही है कि यह हमेशा अच्छा होता है कि मौजूदा महीने के कॉन्ट्रैक्ट में ही ट्रेड करना बेहतर होता है क्योंकि यहां पर लिक्विडिटी ज्यादा होती है।

उदाहरण के तौर पर जब मैं इस अध्याय को लिख रहा हूँ (17 जनवरी 2017 को) और अगर मुझे इलायची में ट्रेड करना है तो मैं फरवरी 2017 के इलायची कॉन्ट्रैक्ट में ट्रेड करूंगा (जनवरी 2017 का कॉन्ट्रैक्ट 15 जनवरी को एक्सपायर हो चुका है)

15.4 – मेंथा ऑयल – Mentha Oil

मेंथा एक तरीके का पौधा है जिसका इस्तेमाल भारतीय रसोई में होता है। इसमें से मेंथा आयल निकाला जाता है। मेंथा आयल MCX पर ट्रेड होता है। मेंथा ऑयल का इस्तेमाल खाने की चीजों, दवाओं, खुशबू और परफ्यूम में होता है।

मेंथा ऑयल का एक्सपोर्ट चीन, अमेरिका और सिंगापुर जैसे देशों को भी किया जाता है। और यही वजह है कि मेंथा आयल के कॉन्ट्रैक्ट पर USD INR के रेट का असर पड़ता है। इसके अलावा बारिश, फसल में कीड़े लगना, कितनी जमीन पर फसल लगाई गई है, इनका असर भी इसके कॉन्ट्रैक्ट पर पड़ता है।

अब मेंथा ऑयल के कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियों पर एक नजर डालते हैं।

कीमत-प्राइस क्वाट (Price Quote) – प्रति किलोग्राम

लॉट साइज – 360 किलोग्राम

टिक साइज – ₹0.10

प्रति टिक P&L – ₹36

एक्सपायरी – महीने की 15 तारीख

डिलीवरी यूनिट – 360 किलोग्राम

मेंथा ऑयल शायद अकेली लिस्टेड वस्तु है जिसका प्रति टिक P&L – ₹36 है।

जनवरी 2017 में एक्सपायर हो रहे मेंथा ऑयल के कॉन्ट्रैक्ट के कोट (Quote) पर नजर डालते हैं

MENTHAOIL JAN FUT		MCX	-0.44%	1023.20
PRICE	BIDS	QTY.	PRICE	OFFERS
1023.00	1	1	1023.90	1
1022.50	1	1	1025.00	1
1022.10	1	6	1025.40	1
1022.00	2	2	1025.50	1
1021.00	5	7	1026.00	2
Total	253	Total	212	

EXPIRY	%2017-01-31	VOL. TRADED	531
	1029.10	H 1030.90	L 1020.20
			C 1027.70

यहां पर कीमत ₹ 1023.2 प्रति किलो दिख रही है। इसलिए कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी –

लॉट साइज * कीमत

= 360 * 1023.2

= **Rs.368,352/-**

NRML ट्रेड की मार्जिन को नीचे दिखाया गया है –

#	Commodity	Lot size	Price	NRML Margin	MIS Margin
19	MENTHAOIL	360 KGS	1027.7	2983	N/A

जैसा कि आप देख सकते हैं कि NRML ट्रेड (ओवरनाइट पोजिशन) के लिए मार्जिन 29,893 रुपये है, यानी NRML ट्रेड का मार्जिन करीब 8.5% है। मेंथा ऑयल में भी उभर बताई गई वजहों से MIS मार्जिन नहीं होता है।

हर महीने 5 महीने का एक फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट जारी किया जाता है। आपको पता ही है कि यह हमेशा अच्छा होता है कि मौजूदा महीने के कॉन्ट्रैक्ट में ही ट्रेड करना बेहतर होता है क्योंकि यहां पर लिक्विडिटी ज्यादा होती है।

इस अध्याय की मुख्य बातें

नैचुरल गैस



16.1 – इतिहास और पृष्ठभूमि

हम इस अध्याय में नैचुरल गैस के बारे में चर्चा करेंगे, हमेशा की तरह हम इस बार भी हम पृष्ठभूमि को जानेंगे, थोड़ा इतिहास समझेंगे और यह जानने की कोशिश करेंगे कि इसको कैसे निकाला जाता है।

नैचुरल गैस अपने आप से पैदा होने वाली एक हाइड्रोकार्बन गैस का मिश्रण है। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में इसका काफी इस्तेमाल होता है, जैसे बिजली बनाने के लिए, चीजों को गर्म करने के लिए और खाना पकाने के लिए। इसके अलावा नैचुरल गैस का इस्तेमाल खाद बनाने के लिए और प्लास्टिक उद्योग में भी होता है।

ऐसा कहा जाता है कि ईसा पूर्व 1000 BC में प्राचीन ग्रीस के माउंट पैरनासस पर्वत पर जमीन से नैचुरल गैस निकल आई और उसने आग पकड़ ली, यहाँ ज्वाला निकलने लगी। ग्रीक लोगों ने इस जगह को ओरेकल ऑफ डेल्फी (Oracle at Delphi) का नाम दिया और वहाँ पर एक मंदिर बना दिया। अगर आपको आश्चर्य हो रहा है कि जमीन से नैचुरल गैस खुद अपने आप कैसे निकल आई तो नीचे के चित्र में देखिए जहाँ पर गैस अपने आप निकली है और उसमें आग लगी हुई है।



चीन में लोगों को ईसा पूर्व करीब 500 BC में नैचुरल गैस मिली। उन लोगों ने इसका बेहतर इस्तेमाल किया। चीन के लोगों ने बांस को एक पाइपलाइन की तरह इस्तेमाल किया। वो बांस के जरिए गैस को दूसरी जगह तक ले गए जहाँ पर उससे समुद्र के पानी को उबाला जाता था और उसे पीने लायक बनाया जाता था।

नैचुरल गैस का व्यवसायिक तौर पर पहला इस्तेमाल ग्रेट ब्रिटेन में 1785 के आसपास हुआ। ब्रिटेन में नैचुरल गैस का इस्तेमाल करके सड़कों और घरों को रोशन किया जाता था।

अब तक आपको समझ में आ गया होगा कि नैचुरल गैस जमीन के नीचे होती है। अब सवाल ये है कि नैचुरल गैस वहाँ क्यों और कैसे होती है।

अब से लाखों साल पहले जब पेड़ पौधे और जानवरों के मृत्यु के बाद जमीन में दबते गए, तो वक्त के साथ ये लगातार नीचे जाते गए। उनके जीवाश्म से ही कोयला, तेल और नैचुरल गैस जैसी चीजें बनीं। इस पूरी प्रक्रिया में लाखों साल लग गए। कुछ स्थानों पर नैचुरल गैस जमीन की दरारों के जरिए नीचे से निकल आई जबकि दूसरी कुछ जगहों पर यह छेद वाले पत्थरों के जरिए बाहर आ गई। अपने प्राकृतिक रूप में नैचुरल गैस में ना कोई रंग होता है, ना कोई गंध होती है और ना ही इसका कोई स्वाद होता है। यह अपने आप में यह एक खतरनाक स्थिति है – कल्पना कीजिए कि नैचुरल गैस कहीं से लीक हो और फैलने लगे और किसी को भी इसका पता ना चले कि वहाँ के वातावरण में नैचुरल गैस फैल रही है, यह काफी खतरनाक स्थिति हो सकती है। इसीलिए नैचुरल गैस का उत्पादन करने वाले लोगों ने इसमें मरकेप्टन (Mercaptan) नाम का एक पदार्थ मिलाया जिसकी वजह से नैचुरल गैस में एक तीखी गंध आने लगी और इसके लीक होने पर इसकी पहचान करना आसान हो गया।

नैचुरल गैस की तलाश लगभग वैसे ही की जाती है जैसे कच्चे तेल की तलाश की जाती है। जियोलाॅजिस्ट यानी भूगर्भ वैज्ञानिक उन जगहों का पता लगाते हैं जहाँ पर नैचुरल गैस हो सकती है। कई बार यह जगह जमीन पर होती है और कभी-कभी समुद्र में गहरे पानी के बीच में भी हो सकती हैं। वैज्ञानिक इसके बाद एक सीस्मिक सर्वे (seismic survey) करते हैं जिससे यह पता चलता है कि किस जगह पर खुदाई करके नैचुरल गैस निकालने की संभावना सबसे ज्यादा है। अगर किसी जगह यह संभावना दिखती है तो वहाँ पर पहले एक छोटा सा कुआँ खोदकर इसकी जाँच और गहराई से की जाती है। अगर उसके बाद यह लग कि इस जगह नैचुरल गैस को निकालने से आर्थिक तौर पर फायदा हो सकता है तो फिर वहाँ पर ज्यादा खुदाई करके नैचुरल गैस निकालने का काम किया जाता है।

भारत दुनिया का 7वां सबसे बड़ा नैचुरल गैस का उत्पादक है। पूरी दुनिया के कुल उत्पादन का 2.5% नैचुरल गैस भारत से निकलता है। भारत में पैदा होने वाले नैचुरल गैस का इस्तेमाल बिजली बनाने के लिए, उद्योगों के ईंधन के तौर पर और एलपीजी (LPG) के तौर पर होता है। नैचुरल गैस उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा खाद उद्योग में कच्चे माल के तौर पर काम भी आता है।

नैचुरल गैस के उत्पादन और इस्तेमाल पर ये चर्चा काफी लंबी चल सकती है लेकिन हम नैचुरल गैस में शॉर्ट टर्म ट्रेडिंग करना चाहते हैं इसलिए इससे अधिक चर्चा की जरूरत शायद नहीं है।

आगे हम नैचुरल गैस के कॉन्ट्रैक्ट के बारे में बात करेंगे। लेकिन नैचुरल गैस पर कोई भी चर्चा तब तक अधूरी है जब तक हम अमरंथ नैचुरल गैस गैबल (Amarant Natural Gas gamble) के बारे में चर्चा ना करें।

16.2 – अमरंथ नैचुरल गैस गैबल

सन 2000 में अमेरिका में एक हेज फंड की शुरुआत की गई जिसका नाम था अमरंथ एडवाइजरर्स। यह फंड अमेरिका के कनेटिकट (Connecticut) में प्रीनविच नाम की जगह से चलता था। यह फंड बहुत सारे काम करता था और हेज फंड रणनीति बनाता था जैसे कन्वर्टिबल बॉन्ड, डॉलर आर्बिट्राज, लेवरेज्ड ऐसेट्स और एनर्जी ट्रेडिंग। सन 2006 के मध्य में यह कंपनी करीब 9 बिलियन डॉलर की हो चुकी थी। इसमें कंपनी का वह मुनाफा भी शामिल था जो वापस इस फंड में डाल दिया गया था। इस तरह से अमरंथ अमेरिका के सबसे बड़े हेज फंड में से एक बन चुका था।

अमरंथ के एनर्जी ट्रेडिंग डेस्क में कामकाज तब बढ़ा जब उन्होंने ब्रायन हंटर नाम के एक बहुत जाने-माने ट्रेडर को अपने यहाँ काम पर रखा। हंटर को इसके पहले काफी लोकप्रियता मिल चुकी थी जब वो डॉयशे बैंक (Deutsche Bank) में नैचुरल गैस के लिए एनर्जी ट्रेडिंग की रणनीति बनाता था। ऐसा माना जाता है कि वहाँ पर उसे कई मिलियन डॉलर का वार्षिक बोनस मिलता था। उसने जब अमरंथ के एनर्जी डेस्क के मुखिया के तौर पर काम करना शुरू किया तो भी उसकी सफलता जारी रही। यहाँ आ कर भी उसने नैचुरल गैस में ही ट्रेडिंग करना जारी रखा। हंटर की वजह से अमरंथ को काफी मुनाफा हुआ, सन 2006 के अप्रैल तक अमरंथ को करीब 2 बिलियन डॉलर का मुनाफा हो चुका था। अमरंथ के ग्राहक और वहाँ का मैनेजमेंट हंटर के ट्रेडिंग के तरीकों से काफी खुश था।

यहाँ पर मैं यह बता दूँ कि भले ही नैचुरल गैस एक अंतर्राष्ट्रीय क्मोडिटी है, लेकिन इसमें खेल करना काफी आसान है। कोई भी ठीक-ठाक से आकार वाला हेज फंड आसानी के साथ कुछ हजार कॉन्ट्रैक्ट की पोजीशन ले सकता है और बाजार पर कब्जा कर सकता है। अमरंथ तब तक नैचुरल गैस के बाजार में काम करने वाले दुनिया के सबसे बड़े हेज फंड में से एक बन गया था।

खैर, 6 अप्रैल 2006 के बाद जो हुआ उस पर नजर डालते हैं-

- हंटर को दिखा कि अमेरिका में नैचुरल गैस की जरूरत से ज्यादा इन्वेंटरी है जिसकी वजह से नैचुरल गैस की कीमतें अमेरिका में नीचे जा सकती हैं।
- नैचुरल गैस की इन्वेंटरी को कच्चे तेल के इन्वेंटरी की तरह सप्लाई डिमांड के बीच के अंतर को भरने के लिए आसानी से एक जगह से दूसरी जगह नहीं पहुँचाया जा सकता।
- हंटर को यह भी उम्मीद थी कि अमेरिका में आने वाली सर्दियाँ काफी भारी होंगी (या फिर एक चक्रवात आएगा) जिसकी वजह से इसकी सप्लाई पर असर पड़ेगा और नैचुरल गैस की कीमतें ऊपर जाएँगी।
- ऐसा माना जाता है कि जब 2005 में अमेरिका में केंदरीना और रोटा नाम के चक्रवात आए थे तो हंटर ने काफी मुनाफा कमाया था।
- इन स्थितियों का फायदा उठाने के लिए हंटर ने एक रणनीति बनाई। इसके लिए उसने कई तरह के कॉन्ट्रैक्ट का इस्तेमाल किया। यह एक बहुत ही ज्यादा लेवरेज वाली सट्टा पोजीशन थी।
- लेकिन हंटर और अमरंथ की योजना के मुताबिक कुछ नहीं हुआ, चक्रवात आने की संभावना कम हो गई और नैचुरल गैस की सप्लाई बढ़ गई।
- ऐसे में नैचुरल गैस के बुल्स ने अपनी पोजीशन छोड़नी शुरू कर दी और नैचुरल गैस की कीमत नीचे गिर गई। इसकी कीमत ने 5.5 डॉलर के मनोवैज्ञानिक सपोर्ट को भी तोड़ दिया।
- इसके बाद बाजार में जोरदार बिकवाली आई और नैचुरल गैस की कीमत एक ही दिन में 20% नीचे गिर गई।
- अमरंथ को काफी नुकसान उठाना पड़ा लेकिन हंटर को अभी भी भरोसा था और बाजार में उसकी इज्जत अभी भी थी। ऐसे में, अमरंथ ने बाजार से पैसे उधार पर लिए और अपनी पोजीशन को दोगुना कर दिया।
- उनकी लेवरेज एक के मुकाबले आठ तक पहुँच गई, मतलब अगर उनकी पूँजी का \$1 लगा था तो उसने उसके सामने उन्होंने बाजार \$8 की उधार ली हुई पूँजी लगा रखी थी।
- लेकिन इसके बावजूद नैचुरल गैस की कीमतों में गिरावट रुकी नहीं, गिरावट चलती रही और इस वजह से अमरंथ में भी गिरावट आई।
- अंत में अमरंथ को अपनी पोजीशन को छोड़ना पड़ा और 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा जो इतिहास में किसी भी हेज फंड के सबसे बड़े नुकसान में से एक था।

अमरंथ की इस कहानी से जो सबसे बड़ी सीख मिलती है वह फिर से वही है कि रिस्क मैनेजमेंट कितना महत्वपूर्ण है। रिस्क मैनेजमेंट आपके ट्रेडिंग के हर फैसले से बहुत ज्यादा जरूरी होता है और उन सब से ऊपर होता है।

रिस्क की इज्जत कीजिए और रिस्क आप की इज्जत करेगा। अगर आपने उसकी इज्जत नहीं की तो यह आपके लिए नुकसानदायक होगा।

इसी वजह से हम अगला मॉड्यूल रिस्क और उससे जुड़े ट्रेडिंग पर करेंगे।

अब नैचुरल गैस के कॉन्ट्रैक्ट पर नजर डालते हैं

16.3 – कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारी

अब नैचुरल गैस के कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारियों पर एक नजर डालते हैं।

कीमत - प्राइस कोट (Price Quote) – रूपया प्रति मिलियन ब्रिटिश थर्मल यूनिट – Rupee per Million British Thermal Unit (mmBtu)

लॉट साइज – 1250 mmBtu

टिक साइज – ₹ 0.10

प्रति टिक P&L – ₹125

एक्सपायरी – महीने की 25 तारीख

डिलीवरी यूनिट – 10,000 mmBtu

फरवरी 2017 में एक्सपायर हो रहे नैचुरल गैस के कॉन्ट्रैक्ट के कोट (Quote) पर नजर डालते हैं

NATURALGAS FEB FUT						MCX	+2.11 %	▲	217.30
BIDS			OFFERS						
PRICE	ORDERS	QTY.	PRICE	ORDERS	QTY.				
217.20	14	37	217.30	7	14				
217.10	17	76	217.40	18	49				
217.00	13	38	217.50	29	79				
216.90	8	32	217.60	16	44				
216.80	10	31	217.70	20	55				
Total		1,639	Total		1,255				
EXPIRY		%2017-02-23	VOL. TRADED		15,397				
O 212.50		H 217.60	L 212.30		C 212.80				

यहाँ पर कीमत ₹ 217.3 प्रति mmBtu दिख रही है। इसलिए कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू होगी –

लॉट साइज * कीमत

= 1250 * 217.3

= **Rs.271,625/-**

NRML ट्रेड की मार्जिन को नीचे दिखाया गया है –

#	Commodity	Lot Size	Price	NRML Margin	MIS Margin
20	NATURALGAS	1250 MMBTU	212.8	40644	20322

जैसा कि आप देख सकते हैं कि NRML ट्रेड (ओवरनाइट पोजीशन) के लिए मार्जिन 40,644 रुपये है, यानी NRML ट्रेड का मार्जिन करीब 15% है (शायद बाजार में सबसे अधिक) जबकि MIS मार्जिन 20,322 रूपया है यानी MIS पोजीशन का करीब 7 %

कॉन्ट्रैक्ट जारी करने और एक्सपायरी के तर्क सीधे-सादे हैं, नीचे के टेबल को देखिए

Contract Launch Calendar of Natural Gas

Contract Month	Contract Launch Months	Contract Expiry Months
January 2017	27 October 2016	25 January 2017
February 2017	28 November 2016	23 February 2017
March 2017	28 December 2016	28 March 2017
April 2017	27 January 2017	25 April 2017
May 2017	24 February 2017	25 May 2017
June 2017	29 March 2017	27 June 2017
July 2017	26 April 2017	26 July 2017
August 2017	26 May 2017	28 August 2017
September 2017	28 June 2017	28 September 2017
October 2017	27 July 2017	26 October 2017
November 2017	29 August 2017	27 November 2017
December 2017	27 September 2017	26 December 2017

हर चौथे महीने एक नया कॉन्ट्रैक्ट जारी किया जाता है उदाहरण के तौर पर जनवरी 2017 का कॉन्ट्रैक्ट अक्टूबर 2016 में जारी हुआ था और यह 25 जनवरी 2017 को एक्सपायर होगा।

यहाँ पर एक और बात जो आपको गौर करनी चाहिए वह यह है कि भले ही नैचुरल गैस एक अंतर्राष्ट्रीय क्मोडिटी है पर भारत में इसकी स्पॉट कीमत घरेलू बाजार में इसकी डिमांड और सप्लाई पर निर्भर करती है। लेकिन MCX पर इसका फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट लगभग वैसे ही काम करता है जैसे NYMEX पर लिस्ट किया हुआ नैचुरल गैस का कॉन्ट्रैक्ट।

नीचे के चित्र पर नजर डालिए

MCX and NYMEX (CME Group) natural gas price correlation



इस चित्र में आपको नैचुरल गैस का MCX का कॉन्ट्रैक्ट NYMEX के कॉन्ट्रैक्ट के साथ दिखाई दे रहा है, आप देख सकते हैं कि दोनों फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट एक तरीके से चलते हैं। NYMEX पर नैचुरल गैस की कीमतों पर जिन चीजों का असर पड़ता है, उन्हीं चीजों का असर MCX नैचुरल गैस फ्यूचर पर भी पड़ता है।

- **नैचुरल गैस का इन्वेंटरी डाटा/डेटा** – इन्वेंटरी में बढ़त से कीमत नीचे जाती है जबकि इन्वेंटरी कम होने पर फ्यूचर की कीमत ऊपर जाती है।
- **अमेरिका में मौसम की स्थिति** – नैचुरल गैस का सबसे बड़ा बाजार अमेरिका है इसलिए अमेरिकी मौसम की स्थिति बहुत ज्यादा मायने रखती है। अमेरिका में कड़ाके की सर्दियाँ पड़ने पर नैचुरल गैस की खपत बढ़ जाती है क्योंकि लोग नैचुरल गैस को अपने घर को गर्म रखने के लिए इस्तेमाल करते हैं। इस वजह से इन्वेंटरी काफी तेजी से कम होती है और कीमतें बढ़ जाती हैं।
- **अमेरिका में चक्रवात** – चक्रवात से मौसम पर तो असर पड़ता ही है यह नैचुरल गैस इन्वेंटरी पर भी असर डालता है। इसीलिए अगर आप किसी चक्रवात को अमेरिकी तट की ओर बढ़ते देखें तो नैचुरल गैस पर लॉन्ग जाने की सोचें, नहीं तो कम से कम नैचुरल गैस के कॉन्ट्रैक्ट को शॉर्ट ना ही करें।
- **कच्चे तेल की कीमत** – नैचुरल गैस ना सिर्फ एक ज्यादा साफ सुथरा इंधन है बल्कि यह कच्चे तेल के मुकाबले सस्ता भी है। ऐतिहासिक तौर पर यह दोनों कॉन्ट्रैक्ट एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। वैसे पिछले कुछ समय में यह साथ-साथ नहीं चल रहे हैं। आप यहाँ इसे देख सकते हैं। **Check this!**

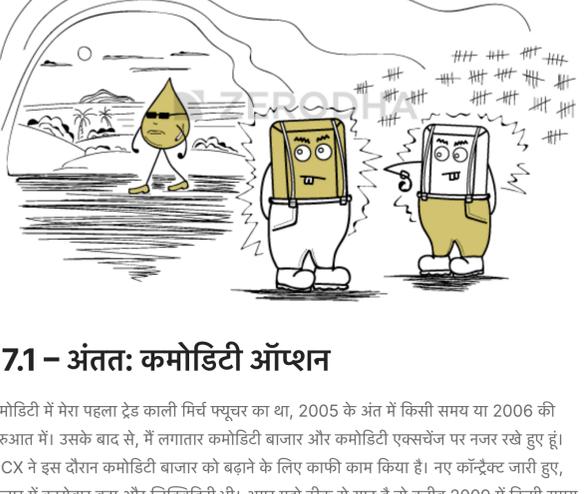
अगली बार जब आप नैचुरल गैस में ट्रेड करें तो देख लें कि अमेरिका में मौसम कैसा है।

इसके साथ ही नैचुरल गैस का ये अध्याय खत्म होता है। और साथ ही करेंसी और क्मोडिटी पर हमारा मॉड्यूल भी।

इस अध्याय की मुख्य बातें

- नैचुरल गैस प्रकृति में अपने आप बनती और मिलती है, यह जमीन के नीचे मिलती है।
- नैचुरल गैस का इस्तेमाल प्राचीन काल से हो रहा है।
- नैचुरल गैस का मुख्य इस्तेमाल बिजली बनाने, गर्म करने और खाना पकाने के लिए होता है।
- भारत दुनिया का सातवां सबसे बड़ा नैचुरल गैस उत्पादक है।
- नैचुरल गैस का लॉट साइज 1250 mmBtu है इसका प्राइस कोट 100 mmBtu का है।
- नैचुरल गैस प्रति टिक P&L – ₹125 प्रति टिक है।
- MCX पर नैचुरल गैस के फ्यूचर की कीमत और NYMEX पर नैचुरल गैस के फ्यूचर की कीमत एक जैसे ही चलती है।

क्मोडिटी ऑप्शन



17.1 – अंततः क्मोडिटी ऑप्शन

क्मोडिटी में मेरा पहला ट्रेड काली मिर्च फ्यूचर का था, 2005 के अंत में किसी समय या 2006 की शुरुआत में। उसके बाद से, मैं लगातार क्मोडिटी बाजार और क्मोडिटी एक्सचेंज पर नजर रखे हुए हूं। MCX ने इस दौरान क्मोडिटी बाजार को बढ़ाने के लिए काफी काम किया है। नए कॉन्ट्रैक्ट जारी हुए, बाजार में कारोबार बढ़ा और लिक्विडिटी भी। अगर मुझे ठीक से याद है तो करीब 2009 में किसी समय क्मोडिटी मार्केट में भी ऑप्शन ट्रेडिंग शुरू करने की कोशिश की गई थी। जिसे सुनकर मैं काफी खुश हो गया था और मुझे लगा कि ऑप्शन ट्रेडिंग का एक नया अवसर मिलेगा।

लेकिन दुर्भाग्यवश यह कोशिश पूरी नहीं हो पाई और क्मोडिटी मार्केट में ऑप्शन ट्रेडिंग नहीं शुरू हो सकी। उसके बाद से कई बार इस पर चर्चा हुई लेकिन यह हमेशा एक अफवाह बनकर ही रह गया।

All clear for commodity options; Sebi notifies criterion, fixes limits

ETMarkets.com | Updated: Jun 15, 2017, 06:08 PM IST

लेकिन लगता है अब क्मोडिटी बाजार में ऑप्शन ट्रेडिंग शुरू हो सकेगी। जून 2017 में सेबी ने क्मोडिटी ऑप्शन के लिए मंजूरी दे दी है।

आप इस समाचार को यहां पढ़ सकते हैं – **here**.

इसके बाद से ही क्मोडिटी एक्सचेंज इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि क्मोडिटी ऑप्शन के लिए एक ढांचा तैयार किया जा सके और ट्रेडिंग जल्दी से जल्दी शुरू हो सके। इसीलिए मुझे यह जरूरी लगा कि आपको बता दिया जाए कि क्मोडिटी ऑप्शन बाजार में आपको किस तरह की ट्रेडिंग की उम्मीद करनी चाहिए।

जो लोग ऑप्शन ट्रेडिंग के बारे में नहीं जानते हैं मेरी उनको सलाह यह होगी कि ऑप्शन पर हमारे मॉड्यूल को आप यहां पढ़ें।

फ्यूचर्स की तरह ही ऑप्शन के सिद्धांत भी क्मोडिटी के लिए भी वैसे ही रहेंगे। आपको बस इसके बारे में कुछ जरूरी बातें जाननी होंगी और इस अध्याय में उन्हीं बातों को बताया जाएगा।

17.2 – ब्लैक 76

क्मोडिटी ऑप्शंस में जो सबसे जरूरी बात आपको जाननी चाहिए वह यह है कि **क्मोडिटी के ऑप्शन फ्यूचर्स के ऑप्शन होते हैं स्पॉट मार्केट के ऑप्शन नहीं होते**। उदाहरण के तौर पर, अगर आप शेयर बाजार में बायोकोन का कॉल ऑप्शन खरीदेंगे तो इस ऑप्शन के लिए अंडरलाइंग होगा बायोकोन की स्पॉट कीमत, इसी तरह से अगर आप निफ्टी ऑप्शन खरीदते हैं तो उसका अंडरलाइंग निफ्टी की स्पॉट कीमत होगी। लेकिन अगर आप कच्चे तेल यानी कूड ऑयल का ऑप्शन खरीदेंगे तो यहां पर अंडरलाइंग कूड ऑयल की स्पॉट कीमत नहीं होगी, क्योंकि आपको पता ही है कि कूड आयल का यानी कच्चे तेल का यहां पर कोई स्पॉट बाजार नहीं है। वास्तव में हमारे यहां किसी भी क्मोडिटी का स्पॉट बाजार नहीं है लेकिन सारी क्मोडिटी का फ्यूचर बाजार बहुत अच्छे से चलता है। इसलिए क्मोडिटी ऑप्शन हमेशा क्मोडिटी फ्यूचर पर आधारित होते हैं।

तो अगर आपको कूड ऑयल का ऑप्शन खरीदना है तो आपको याद रखना होगा कि

1. इस कूड ऑयल ऑप्शन का अंडरलाइंग कूड ऑयल की फ्यूचर कीमत है
2. कूड ऑयल फ्यूचर का अंडरलाइंग है NYMEX (नायमैक्स) पर कूड ऑयल की कीमत

तो इस तरह से इसे एक डेरिवेटिव का डेरिवेटिव माना जा सकता है। लेकिन ट्रेड करने वाले के लिए इस बात का कोई महत्व नहीं है इसलिए आप पर इसका कोई असर नहीं पड़ना चाहिए। इस ऑप्शन में और स्पॉट बाजार के अंडरलाइंग वाले ऑप्शन में केवल एक तकनीकी अंतर है, और वह है प्रीमियम निकालने का तरीका। आम तरीके के ऑप्शन के लिए प्रीमियम ब्लैक एंड स्कॉल्स मॉडल (Black & Scholes model) से निकाला जाता है जबकि इस तरह के क्मोडिटी ऑप्शन में ब्लैक 76 नाम के एक मॉडल का इस्तेमाल किया जाता है।

इन दोनों मॉडल के बीच में अंतर बस ये है कि दोनों में कंटीन्यूअस कंपाउंडेड रिस्क फ्री रेट (continuous compounded risk free rate) को अलग-अलग तरह से देखा जाता है। मैं यहां पर इसके विस्तार में नहीं जा रहा हूं। लेकिन ये याद रखिए कि आपको कई तरीके के ऑनलाइन ब्लैक एंड स्कॉल्स कैलकुलेटर मिलेंगे लेकिन अगर आपने उसमें क्मोडिटी के आंकड़े भी डाले और प्रीमियम और ग्रीक्स निकालना चाहा तो भी आपको सही परिणाम नहीं मिलेगा, क्योंकि ये वहां काम नहीं करता।

17.3 – कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी जानकारी

हमें अभी तक यह नहीं पता है कि एक्सचेंज इस तरह के ऑप्शन के लिए किस तरह का ढांचा बनाएंगे। लेकिन मैंने एक आदर्श ढांचा बनाने की कोशिश की है और मुझे उम्मीद है कि एक्सचेंज जो ढांचा बनाएंगे वह इससे बहुत अलग नहीं होगा।

शुरुआत में एक्सचेंज केवल सोने का यानी गोल्ड ऑप्शन शुरू कर सकते हैं, फिर और धीरे-धीरे करके बाकी दूसरी क्मोडिटी के ऑप्शन भी शुरू किए जाएंगे। ऑप्शन कैसे होंगे –

ऑप्शन का प्रकार – कॉल और पुट

लॉट साइज – क्योंकि यह ऑप्शन फ्यूचर पर आधारित है इसलिए इनका लॉट साइज फ्यूचर के लॉट साइज की तरह होगा

ऑर्डर के प्रकार – हर तरह के ऑर्डर के लिए अनुमति होगी (IOC, SL, SLM, रेगुलर और लिमिटेड)

एक्सरसाइज का स्ट्राइल – उम्मीद है कि ऑप्शन यूरोपियन होंगे

मार्जिन – ऑप्शन बेचने (राइटिंग) के लिए एक्सपोजर मार्जिन + SPAN देना होगा जबकि ऑप्शन खरीदने के लिए पूरा प्रीमियम अदा करना होगा। डेविलमेंट मार्जिन (Devilment Margin) नाम की एक नई चीज भी आएगी जिस पर मैं आगे चर्चा करूंगा।

अंतिम ट्रेडिंग दिन (सोना/ गोल्ड के लिए) – अंतिम टेंडर दिन के 3 दिन पहले

स्ट्राइक – एक ऐट द मनी स्ट्राइक (एटीएम/ATM) के अलावा 15 स्ट्राइक उसके ऊपर और 15 स्ट्राइक उसके नीचे। इस तरह से एक सीरीज में कुल 31 स्ट्राइक होंगी।

इसके बाद कुछ बदलाव मिलेंगे। इक्विटी में ऑप्शन ट्रेड करने वाले ट्रेडर एक खास तरीके की ऑप्शन मनीनेस प्रक्रिया के तहत काम करते हैं-

1. एट द मनी (ATM) ऑप्शन – ये तब होता है जब स्ट्राइक स्पॉट के आसपास होती है। किसी भी सीरीज में केवल एक स्ट्राइक को ही ATM माना जाता है
2. इन द मनी (ITM) – ATM के नीचे के सभी कॉल ऑप्शन स्ट्राइक और ATM के ऊपर के सभी पुट ऑप्शन स्ट्राइक ITM ऑप्शन माने जाते हैं
3. आउट ऑफ द मनी (OTM) – ATM के ऊपर के सभी कॉल ऑप्शन स्ट्राइक और ATM के नीचे के सभी पुट ऑप्शन स्ट्राइक को OTM ऑप्शन माना जाता है

लेकिन क्मोडिटी के मनीनेस में एक नया नाम सामने आया क्लोज टू मनी (CTM), यह इस तरह से काम करेगा –

1. ATM- सेटलमेंट कीमत के सबसे करीब की स्ट्राइक को ATM माना जाएगा
2. CTM – ATM से दो स्ट्राइक नीचे और ATM से दो स्ट्राइक ऊपर को CTM माना जाएगा
3. OTM और ITM इक्विटी के जैसे ही होंगे

सेटलमेंट – फ्यूचर बाजार के M2M सेटलमेंट के लिए एक्सचेंज उस दिन उस क्मोडिटी के सेटलमेंट कीमत को यानी डेली सेटलमेंट प्राइस (DSP) को आधार मानता है। इसीलिए एक्सपायरी के दिन के क्मोडिटी के DSP को ऑप्शन सीरीज के लिए भी आधार माना जाएगा।

एक बार देखते हैं कि सेटलमेंट काम कैसे करता है। इस उदाहरण पर नजर डालिए – मान लीजिए किसी क्मोडिटी का DSP 100 है और मान लीजिए कि इस क्मोडिटी में हर 10 प्वाइंट पर एक स्ट्राइक है यानी स्ट्राइक इंटरवल 10 का है। इस स्थिति में इसकी स्ट्राइक की मनीनेस को देखते हैं –

1. ATM = 100
2. CTM = 80, 90, 100, 110 और 120, ध्यान दें कि यहां हमने ATM के नीचे की दो स्ट्राइक और ऊपर की दो स्ट्राइक को शामिल किया है।
3. OTM = 100 के ऊपर के सभी कॉल ऑप्शन और 100 के नीचे के सभी पुट ऑप्शन OTM माने जाएंगे इसलिए इनकी कोई कीमत नहीं होगी ये वर्थलेस होंगे।
4. ITM = 100 के नीचे के सभी कॉल ऑप्शन (CTM वाले 80 और 90 के स्ट्राइक भी शामिल हैं) ITM होंगे, इसी तरीके से 100 के ऊपर के सभी पुट ऑप्शन (जिसमें 110 और 120 के CTM भी शामिल हैं) वह भी ITM होंगे

लॉग ऑप्शन वाले वह सभी लोग जो CTM हैं, उनको एक खास तरीके का निर्देश देना होगा जिसे एक्सप्लिसिट इंस्ट्रक्शन (Explicit Instruction) कहा जाएगा, जिसके आधार पर ऑप्शन, फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट में बदल जाएगा। फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट में यह बदलाव स्ट्राइक पर होगा। उदाहरण के लिए अगर मैं 80 कॉल ऑप्शन होल्ड कर रहा हूं तब मेरे एक्सप्लिसिट इंस्ट्रक्शन पर मेरा कॉल ऑप्शन 80 पर लॉग फ्यूचर पोजीशन में बदल जाएगा। मुझे लगता है कि यह एक्सप्लिसिट इंस्ट्रक्शन ट्रेडिंग टर्मिनल के जरिए दिया जाएगा।

यहां पर ध्यान देने वाली बात यह है कि अगर आपने एक्सप्लिसिट इंस्ट्रक्शन नहीं दिया है ताकि आपका CTM ऑप्शन फ्यूचर में बदल जाए तो फिर आप का ऑप्शन वर्थलेस हो जाएगा।

CTM के अलावा और सभी ITM ऑप्शन अपने आप सेटल हो जाएंगे। आपको यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि ऑप्शन बाजार में सेटलमेंट का मतलब होता है कि वह ऑप्शन अपने आप फ्यूचर पोजीशन में बदल जाते हैं। अगर आप कोई ऐसी पोजीशन होल्ड कर रहे हैं जो CTM नहीं है, ITM ऑप्शन है और आप **यह नहीं चाहते हैं कि वह अपने आप सेटल हो जाए** तब आपको कॉन्ट्ररी इंस्ट्रक्शन (Contrary Instruction) देना होगा। अगर आपने ऐसा नहीं किया तो कॉन्ट्रैक्ट अपने आप सेटल हो जाएगा, मतलब फ्यूचर में बदल जाएगा।

ऐसे में, आपके दिमाग में एक सवाल उठ सकता है कि ITM ऑप्शन को एक्सरसाइज क्यों नहीं करेंगे?

ऐसा तब होता है जब ITM ऑप्शन को एक्सरसाइज करने के समय पर आपको जितना टैक्स और दूसरे शुल्क देना पड़े उसकी वजह से आपको कुछ भी पैसा ना मिल रहा हो, ऐसी स्थिति में आपके लिए बेहतर यही है कि आप अपना ITM ऑप्शन एक्सरसाइज नहीं करें और तब आप कॉन्ट्ररी इंस्ट्रक्शन देंगे जिसके आधार पर आपका ITM ऑप्शन एक्सरसाइज नहीं किया जाएगा।

17.4 – ऑप्शन का फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट में बदलाव

तो मान लीजिए कि आपके पास ITM ऑप्शन (CTM सहित) है और एक्सपायरी पर यह फ्यूचर की पोजीशन में बदल जाएगा। हम सबको पता है कि फ्यूचर की पोजीशन के लिए आपको ब्रोकर के पास मार्जिन जमा करना होता है, तो यह कैसे होगा? मतलब ये कि जब मैं ऑप्शन पर लॉग जाता हूं तो मुझे सिर्फ प्रीमियम देना होता है, मतलब जब मैं ऑप्शन खरीद रहा होता हूं तो मैं उसके साथ अलग से मार्जिन नहीं देता हूं क्योंकि मैं यह उम्मीद कर नहीं करता हूं कि मेरा ऑप्शन, फ्यूचर पोजीशन में बदल जाएगा।

ऐसी स्थिति से बचने के लिए एक अलग तरह की प्रक्रिया है जिसे डिवॉल्वमेंट मार्जिन (Devolvement margin) कहा जाता है। यहां पर क्या होगा और कैसे होगा मैं आपको बताता हूं –

1. क्मोडिटी ऑप्शन की एक्सपायरी फ्यूचर ऑप्शन के पहले टेंडर तारीख के कुछ दिन पहले होती है। इसका मतलब यह है कि फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट के एक्सपायर होने और ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट के एक्सपायर होने के बीच में कुछ दिनों का अंतर होगा।
2. ऑप्शन के एक्सपायर होने के कुछ दिन पहले एक्सचेंज एक जांच करेगा जिसे व्हाट इफ सेनारियो (What If Scenarios) कहते हैं और उसका आधार पर एक सेंसिटिविटी रिपोर्ट (Sensitivity Report) बनाएगा जिससे यह पता चलेगा कि कौन सी स्ट्राइक हैं जो ITM या CTM हो सकती हैं।
3. एक बार इन ऑप्शन की पहचान हो जाए तो एक्सचेंज की तरफ से इन सभी ऑप्शन के लिए एक डिवॉल्वमेंट मार्जिन तय कर दिया जाएगा, जिसका मतलब है कि इसके बाद ये पता चल जाएगा कि आपको अपने अकाउंट में मार्जिन के लिए कितने पैसे रखने होंगे, जिससे यह पोजीशन फ्यूचर में कैरी फॉरवर्ड हो सके। इस मार्जिन की आधी रकम एक्सपायरी के 1 दिन पहले और बाकी बची हुई आधी रकम एक्सपायरी के दिन अकाउंट में होनी चाहिए तभी यह पोजीशन फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट में बदलेगी।

उदाहरण के तौर पर, गोल्ड ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट की एक्सपायरी 28 नवंबर 2017 को है और फ्यूचर का कॉन्ट्रैक्ट 5 दिसंबर को एक्सपायर हो रहा है। तो ऐसे में, मार्जिन की आधी रकम 27 नवंबर को और बाकी आधी रकम 28 नवंबर को जमा करनी होगी।

1. अगर आप एक डीप ITM ऑप्शन होल्ड कर रहे हैं तो इससे होने वाले मुनाफे का एक हिस्सा आपकी मार्जिन की रकम में जोड़ लिया जाएगा।
2. तो आपकी पोजीशन जितनी ज्यादा डीप होगी, आपके लिए अलग से मार्जिन की जरूरत उतनी ही कम होगी। इसका ये भी मतलब है कि CTM ऑप्शन के लिए मार्जिन की जरूरत ज्यादा होगी।
3. सीधे शब्दों में कहें तो, अगर आप क्मोडिटी ऑप्शन होल्ड कर रहे हैं और इसके ITM एक्सपायर होने की संभावना है और आप इसे एक्सपायरी तक रखना चाहते हैं तो आपको एक्सपायरी के पहले मार्जिन की रकम का इंतजाम करना होगा।
4. ये रकम कितनी होगी, ये क्मोडिटी, उसकी एक्सपायरी और टेंडर की तारीख के आधार पर तय होगा।

ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट कैसे फ्यूचर में बदलता है इस पर एक नजर डालिए

ऑप्शन पोजीशन	बदलाव के बाद
लॉग कॉल	लॉग फ्यूचर्स
शॉर्ट कॉल	शॉर्ट फ्यूचर्स
लॉग पुट	शॉर्ट फ्यूचर्स
शॉर्ट पुट	लॉग फ्यूचर्स

मुझे उम्मीद है कि जब भी ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट जारी होंगे तब हमें ये ढांचा ज्यादा अच्छे से समझ आ जाएगा। और जानकारी मिलने पर मैं इस अध्याय को अपडेट करूंगा।

इस अध्याय की मुख्य बातें

1. क्मोडिटी ऑप्शन में अंडरलाइंग के तौर पर क्मोडिटी का फ्यूचर होगा।
2. इसके प्रीमियम और ग्रीक्स को निकालने के लिए ब्लैक एंड स्कॉल्स कैलकुलेटर काम नहीं आएगा।
3. इसकी गणना के लिए ब्लैक 76 मॉडल का इस्तेमाल करना होगा।
4. ऑप्शन एक्सरसाइज करने पर ये ऑप्शन फ्यूचर की पोजीशन में बदल जाएगा।
5. ATM से दो स्ट्राइक नीचे और दो स्ट्राइक ऊपर CTM होगा।
6. अगर किसी CTM स्ट्राइक वाले ने एक्सप्लिसिट इंस्ट्रक्शन नहीं दिया तो ऑप्शन वर्थलेस हो जाएगा।
7. ITM ऑप्शन को होल्ड करने वाले को अगर ऑप्शन एक्सरसाइज नहीं करना हो तो उसे कॉन्ट्ररी इंस्ट्रक्शन (Contrary Instruction) देना होगा। आप ऐसा तब करेंगे जब आपको पता हो कि टैक्स और शुल्कों की वजह से आपको कोई मुनाफा नहीं होने वाला है।

क्रॉस करेंसी पेयर

18.1 – फॉरेक्स का किंग

भारत के बाहर, जिस मार्केट में सबसे अधिक ट्रेड होता है वो है – फॉरेक्स फ्यूचर्स मार्केट। रिटेल से लेकर इंस्टिट्यूशनल ट्रेडर तक– हर कोई फॉरेक्स फ्यूचर मार्केट में ट्रेडिंग करता है। अगर आप इस मार्केट को करीब से देखेंगे तो आपको समझ में आएगा कि जिन करेंसी पेयर में सबसे ज्यादा फ्यूचर ट्रेड होता है वो हैं –

- यूरो और डॉलर के बीच – EUR USD
- जीबीपी और यूएस डॉलर के बीच – GBP USD, इसे केबल भी कहते हैं।
- यूएस डॉलर और जापानी येन के बीच – USD JPY



अभी कुछ समय पहले तक, अगर आप भारत से इन इंटरनेशनल करेंसी पेयर में ट्रेड करना चाहते तो आपको विदेश में किसी ब्रोकर के यहां अपना अकाउंट खोलना पड़ता। आमतौर पर ऐसे ब्रोकर आपको साइप्रस पर या आइल ऑफ मैन (Isle of Man) जैसी जगहों पर मिलते, फिर आपको अपने पैसे उस ब्रोकर के अकाउंट में वायर ट्रांसफर करने होते और उसके बाद वह जो रेट बताता उसके आधार पर आप ट्रेड कर पाते। इस पूरी प्रक्रिया को रेगुलेट यानी नियंत्रित करने वाला कोई ढांचा नहीं था। इसलिए इस पूरे ट्रेड को संदेहास्पद माना जाता था।

लेकिन अब इस सबकी जरूरत नहीं है, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ने इन इंटरनेशनल करेंसी पेयर के लिए एक ढांचा तैयार कर दिया है और क्रॉस करेंसी फ्यूचर और ऑप्शन की एक्सचेंज पर ट्रेडिंग के लिए अनुमति दे दी है।

ऊपर बताए गए सभी करेंसी फ्यूचर अब NSE पर ट्रेड के लिए उपलब्ध हैं। मैं इस अध्याय में कोशिश करूंगा कि आपको इसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दे सकूँ और यह बता सकूँ कि इनके कॉन्ट्रैक्ट किस तरह से स्ट्रक्चर किए गए/बने होते हैं, जिससे आप इन में आसानी से ट्रेड कर सकें।

यहां एक जानकारी आपको और दे दूँ, BIS के एक सर्वे के मुताबिक इंटरनेशनल यानी अंतरराष्ट्रीय फॉरेक्स बाजार में होने वाले 88% ट्रेड में एक तरफ यूएस डॉलर ही होता है। 50 परसेंट ट्रेड EUR USD, GBP USD और USD JPY के बीच होते हैं। तो, अब आपको अंदाज लग गया होगा कि यह कॉन्ट्रैक्ट कितने बड़े होते हैं।

आइए आगे बढ़ने के पहले कुछ जरूरी जानकारी देख लेते हैं।

जब आप किसी करेंसी पेयर को देखते हैं जैसे EUR USD, तो पहली करेंसी को बेस करेंसी कहते हैं और दूसरी करेंसी को क्वोट करेंसी (Quote Currency) कहते हैं। करेंसी के पेयर का क्वोट (Quote) हमेशा क्वोट करेंसी में किया जाता है।

उदाहरण के तौर पर अगर आप EUR USD की कीमत 1.23421 देख रहे हैं, तो इसका मतलब है कि एक यूरो 1.23421 यूएस डॉलर के बराबर है।

इस टेबल पर नजर डालिए

करेंसी पेयर	बेस करेंसी	क्वोट करेंसी
EUR USD	EUR	USD
GBP USD	GBP	USD
USD JPY	USD	JPY

अब एक आम ऑर्डर बुक पर नजर डालते हैं, मान लीजिए कि करेंसी पेयर है कि EUR USD –

बिड कीमत (जिस कीमत पर आप खरीदेंगे)	आस्क कीमत (जिस कीमत पर आप बेचेंगे)
1.2431	1.2429
1.2429	1.2427
1.2425	1.2222
1.2420	1.2418
1.2418	1.2416

तो अगर आप EUR USD को खरीदना चाहते हैं तो इसका मतलब है कि आपको एक यूरो के लिए 1.2431 यूएस डॉलर देने होंगे। इसी तरह अगर आप बेचना चाहते हैं तो आपको एक यूरो को 1.2429 यूएस डॉलर पर बेचना होगा।

18.2 – फ्यूचर्स कॉन्ट्रैक्ट

NSE ने इन सभी अंतरराष्ट्रीय करेंसी पर फ्यूचर और ऑप्शन दोनों को शुरू किया है। लेकिन मुझे लगता है कि ऑप्शन को जोर पकड़ने में अभी समय लगेगा, लेकिन नियर मंथ फ्यूचर में काफी ट्रेडर्स तुरन्त आकर्षित होंगे।

सबसे अच्छी बात यह है कि इन तीनों करेंसी पेयर के लिए लॉट साइज को बेस करेंसी के 1000 यूनिट ही रखा गया है। लॉट साइज कैसे तय हुए हैं इस पर एक नजर डालिए –

करेंसी पेयर	बेस करेंसी	क्वोट करेंसी	लॉट साइज
EUR USD	EUR	USD	1000 EUR
GBP USD	GBP	USD	1000 GBP
USD JPY	USD	JPY	1000 USD

यहां लॉट साइज को याद रखना जरूरी है। आप आगे कुछ समय बाद समझ पाएंगे कि क्यों!

EUR USD/GBP USD के ट्रेड के लिए एक्सचेंज पर टिक/पिप 0.0001 और USD JPY के लिए 0.01 है।

ट्रेड करने के लिए 12 महीने के अलग-अलग मासिक कॉन्ट्रैक्ट होंगे। मौजूदा मंथ यानी नियर मंथ का कॉन्ट्रैक्ट महीने के अंतिम ट्रेडिंग दिन के 2 दिन पहले एक्सपायर होगा।

18.3 – एक फ्यूचर ट्रेड

करेंसी कॉन्ट्रैक्ट का नफा नुकसान यानी प्रॉफिट लॉस हमेशा क्वोट करेंसी में दिखाया जाएगा, भारतीय रूपए यानी INR में नहीं, जैसा कि आमतौर पर इक्विटी, कमोडिटी या भारत में ट्रेड होने वाली करेंसी में होता है।

इसको तीनों करेंसी के कॉन्ट्रैक्ट के उदाहरण के जरिए समझते हैं

EUR USD			GBP USD			USD JPY		
	Buy	Sell		Sell	Buy		Buy	Sell
Price	1.2210	1.2215	Price	1.3800	1.3791	Price	107.05	106.90
P&L in USD	(1.2215-1.2210)*1000*1 lot= \$ 0.5		P&L in USD	(1.3800-1.3791)*1000*1 lot= \$ 0.9		P&L in USD	(106.90-107.05)*1000*1 lot = ¥150	
P&L in INR	\$0.5*65.2261(Reference Rate)=₹32.6131		P&L in INR	\$0.5*65.2261(Reference Rate)= ₹58.703		P&L in INR	¥150*0.6107= ₹91.605	

पोजीशन के प्रॉफिट और लॉस को रेफरेंस रेट (RBI इसे हर दिन 12.30 बजे जारी करता है) के हिसाब से भारतीय रूपए में बदला जाता है। EUR USD और GBP USD के P&L को USD INR के रेट के आधार पर और USD JPY के P&L को JPY INR के रेट के आधार पर भारतीय रूपए में बदला जाता है।

कैरी फॉरवर्ड पोजीशन के लिए जिस मार्केट सेटलमेंट का इस्तेमाल किया जाता है, उसमें उस दिन की सेटलमेंट कीमत (दिन के ट्रेड के अंतिम आधे घंटे की औसत वेटेड (Weighted) कीमत) को आधार बनाया जाता है।

18.4 – ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट

इनके ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट USD INR के उस ऑप्शन की तरह ही होते हैं जो एक्सचेंज पर पहले से ट्रेड होते हैं। इनके कॉन्ट्रैक्ट की जानकारी इस तरह से है –

ऑप्शन एक्सपायरी स्ट्राइल – यूरोपियन

प्रीमियम – प्रीमियम को क्वोट करेंसी में क्वोट किया जाता है। (GBP USD के लिए USD में और USD JPY के लिए JPY में)

कॉन्ट्रैक्ट साइकिल (Cycle) – यहां पर 3 मंथली यानी मासिक और 3 क्वार्टरली यानी तिमाही कॉन्ट्रैक्ट होंगे। 3 महीने तक के लगातार मासिक कॉन्ट्रैक्ट के बाद हर तीसरे महीने एक तिमाही का कॉन्ट्रैक्ट आएगा।

उपलब्ध स्ट्राइल – 12 इन द मनी –In the money, 12 आउट ऑफ द मनी– Out of the money और एक नियर द मनी –Near The Money ऑप्शन होता है। इस तरह से करीब 25 स्ट्राइल मौजूद होती हैं जिनमें से आप अपने लिए सही स्ट्राइल को चुन सकते हैं।

अंडरलाइंग	यूरो यूएस डॉलर	पॉइंड–यूएस डॉलर	यूएस डॉलर – जापानी येन
स्ट्राइल प्राइस इन्टरवल	0.005	0.005	0.50

18.5 – एक्सपायरी

मौजूदा यानी नियर मंथ के कॉन्ट्रैक्ट महीने के अंतिम कारोबारी दिन यानी लास्ट ट्रेडिंग दिन के 2 दिन पहले दोपहर में 12:30 बजे एक्सपायर होते हैं। इनका सेटलमेंट हमेशा फाइनेल सेटलमेंट कीमत पर किया जाता है।

आइए देखते हैं कि फाइनेल सेटलमेंट कीमत कैसे निकाली जाती है। उस पेयर के लिए क्रॉस करेंसी रेट को निकालने के लिए उस करेंसी के INR वाले रेफरेंस रेट का इस्तेमाल किया जाता है।

करेंसी पेयर	USDINR	EURINR	GBPINR	JPYINR
RBI रेफरेंस रेट	65.2261	79.5041	89.7055	0.6107

EUR/USD	EUR/INR	79.5041	GBP/USD	GBP/INR	89.7055	USD/JPY	USD/INR	65.2261
	USD/INR	65.2261		USD/INR	65.2261		JPY/INR	0.6107
Final Settlement Price		=79.5041/65.2261= \$1.2189			=89.7055/65.2261= \$1.3753			=65.2261/0.607= ¥106.8054

फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट को फाइनेल सेटलमेंट कीमत पर मार्केट टू मार्केट किया जाएगा और इनको T+2 पर केस में सेटल किया जाएगा।

सभी इन-द-मनी कॉन्ट्रैक्ट की इंट्रिन्सिक वैल्यू को फाइनेल सेटलमेंट कीमत के आधार पर निकाला जाता है। इसे एक उदाहरण से समझते हैं –

GBPUSD की फाइनेल सेटलमेंट कीमत	1.3753
पुट स्ट्राइल कीमत	1.3760
प्रति कॉन्ट्रैक्ट एक्सप्राइज की रकम (USD)	0.7
12.30 PM पर USD का RBI रेफरेंस रेट	65.2261
कॉन्ट्रैक्ट के एक्सप्राइज की रकम (INR)	₹45.65827

18.6 – मार्जिन

ट्रेड होने वाले हर कॉन्ट्रैक्ट के लिए शुरूआती (initial) मार्जिन 2% और एक्सट्रीम लॉस मार्जिन 1% का होगा। मार्जिन को भारतीय रूपए में ब्लॉक किया जाएगा लेकिन करेंसी का ट्रेड क्वोट करेंसी (USD या JPY) में होगा। ब्लॉक की गयी मार्जिन को क्वोट करेंसी में बदला जाएगा। दोपहर 2 बजे के पहले किए गए हर ट्रेड के लिए मार्जिन पिछले दिन के रेफरेंस रेट के आधार पर तय होगी और 2 बजे के बाद के ट्रेड पर उस दिन का रेफरेंस रेट इस्तेमाल होगा।

18.7 – कैलेंडर स्प्रेड

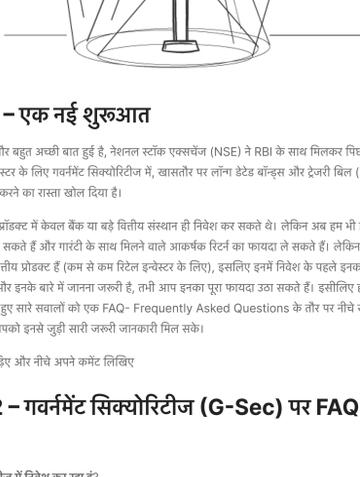
एक एक्सपायरी महीने की फ्यूचर्स पोजीशन को हेज करके ऑफसेट करने के लिए बनाई गई किसी दूसरे एक्सपायरी महीने की पोजीशन को कैलेंडर स्प्रेड कहते हैं। इसको हमने इस अध्याय में विस्तार से समझाया है। स्प्रेड के लिए मार्जिन कितनी ब्लॉक होगी इसे एक्सचेंज तय करता है और ये हैं–

स्प्रेड की अवधि	मार्जिन
1 महीना	₹1500
2 महीना	₹1800
3 महीना	₹2100
4 महीना	₹2400

इस अध्याय की मुख्य बातें

- क्रॉस करेंसी पेयर को पहली बार NSE पर ट्रेड करने की इजाजत दी जा रही है।
- EUR/USD के लिए लॉट साइज \$1000, GBP/USD के लिए £1000 और USD/JPY के लिए \$1,000 होगी।
- सभी पेयर की ट्रेडिंग क्वोट करेंसी में होगी लेकिन सेटलमेंट भारतीय रूपए में होगा।
- डेली और फाइनेल M2M सेटलमेंट RBI रेफरेंस रेट के आधार पर होगा।
- नियर मंथ का कॉन्ट्रैक्ट महीने के अंतिम ट्रेडिंग दिन के दो दिन पहले 12.30 बजे एक्सपायर होगा।

सरकारी/गवर्नमेंट सिक्कोरिटीज



19.1 – एक नई शुरुआत

एक नई और बहुत अच्छी बात हुई है, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) ने RBI के साथ मिलकर पिछले दिनों रिटेल इन्वेस्ट के लिए गवर्नमेंट सिक्कोरिटीज में, खासतौर पर लॉन्ग डेटेड बॉन्ड्स और ट्रेजरी बिल (T-Bills) में, निवेश करने का रास्ता खोल दिया है।

पहले इन प्रॉडक्ट में केवल बैंक या बड़े वित्तीय संस्थान ही निवेश कर सकते थे। लेकिन अब हम भी इनमें निवेश कर सकते हैं और गारंटी के साथ मिलने वाले आकर्षक रिटर्न का फायदा ले सकते हैं। लेकिन क्योंकि यह नए वित्तीय प्रोडक्ट हैं (कम से कम रिटेल इन्वेस्ट के लिए), इसलिए इनमें निवेश के पहले इनको समझना और इनके बारे में जानना जरूरी है, तभी आप इनका पूरा फायदा उठा सकते हैं। इसीलिए हमने इनसे जुड़े हुए सारे सवाल को एक FAQ - Frequently Asked Questions के तौर पर नीचे रखा है, जिससे आपको इनसे जुड़ी सारी जरूरी जानकारी मिल सके।

इसको पढ़िए और नीचे अपने कमेंट लिखिए

19.2 – गवर्नमेंट सिक्कोरिटीज (G-Sec) पर FAQs

मैं किस चीज में निवेश कर रहा हूँ?

आप भारत सरकार द्वारा जारी बॉन्ड और ट्रेजरी बिल में निवेश कर रहे हैं। चूंकि यह भारत सरकार से समर्थित प्रोडक्ट हैं इसलिए इनमें निवेश लगभग रिस्क फ्री (risk-free) है, मतलब पैसे डूबने की उमीद ना के बराबर है। सरकार द्वारा दी जाने वाली गारंटी को सॉवरिजन गारंटी (Sovereign Guarantee) भी कहते हैं।

बॉन्ड और ट्रेजरी बिल (T-Bills) क्या होते हैं?

मुझे और आपको जब पैसे की जरूरत होती है तो हम कर्ज लेने के लिए बैंक के पास जाते हैं। कर्ज के बदले हम बैंक को यह वादा करते हैं कि हम उन्हें लगातार ब्याज (इंटेस्ट) का भुगतान करते रहेंगे और एक निश्चित समय के बाद इस पैसे (मूलधन) को वापस कर देंगे। यह एक आम तरीका है जिसमें ब्याज और मूलधन बैंक को वापस किया जाता है।

ठीक इसी तरह से, भारत सरकार को भी सड़कें बनाने, पुल बनाने, बांध और अस्पताल आदि बनाने के लिए पैसे की जरूरत पड़ती है। जब उनके पास पैसे की कमी होती है तो वो कर्ज लेने के लिए अपने बैंक के पास जाते हैं। उनका बैंक है - RBI। सरकार के इस कर्ज को RBI बॉन्ड या ट्रेजरी बिल के रूप में नीलाम करता है। जिसे आप और मैं खरीद सकते हैं। तो एक तरह से, सरकार को कर्ज ले रही है, उस कर्ज का एक हिस्सा आप सरकार को दे रहे हैं। इस कर्ज के बदले भारत सरकार हर कुछ समय को एक निश्चित ब्याज आपको देने का वादा करती है और एक तय समय के बाद आपका मूलधन आपको वापस करती है।

वो कर्ज जिसे भारत सरकार 1 साल के अंदर वापस करती है उसे ट्रेजरी बिल या T-bill कहा जाता है। ऐसा कर्ज जिसे सरकार कई सालों के बाद वापस करना चाहती है उसे बॉन्ड्स कहा जाता है।

मुझे क्या चुनना चाहिए ट्रेजरी बिल या बॉन्ड?

अगर आप अपने पूंजी को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो दोनों ही अच्छे निवेश हैं। इन दोनों के बीच में आपको कौन सा चुनना चाहिए उसके लिए कुछ चीजों पर नजर डालनी होगी।

यह कौन सी चीजें हैं जिनको देखना चाहिए? पहले T-Bills के बारे में बताइए

T-Bills यानी ट्रेजरी बिल के तीन प्रकार होते हैं जो अलग-अलग अवधि के होते हैं- 91 दिन, 182 दिन और 364 दिनों। T-Bills में इंटेस्ट यानी ब्याज खत्म से नहीं बढ़ाया जाता। मान लीजिए ये आपको के बीच का यह सबसे बड़ा अंतर है। T-Bills को उनकी वास्तविक कीमत (यानी PAR कीमत) से डिस्काउंट यानी छूट पर जारी किया जाता है और एक्सपायरी के समय आपको उनकी वास्तविक कीमत मिलती है।

यह समझने में थोड़ा मुश्किल लग रहा है क्या आप किसी उदाहरण से समझा सकते हैं?

मान लीजिए 91 दिन का T-Bill है। अब मान लीजिए कि इसकी वास्तविक कीमत (यानी PAR कीमत भी कहते हैं) ₹100 है। अब यह T-Bill आपको PAR कीमत से डिस्काउंट पर मिलेगा। मान लीजिए ये आपको ₹97 पर मिलता है। अब 91 दिनों के बाद मैच्योरिटी पर आपको इसके बदले में ₹100 वापस मिलेंगे और आप इस पर ₹3 की कमाई कर रहे होंगे। इसको इस तरह से समझिए कि मान लीजिए आप ने एक अच्छा स्टॉक ₹97 पर खरीदा और 91 दिनों के बाद उसे ₹100 पर बेच दिया। यहां अंतर सिर्फ यह है कि यह एक गारंटी वाला सौदा है।

क्या T-Bill के बारे में मुझे और कुछ जानना चाहिए?

नहीं, इसके अलावा कोई और ऐसी जरूरी चीज नहीं है। आपको सिर्फ यही याद रखना है कि T-Bills आपको PAR कीमत से एक डिस्काउंट पर जारी जाती है। और मैच्योरिटी पर उसकी पूरी कीमत मिलती है। अगर आप तकनीकी तौर पर और जानकारी जुटाना चाहते हैं, तो आपको इस निवेश की कमाई यानी यील्ड (yield) के बारे में पता कर सकते हैं।

जल्द, मुझे थोड़े तकनीकी जानकारी भी चाहिए

यील्ड (yield) वास्तविक तौर पर आपके निवेश पर मिलने वाली सालाना कमाई है। हर निवेश की कमाई वार्षिक यानी सालाना कमाई के तौर पर नापी जाती है। तो, अगर आप इनमें 91 दिनों में ₹3 की कमाई की है तो आप इस दर पर पूरे साल में कितनी कमाई कर रहे हैं।

इसे पता करने का फार्मूला यह है

$$\text{यील्ड} = \frac{[\text{डिस्काउंट कीमत}]/[\text{बॉन्ड कीमत}]}{[365/\text{मैच्योरिटी के लिए दिनों}]} \times [365/\text{मैच्योरिटी के लिए दिनों}]$$

$$\text{Yield} = \frac{[\text{Discount Value}]/[\text{Bond Price}]}{[365/\text{number of days to maturity}]} \times [365/\text{number of days to maturity}]$$

$$= [3/97] \times [365/91]$$

$$= 0.0309 \times 4.010989$$

$$= 12.4052\%$$

तो दूसरे शब्दों में कहें तो, टी-बिल (T Bill) आपको 12.4052% की कमाई कराके दे रहा है। लेकिन आपने इसको सिर्फ 91 दिनों के लिए रखा है इसलिए आपको कमाई उस हिसाब से हो रही है।

आमतौर पर 91 दिन की T-Bills की कमाई करीब 6% से 7.5% प्रतिशत के बीच में होती है, यील्ड जितना ज्यादा होती है उतना अच्छा माना जाता है

T-Bills की मैच्योरिटी पर क्या होता है?

मैच्योरिटी पर सरकार आपके डीमैट एकाउंट से T-Bills खुद ही निकाल लेती है, इसे एक्सटिंग्विशमेंट ऑफ सिक्कोरिटी (Extinguishment of securities) कहा जाता है और उसके बाद जितने सिक्कोरिटीज आपके पास हैं उसके हिसाब से पैसे डीमैट एकाउंट से जुड़े आपके बैंक एकाउंट में डाल दिए जाते हैं।

T-Bills से जुड़ी हुई जानकारी इतनी ही है या कुछ और भी जानना चाहिए?

जी नहीं, आपको और कुछ जानने की जरूरत नहीं है

ठीक है, अब मुझे बॉन्ड के बारे में बताइए

बॉन्ड और टी बिल से दो मामलों में अलग होते हैं। पहला, बॉन्ड की मैच्योरिटी का समय लंबा होता है और दूसरा, उसमें आपको साल में दो बार ब्याज मिलता है।

क्या मुझे एक उदाहरण से समझा सकते हैं?

सरकार के द्वारा जारी होने वाले हर बॉन्ड का एक अलग नाम या एक पहचान चिह्न (symbol) होता है, इस पहचान में यह सारी जानकारी होती है जो आपको चाहिए। उदाहरण के तौर पर एक पहचान पर नजर डालिए - 740GS2035A इसका मतलब क्या है देखिए-

वार्षिक ब्याज दर - 7.40%

प्रकार - गवर्नमेंट सिक्कोरिटीज (GS)

मैच्योरिटी - 2035

इस्यू (Issue) - A का मतलब है कि यह नया इस्यू है (अभी आपको इसके बारे में जानने की जरूरत नहीं है। बस यह याद रखिए कि यह नाम देने का NSE का अपना अपना तरीका है)

यह बॉन्ड 2035 में एक्सपायर हो रहा है यानी आज से 17 साल बाद (अभी मैं 2018 में इसे लिख रहा हूँ)। अगर आप इस बॉन्ड में निवेश करते हैं तो 2035 तक आपको हर साल 7.4% का ब्याज मिलेगा। ध्यान रखें कि यह ब्याज आपको छमाही तौर पर मिलेगा, मतलब आपको 3.7% ब्याज हर साल में 2 बार मिलेगा और मैच्योरिटी पर आपको आपका मूलधन वापस मिल जाएगा।

कुछ और गवर्नमेंट सिक्कोरिटीज के सिंबल नीचे दिखाए गए हैं

पंचम	वार्षिक ब्याज	छमाही ब्याज	मैच्योरिटी	# मैच्योरिटी में बचे साल
662GS2051	6.62%	3.31%	2051	33
668GS2031	6.68%	3.34%	2031	13
737GS2023	7.37%	3.68%	2023	5

क्या आप मुझे एक उदाहरण से समझा सकते हैं कि अगर मैं बॉन्ड में निवेश करूँ तो मैं कितना कमा लूंगा?

ठीक है, लेकिन इसके बारे में जानने के पहले एक और जरूरी चीज आपको जाननी चाहिए।

हर बॉन्ड की एक पार(PAR) वैल्यू यानी वास्तविक कीमत होती है। मान लीजिए यह कीमत ₹100 है। जब आप बॉन्ड में निवेश करते हैं तो आप या तो डिस्काउंट पर करते हैं (जैसे 98,97) या वास्तविक कीमत पर करते हैं (100) या फिर आप प्रीमियम पर करते हैं (जैसे 101,102)। आप किस कीमत पर निवेश करेंगे यह एक प्रक्रिया पर निर्भर करता है जिसे नीलामी (Auction) कहा जाता है। यह क्या होता है यह हम बाद में बताएंगे, लेकिन अभी आपको यह जानना है कि आप बॉन्ड में वास्तविक कीमत पर, डिस्काउंट पर या प्रीमियम पर निवेश कर सकते हैं।

अब मान लीजिए कि आपने 700GS2020 (7% ब्याज और 2020 में मैच्योरिटी यानी अबसे 2 साल बाद) बॉन्ड में डिस्काउंट पर यानी 98.4 पर निवेश किया। मान लीजिए कि आपने ऐसे 150 बॉन्ड खरीदे हैं। इसलिए आपको कुल रकम देनी पड़ेगी

$$150 \times 98.4$$

$$= \text{Rs. } 14,760/-$$

जिस समय आपने निवेश किया उस समय से आपके लिए ब्याज शुरू हो जाता है। ब्याज आपको बॉन्ड के फेस वैल्यू पर मिलता है। तो आपको कमाई कुछ इस तरह से होगी-

समय अवधि	ब्याज	फैस रफ्तार	टिप्पणी
0 - 6 महीने	3.5%	3.5% * 100 * 150 = Rs.525	छमाही ब्याज
6 महीने - 1 साल	3.5%	3.5% * 100 * 150 = Rs.525	छमाही ब्याज
1 - 1.5 साल	3.5%	3.5% * 100 * 150 = Rs.525	छमाही ब्याज
1.5 - 2 साल	3.5%	3.5% * 100 * 150 = Rs.525	छमाही ब्याज
मैच्योरिटी पर (2 साल बाद)	मूलधन वापस वास्तविक कीमत (Par कीमत) पर	150 * 100 = 15,000	अतिरिक्त Rs.240

तो ₹14760 के निवेश पर आप की कमाई होगी

$$525 + 525 + 525 + 525 + 15,000$$

$$= 2100 + 15,000$$

$$= \text{Rs. } 17,100/-$$

अगर आप पूरी गणना करें तो आपके लिए यील्ड करीब 7.88% होगी। RBI यील्ड की गणना को यहां बहुत अच्छे से समझाया है। [calculation of yield](#)

मैंने यील्ड टू मैच्योरिटी (Yield to Maturity) का काफी नाम सुना है, क्या यह वही है?

जी नहीं, यह थोड़ा अलग है। यील्ड टू मैच्योरिटी (Yield to Maturity) यानी YTM की गणना थोड़ा मुश्किल है। YTM की गणना में यह माना जाता है कि आपको जो ब्याज मिल रहा है उसे आपने वापस उसी तरह के बॉन्ड में निवेश करते हैं, जिसकी वजह से आपको उस ब्याज पर भी ब्याज मिलेगा। बॉन्ड के ट्रेडर्स और इंस्टीट्यूशनल निवेशक हमेशा सिर्फ YTM ही देखते हैं क्योंकि यही यह तरीका है जिससे यह दो अलग-अलग बॉन्ड के बीच कमाई की तुलना करते हैं।

यह लगभग वैसा ही है जैसे अगर आप अपने स्टॉक से मिलने वाले डिविडेंड को वापस सी स्टॉक में निवेश कर दें।

अब हमें ब्याज के भुगतान के बारे में बताएं यह हमें कैसे मिलता है?

ब्याज तरीके से जैसे आपको कंपनी के शेयरों के शेयरों का डिविडेंड अपने आप मिल जाता है।

क्या आप इस नीलामी की प्रक्रिया के बारे में मुझे कुछ बता सकते हैं?

कुछ समय पहले तक G-Sec बॉन्ड और T-Bills में निवेश सिर्फ बैंकों और बड़े वित्तीय संस्थानों के लिए खुला हुआ था और इसमें निवेश की न्यूनतम रकम ₹5 करोड़ थी। लेकिन हाल ही में NSE और RBI ने इसे रिटेल निवेशकों के लिए भी खोल दिया है और उनके लिए न्यूनतम निवेश की रकम को ₹10,000 कर दिया है।

लेकिन बॉन्ड के लिए आपको क्या कीमत देनी पड़ेगी, यह अभी भी बड़े बैंक और बड़े वित्तीय संस्थान ही तय करते हैं। ये सब RBI के नीलामी प्लेटफॉर्म पर अपने बिड डालते हैं और RBI उसके आधार पर बॉन्ड की कीमत तय करता है। तो नीलामी एक तरह से वह प्रक्रिया है जिसमें बॉन्ड की कीमत तय होती है। इसे बॉन्ड का वेटेड एवरेज प्राइस (Weighted Average Price) कहा जाता है।

तो क्या मैं बॉन्ड खरीदने के लिए वेटेड एवरेज प्राइस देना है?

हां और नहीं।

अपना ऑर्डर देते समय आप थोड़ा ज्यादा कीमत देते हैं, इसे अमाउंट पेयबल (Amount Payable) कहा जाता है। एक बार जब सारे ऑर्डर आ जाते हैं तब फिर नीलामी की प्रक्रिया शुरू होती है और RBI तय करता है कि weighted average कीमत क्या होगी? अमाउंट पेयबल और weighted average कीमत के बीच के अंतर को रकम आपके बैंक अकाउंट में अगले दिन दे दी जाती है।

कहा जाता है कि गवर्नमेंट सिक्कोरिटी में निवेश बैंक के FD से ज्यादा बेहतर होता है, ऐसा क्यों होता है?

इसकी कई वजहें हैं, लेकिन सबसे बड़ी वजह यह है कि G-Sec पर यील्ड FD से बेहतर होता है। इन दोनों के यील्ड की एक तुलना नीचे दिखाई गई है-

	91 दिन	184 दिन	364 दिन	1 साल	2 साल	3 साल	5 साल	10 साल
FD (यील्ड)	6.00	6.03	6.38	6.42	6.47	6.53	6.40	6.42
GSec (यील्ड)	6.02	6.20	6.41	6.45	6.80	7.05	7.33	7.34

*Source: Average interest paid by major PSU Banks

बेहतर यील्ड के अलावा कुछ और चीजें भी हैं जो G-Sec को ज्यादा आकर्षक बनाती हैं -

- बैंक FD के मुकाबले G-Sec ज्यादा सुरक्षित माना जाता है क्योंकि इसके पीछे भारत सरकार होती है।
- इसमें रिटर्न और प्रिंसिपल (मूलधन) दोनों पर गारंटी होती है।
- FD की तरह यहां पर TDS नहीं कटता है।
- मैच्योरिटी की तारीख लंबी होने की वजह से सरकारी सिक्कोरिटी (G-Sec) में आपको लंबे समय के लिए ज्यादा आकर्षक ब्याज मिलता रहता है।
- इसको आप लोन के बदले कोलैटरल के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हैं।
- G-Sec को आप सेकेंडरी बाजार में भी बेच सकते हैं।

आप जैसे भी देखें G-Sec डर तरीके से बैंक FD के मुकाबले ज्यादा बेहतर निवेश है।

इसको सेकेंडरी बाजार में बेच सकते हैं, इसका क्या मतलब है?

ये एकदम जैसे ही काम करता है जैसे आप शेयर के अंदर आ जा बेचते हैं।

मान लीजिए आपने 740GS2035A में निवेश किया। अब आप अगले 17 साल तक यानी 2035 तक हर छह महीने में इस पर 3.7% का ब्याज पा सकते हैं।

लेकिन कुछ साल बाद आपको लगता है कि अब आप इस बॉन्ड को और ज्यादा समय तक अपने पास नहीं रखना चाहते हैं, अब ऐसे में आप इस बॉन्ड को सेकेंडरी बाजार में बेच सकते हैं ठीक वैसे ही जैसे आप शेयरों को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर बेचते हैं।

लेकिन यह खरीदने के लिए इस पोस्ट को देख सकते हैं जिसमें G-Sec के ट्रेडिंग पर सवाल और जवाब हैं। [selling G-Sec in the secondary market](#)

क्या इसके अलावा मुझे कुछ और जानने की जरूरत है?

इस पूरी चीज को आप उस तरह से देख सकते हैं जैसे आप किसी IPO के लिए एप्लीकेशन डालते हैं और उसके बाद वो स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होता है। ये एकदम वैसा ही है, नीलामी की प्रक्रिया किसी IPO की तरह है और एक बार उसका बिडिंग हो जाने पर बॉन्ड (या टी बिल) एक्सचेंज पर लिस्ट हो जाता है। लिस्ट होने के बाद, आप जब चाहे बॉन्ड को बेच सकते हैं और आप चाहे तो उस की ट्रेडिंग भी कर सकते हैं।

निवेश की कम से कम सीमा ₹10,000 है और इसके मट्टीपल यानी गुणक में आप दो करोड़ रूपए तक का निवेश कर सकते हैं। आप ऑर्डर तब डालते हैं जब नया ऑक्शन होता है (ठीक उसी तरह जैसे IPO में होता है)। लेकिन अच्छी बात यह है कि RBI इस नीलामी की तारीख की घोषणा पहले से कर देता है और यह सबको पता चला है कि ये कब होना वाला है।

आने वाले टी बिल का कैलेंडर

Here is the calendar for the upcoming t-bills auctions.

आने वाले बॉन्ड का कैलेंडर - **Here is the calendar for the upcoming bond auctions.**

RBI ने अब तक जितने भी बॉन्ड जारी किए हैं उसकी जानकारी इस लिंक में है - [link of all the bonds that have been issued by RBI](#) । आप इसमें नाम, कूपन रेट और मैच्योरिटी पर ध्यान दें

टैक्स से जुड़ी बातें, जो जाननी चाहिए

बॉन्ड - आपको जब ब्याज से आमदनी होती है तो वह आपके बैंक अकाउंट में आ जाती है। इसे इनकम फ्रॉम अदर सोर्स (Income From other sources) यानी अन्य स्रोतों से होने वाली आय के तौर पर देखा जाता है और इस पर आपको अपने इनकम टैक्स स्लैब के हिसाब से टैक्स देना होता है। अगर बॉन्ड की कीमत में बढ़ोतरी होती है तो इसे कैपिटल गेन माना जाता है। लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन पर या तो सीधे 10% या फिर 20% इंटेक्सेशन के साथ टैक्स लगता है और शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन टैक्स स्लैब के 20% के हिसाब से लगता है।

टी बिल - आप इसे डिस्काउंट पर खरीदते हैं और PAR कीमत पर बेचते हैं। इसलिए इसमें जो बढ़ोतरी मिलती है उसे शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन माना जाता है और उस पर आपके टैक्स स्लैब के हिसाब से टैक्स लगता है।

G-Sec में होने वाले गेन को लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन तब माना जाता है जब आपने 3 साल से ज्यादा समय तक उसको अपने पास रखा है, नहीं तो उसे शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन माना जाता है।

अगर मैं अपना ऑर्डर डाल दूँ तो मुझे एलॉटमेंट होने की कितनी संभावना है?

सरकारी या गवर्नमेंट सिक्कोरिटीज एक निश्चित रकम के लिए ही जारी की जाती है और इसलिए अगर ज्यादा बिड आ जाएं तो एलॉटमेंट की कोई गारंटी नहीं होती। लेकिन अगर आपको एलॉटमेंट नहीं होता है तो आप अगले हफ्ते फिर से कोशिश कर सकते हैं। RBI हर महीने में कई बार बॉन्ड जारी करता है

अच्छा अब निवेश कैसे करें?

<https://coin.zerodha.com/gsec>

21 comments

View all comments →

shah faisal says:

April 11, 2020 at 9:25 pm

Team zerodha ko bahut dhanyawad. lajawaab content. padhyi hue aisa lgta hai jaise koi live samjha raha ho. agy ke module kab upload hongy? waki lockdown ke samay ka saduopyog kiya ja sake ise padhkar. eagerly waiting..

Reply

Kulsum Khan says:

April 13, 2020 at 11:19 am

बाकी मॉड्यूल्स पर हम काम कर रहे हैं, ये भी जल्द ही उपलब्ध कराये जाएंगे।

Reply

raghvendra says:

April 12, 2020 at 8:20 pm

Sir, आपने इसके आगे के chapter हिंदी में नहीं दिये हैं।

Reply

Kulsum Khan says:

April 13, 2020 at 10:28 am

बाकी अध्याय भी जल्द ही उपलब्ध कराए जाएंगे।

Reply

super learner says:

April 21, 2020 at 11:44 pm

tqsm zerodha team beginners ke liye yeah bible h plizz paki module bhi hindi me traslate kriye

Reply

Kulsum Khan says:

April 23, 2020 at 10:09 am

आपका अभिनन्दन है।

Reply

raghvendra says:

April 23, 2020 at 12:26 am

team zirodha pls provided remaining video in hindi as soon as possible

Reply

Kulsum Khan says:

April 23, 2020 at 10:09 am

हम उन पर काम कर रहे हैं, ये भी जल्द ही उपलब्ध कराये जाएंगे।

Reply

View all comments →

Post a comment

Name (required)

Mail (will not be published) (required)

Comment

POST COMMENT